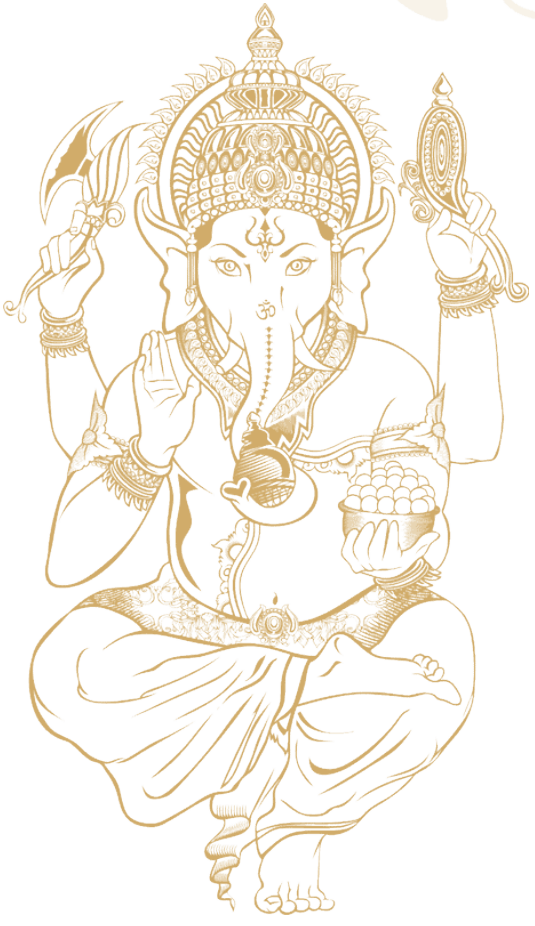

Arvind goyal

01 Oct 1972

09:05 PM

Beawar

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119617201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**01/10/1972**
दिन	रविवार
जन्म समय	**21:05:19 घंटे**
इष्ट	36:37:38 घटी
स्थान	**Beawar**
राज्य	Rajasthan
देश	India

अक्षांश	26:02:00 उत्तर
रेखांश	74:02:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:33:52 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	20:31:27 घंटे
वेलान्तर	00:10:18 घंटे
साम्पातिक काल	21:13:17 घंटे
सूर्योदय	06:26:15 घंटे
सूर्यास्त	18:20:28 घंटे
दिनमान	11:54:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	15:03:55 कन्या
लग्न के अंश	07:25:25 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**पुष्य - 2**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	शिव
करण	वणिज
गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हे-हेमन्त
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1894	आश्विन	9
पंजाबी	संवत : 2029	आश्विन	16
बंगाली	सन् : 1379	आश्विन	15
तमिल	संवत : 2029	पुरुटासी	16
केरल	कोल्लम : 1148	कन्नी	16
नेपाली	संवत : 2029	आश्विन	16
चैत्रादि	संवत : 2029	आश्विन	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2029	भाद्रपद	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति काल _____: 10:58:34
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 12:11:53 घंटे
जन्म योग _____: पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____: शिव
योग समाप्ति काल _____: 26:40:56 घंटे
जन्म योग _____: शिव
सूर्योदय कालीन करण _____: गर
करण समाप्ति काल _____: 10:58:34 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 22:13:33
भभोग _____: 60:17:02
भोग्य दशा काल _____: शनि 11 वर्ष 11 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

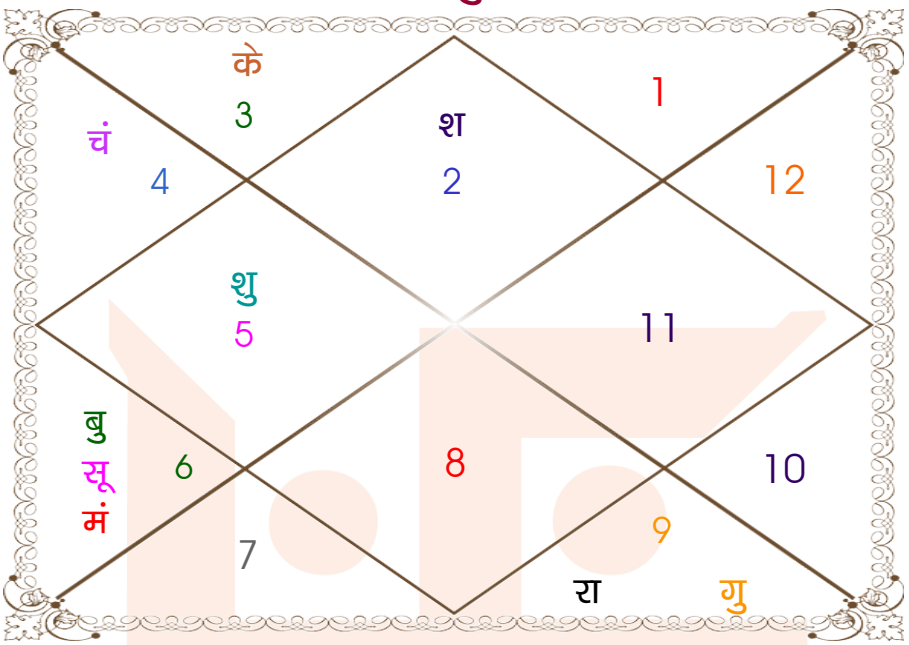

चन्द्र कुंडली

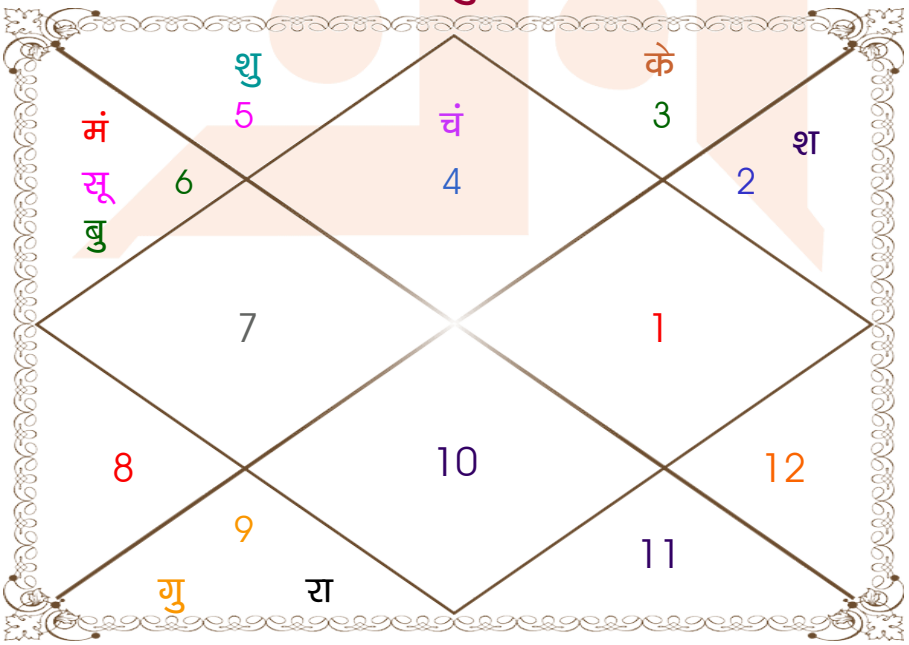

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

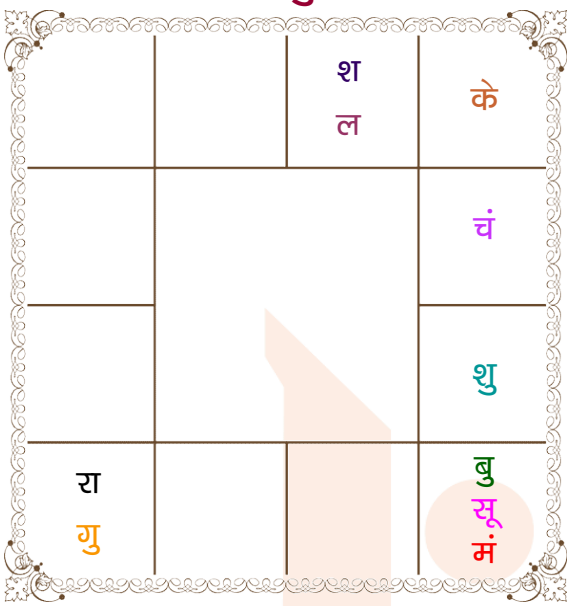

लग्न कुंडली

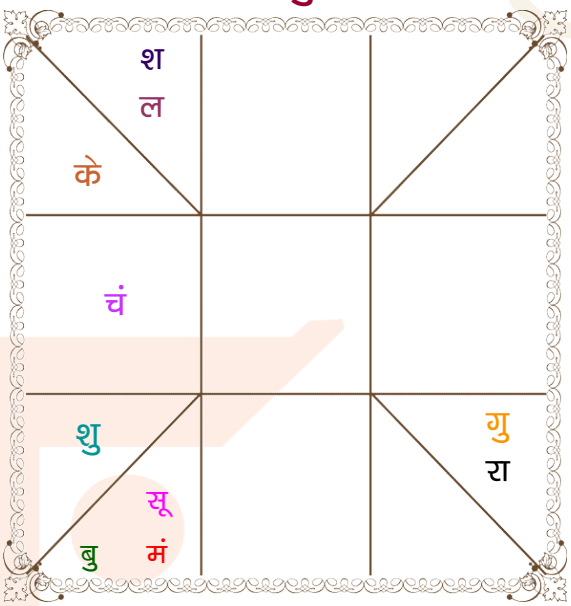

विंशोत्तरी
शनि 11वर्ष 11मा 13दि

शनि

01/10/1972

14/09/2085

शनि	14/09/1984
बुध	14/09/2001
केतु	14/09/2008
शुक्र	14/09/2028
सूर्य	15/09/2034
चन्द्र	14/09/2044
मंगल	15/09/2051
राहु	14/09/2069
गुरु	14/09/2085

योगिनी
धान्या 1वर्ष 10मा 19दि

सिद्धा

21/08/2025

21/08/2032

सिद्धा	01/01/2027
संकटा	22/07/2028
मंगला	01/10/2028
पिंगला	20/02/2029
धान्या	21/09/2029
भ्रामरी	02/07/2030
भद्रिका	22/06/2031
उल्का	21/08/2032

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	07:25:25	388:55:31	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	---
सूर्य			कन्या	15:03:55	00:59:02	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	सम राशि
चंद्र			कर्क	08:16:43	13:18:07	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	स्वराशि
मंगल		अ	कन्या	06:57:18	00:38:43	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध		अ	कन्या	24:01:52	01:39:02	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	स्वराशि
गुरु			धनु	07:06:59	00:06:33	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	स्वराशि
शुक्र			सिंह	02:17:53	01:07:59	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
शनि			वृष	27:07:00	00:00:07	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		धनु	29:34:33	00:00:44	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	29:34:33	00:00:44	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	चंद्र	नीच राशि
हर्ष			कन्या	24:34:35	00:03:45	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
नेप			वृश्चि	09:37:36	00:01:29	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
प्लूटो			कन्या	08:40:45	00:02:16	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मक	22:23:00	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:28:51

लग्न-चलित

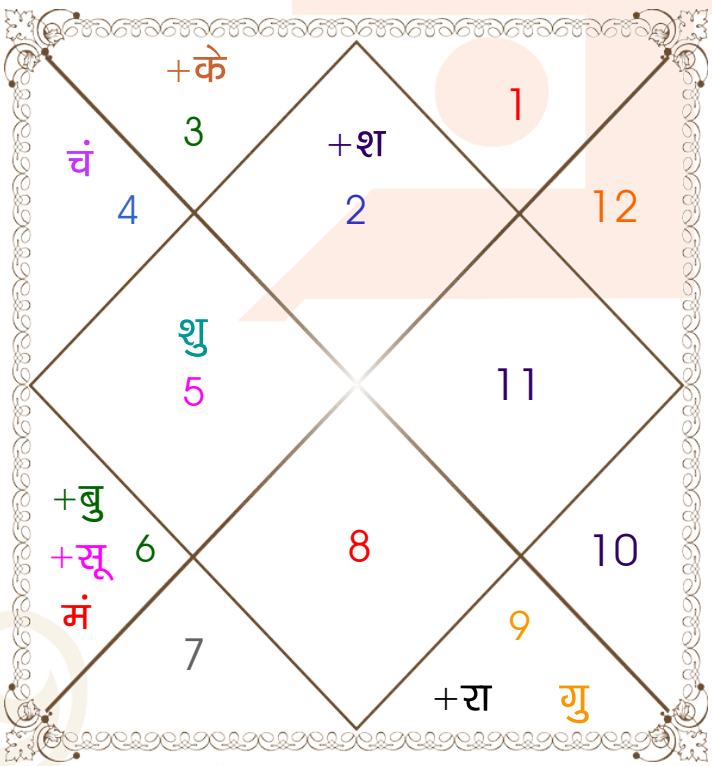

चन्द्र कुंडली

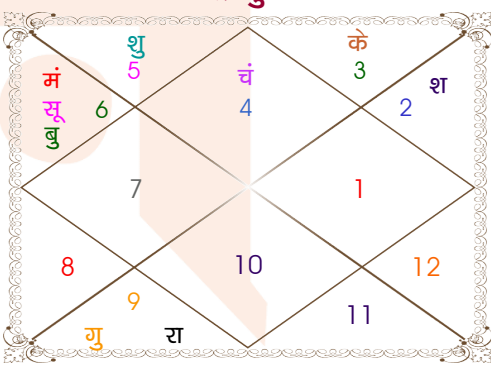

नवमांश कुंडली

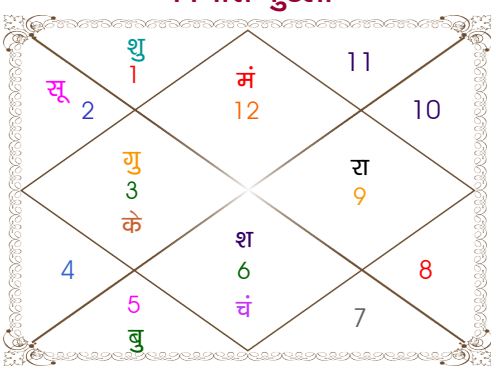

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	19:55:01	वृष	07:25:25
2	वृष	19:55:01	मिथुन	02:24:37
3	मिथुन	14:54:12	मिथुन	27:23:48
4	कर्क	09:53:24	कर्क	22:23:00
5	सिंह	09:53:24	सिंह	27:23:48
6	कन्या	14:54:12	तुला	02:24:37
7	तुला	19:55:01	वृश्चिक	07:25:25
8	वृश्चिक	19:55:01	धनु	02:24:37
9	धनु	14:54:12	धनु	27:23:48
10	मकर	09:53:24	मकर	22:23:00
11	कुम्भ	09:53:24	कुम्भ	27:23:48
12	मीन	14:54:12	मेष	02:24:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	07:25:25
2	मिथुन	03:16:25
3	मिथुन	26:56:58
4	कर्क	22:23:00
5	सिंह	22:52:32
6	कन्या	29:30:12
7	वृश्चिक	07:25:25
8	धनु	03:16:25
9	धनु	26:56:58
10	मकर	22:23:00
11	कुम्भ	22:52:32
12	मीन	29:30:12

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

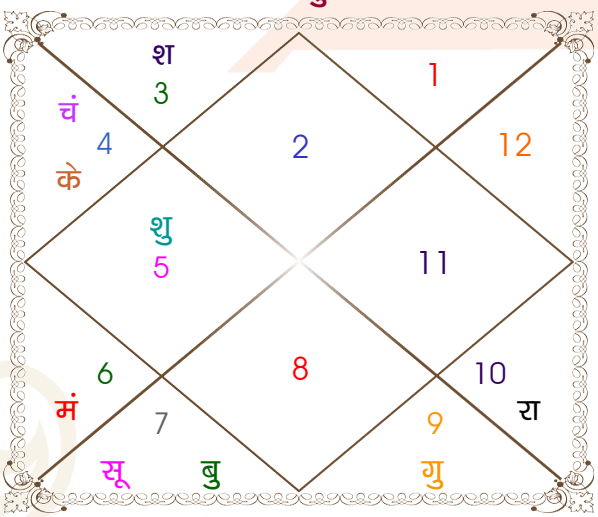

भाव कुंडली

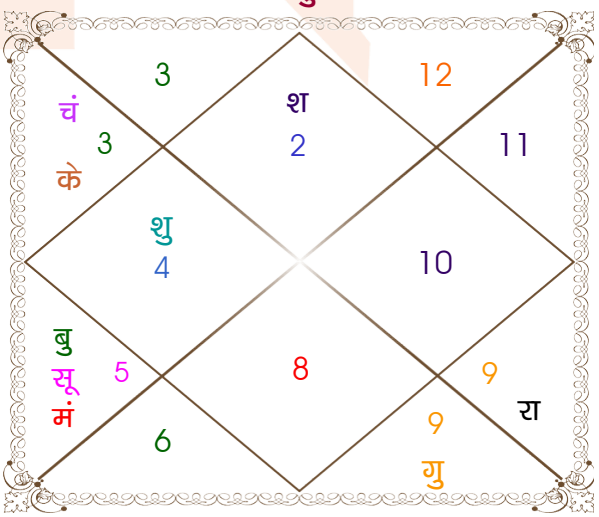

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	शक्त	नेत्रपाणि	0.69	72 %
चंद्र	मातृ	मातृ	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	8.60	52 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	वृद्ध	विकल	नृत्यलिप्सा	0.00	32 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल	विकल	उपवेशन	0.00	47 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	स्वस्थ	सभा	1.63	44 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	2.43	37 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	मुदित	शयन	1.37	27 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	भीत	नृत्यलिप्सा	0.00	82 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	भीत	शयन	0.00	82 %
कुल						14.73	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

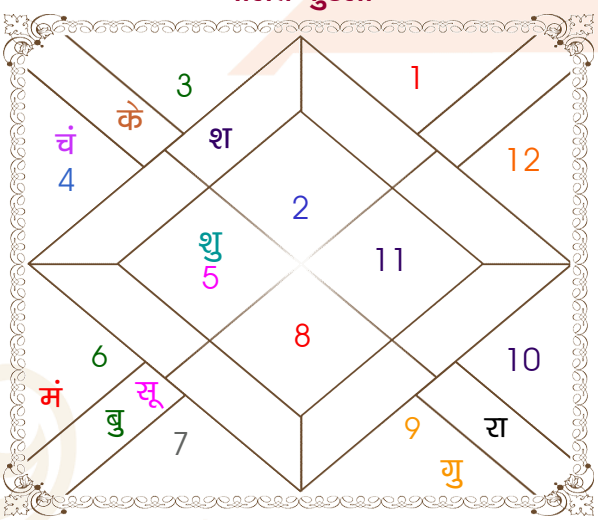

लग्न-चलित

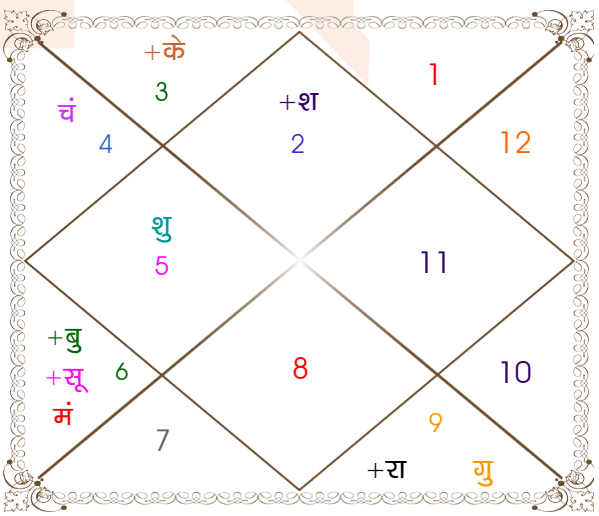

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

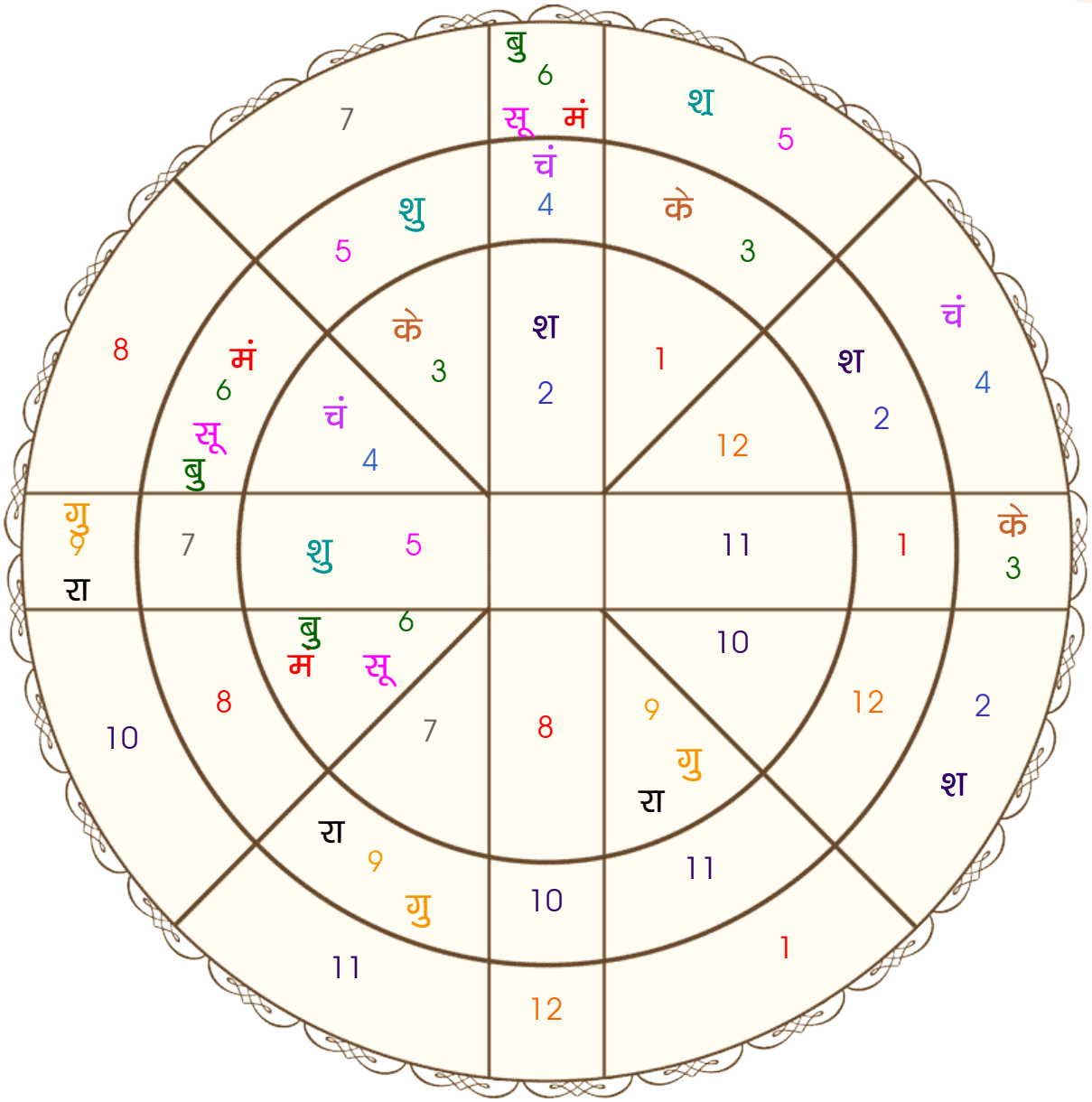

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 9 मास 18 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	15:10:18	बुध	चंद्र	गुरु	चंद्र
चंद्र		कर्क	08:23:06	चंद्र	शनि	शुक्र	शुक्र
मंगल		कन्या	07:03:41	बुध	सूर्य	केतु	शुक्र
बुध		कन्या	24:08:15	बुध	मंगल	राहु	राहु
गुरु		धनु	07:13:22	गुरु	केतु	राहु	सूर्य
शुक्र		सिंह	02:24:16	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
शनि		वृष	27:13:23	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
राहु	व	धनु	29:40:56	गुरु	सूर्य	राहु	गुरु
केतु	व	मिथु	29:40:56	बुध	गुरु	चंद्र	राहु
हर्ष		कन्या	24:40:58	बुध	मंगल	राहु	शनि
नेप		वृश्चि	09:43:59	मंगल	शनि	शुक्र	शनि
प्लूटो		कन्या	08:47:08	बुध	सूर्य	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	07:31:48	शुक्र	सूर्य	केतु	गुरु
2	मिथु	03:22:48	बुध	मंगल	शुक्र	मंगल
3	मिथु	27:03:21	बुध	गुरु	शुक्र	चंद्र
4	कर्क	22:29:23	चंद्र	बुध	चंद्र	राहु
5	सिंह	22:58:55	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र
6	कन्या	29:36:35	बुध	मंगल	शनि	राहु
7	वृश्चि	07:31:48	मंगल	शनि	केतु	सूर्य
8	धनु	03:22:48	गुरु	केतु	सूर्य	शनि
9	धनु	27:03:21	गुरु	सूर्य	सूर्य	शनि
10	मक	22:29:23	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
11	कुंभ	22:58:55	शनि	गुरु	शनि	सूर्य
12	मीन	29:36:35	गुरु	बुध	शनि	राहु

के.पी. अयनांश : 23:22:28

फॉरच्युना : मीन 00:44:36

लग्न कुंडली

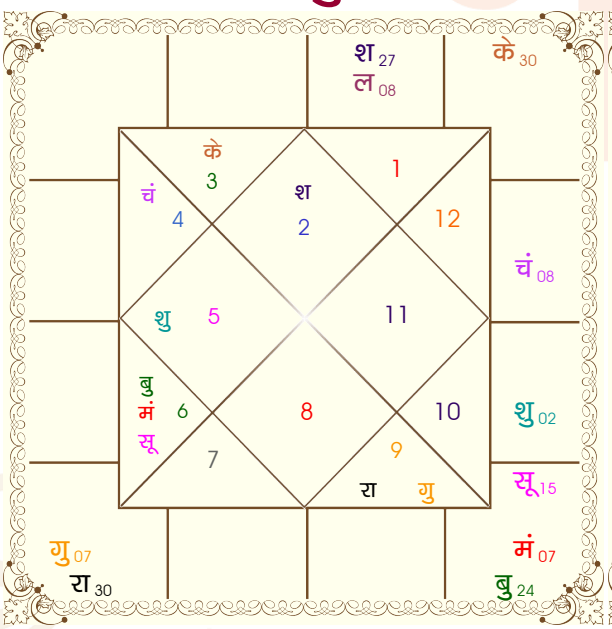

भाव कुंडली

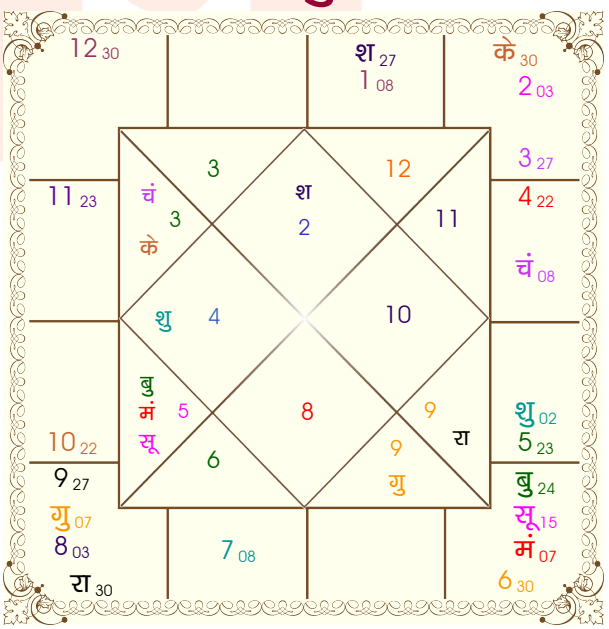

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, शुक्र- शनि,
2	बुध-
3	सूर्य, चंद्र, बुध- गुरु, शुक्र, केतु,
4	सूर्य- चंद्र- शुक्र,
5	सूर्य, मंगल+ बुध+ शनि, राहु+
6	बुध-
7	मंगल- बुध- शनि-
8	गुरु, केतु+
9	गुरु- राहु, केतु-
10	चंद्र- शनि-
11	चंद्र- शनि-
12	गुरु- केतु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 4- 5,
चंद्र	1, 3, 4- 10- 11-
मंगल	5+ 7-
बुध	2- 3- 5+ 6- 7-
गुरु	3, 8, 9- 12-
शुक्र	1- 3, 4,
शनि	1, 5, 7- 10- 11-
राहु	5+ 9,
केतु	3, 8+ 9- 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	चं	श	--	शु
2	--	--	--	बु
3	सू गु शु	चं के	--	बु
4	--	शु	सू	चं
5	मं बु श रा	सू मं बु	मं रा	सू
6	--	--	--	बु
7	--	--	बु श	मं
8	के	गु	के	गु
9	--	रा	के	गु
10	--	--	चं	श
11	--	--	चं	श
12	--	--	के	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1,9	कन्या	5
चंद्र	4	10	कर्क	3
मंगल	7	2,6	कन्या	5
बुध	2,3,6	4,12	कन्या	5
गुरु	8,9,12	3,11	धनु	8
शुक्र	1	5	सिंह	4
शनि	10,11	7	वृष	1
राहु	---	---	धनु	9
केतु	---	8	मिथुन	3

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	10	3	8,9,12	3,11	8
चंद्र	10,11	7	1	1	5	4
मंगल	5	1,9	5	---	8	3
बुध	7	2,6	5	---	---	9
गुरु	---	8	3	---	---	9
शुक्र	---	8	3	1	5	4
शनि	7	2,6	5	8,9,12	3,11	8
राहु	5	1,9	5	---	---	9
केतु	8,9,12	3,11	8	4	10	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	165.07	98.28	156.95	174.03	247.12	122.30	57.12	269.58	89.58	174.58	219.63	158.68
सूर्य	--	--	युति	युति	--	--	--	--	--	युति	तृती	युति
165.07	0.00	0.00	6.60	5.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.44	0.44	7.85
चंद्र	--	--	तृती	--	--	--	--	सप्त	युति	--	पंच	तृती
98.28	0.00	0.00	2.82	0.00	0.00	0.00	0.00	6.13	6.13	0.00	2.82	2.98
मंगल	युति	--	--	--	4था	--	--	--	--	--	तृती	युति
156.95	6.60	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.30	9.84
बुध	युति	--	--	--	--	--	--	चतु	--	युति	अष्ट	--
174.03	5.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.36	0.00	9.98	0.59	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	9वां	सप्त	--	--	--	--	--
247.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.75	5.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--
122.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	--	पंच	सप्त	3रा	--	--	--	पंच	--	--
57.12	0.00	0.00	0.00	2.07	5.00	8.56	0.00	0.00	0.00	2.36	0.00	0.00
राहु	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
269.58	0.00	6.13	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	युति	--	चतु	--	--	--	सप्त	--	चतु	--	--
89.58	0.00	6.13	0.00	0.36	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.78	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	--	युति	पंचा	--	--	चतु	--	--	अष्ट	--
174.58	5.44	0.00	0.00	9.98	0.66	0.00	0.00	0.78	0.00	0.00	1.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
219.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	युति	--	चतु	--	--	--	--	--	तृती	--
158.68	7.85	0.00	9.84	0.00	2.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.91	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.42	62.41	87.40	112.38	147.40	182.41	217.42	242.41	267.40	292.38	327.40	2.41
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
165.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	युति	युति	--	चतु	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--
98.28	0.00	0.00	4.18	0.94	0.00	0.10	2.93	0.00	4.18	0.94	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था	--	अष्टां	सप्त	8वां
156.95	0.00	0.00	0.00	0.00	5.40	0.00	2.98	8.89	0.00	0.78	5.40	8.89
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त
174.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.39	0.00	0.00	1.91	2.73	0.00	6.39
गुरु	षष्ठ	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	5वां
247.12	0.89	8.81	0.00	0.28	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	0.91	0.00	8.81
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
122.30	0.00	0.00	0.00	5.08	0.00	0.00	0.68	3.00	0.00	5.08	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	10वा	--
57.12	0.00	8.50	0.00	8.80	2.99	0.55	0.00	8.50	0.00	0.00	10.00	0.00
राहु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
269.58	0.00	0.00	9.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.74	0.00	2.52	2.21
केतु	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--
89.58	0.00	0.00	9.74	0.00	2.52	2.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
174.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.82	0.00	0.00	2.22	0.00	0.00	6.82
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--
219.63	9.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.74	0.00	0.00	0.37	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--
158.68	0.00	0.00	0.00	0.00	3.80	0.00	2.84	0.00	0.00	0.00	3.80	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.42	63.27	86.95	112.38	142.88	179.50	217.42	243.27	266.95	292.38	322.88	359.50
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
165.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.59
चंद्र	--	--	युति	युति	अष्ट	--	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--
98.28	0.00	0.00	3.75	0.94	0.81	0.00	2.93	0.00	3.75	0.94	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था	--	अष्टां	सप्त	8वां
156.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	2.98	9.27	0.00	0.78	0.96	7.11
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त
174.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.40	0.00	0.00	2.17	2.73	0.00	8.40
गुरु	षष्ठ	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	5वां
247.12	0.89	9.20	0.00	0.28	0.00	0.00	0.00	9.20	0.00	0.91	0.00	6.99
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
122.30	0.00	0.00	0.00	5.08	0.00	0.00	0.68	2.90	0.00	5.08	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	10वा	--
57.12	0.00	7.99	0.00	8.80	1.33	2.43	0.00	7.99	0.00	0.00	9.03	0.00
राहु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु
269.58	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	3.00
केतु	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	--	--	--	--
89.58	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
174.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.70	0.00	0.00	2.44	0.00	0.00	8.70
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--
219.63	9.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.74	0.00	0.00	0.37	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	--	--	--
158.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.84	0.46	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

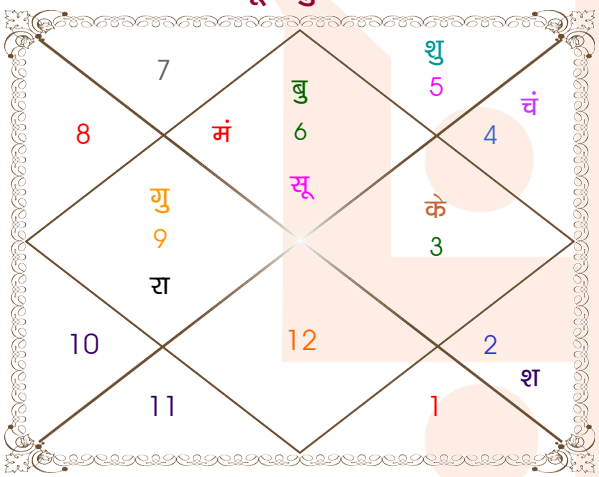

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

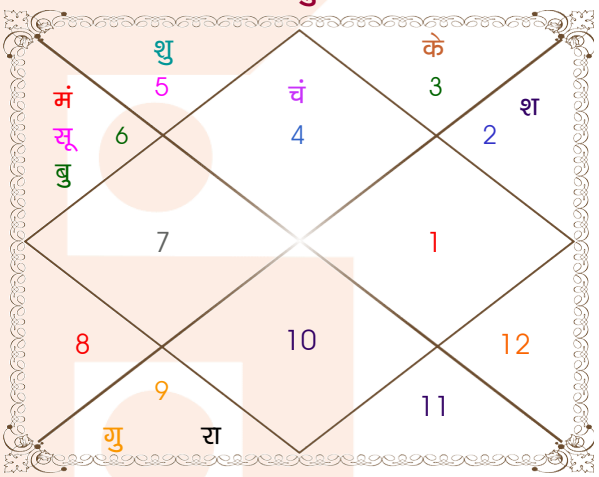

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

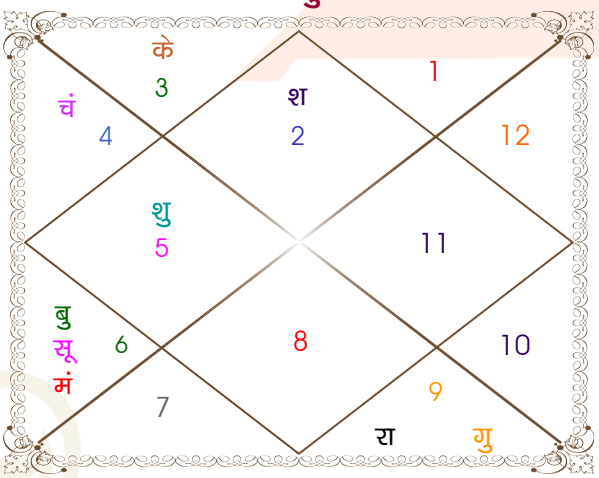

देह विचारः

होरा कुंडली

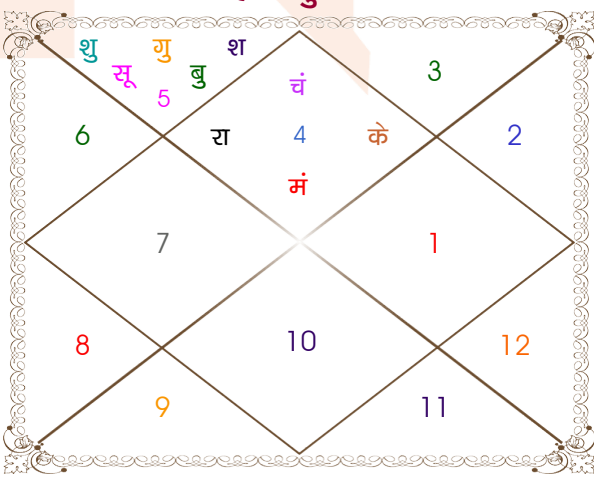

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

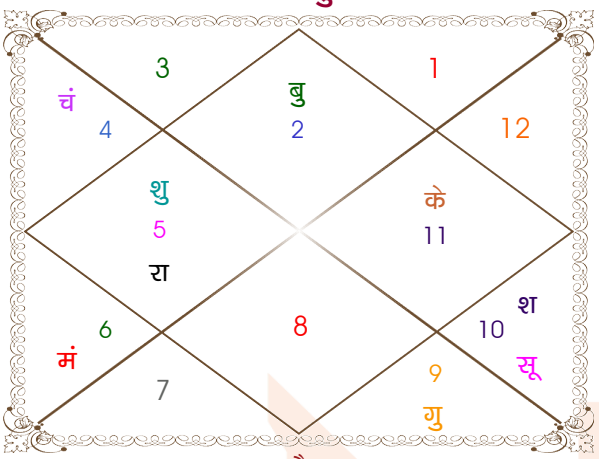

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

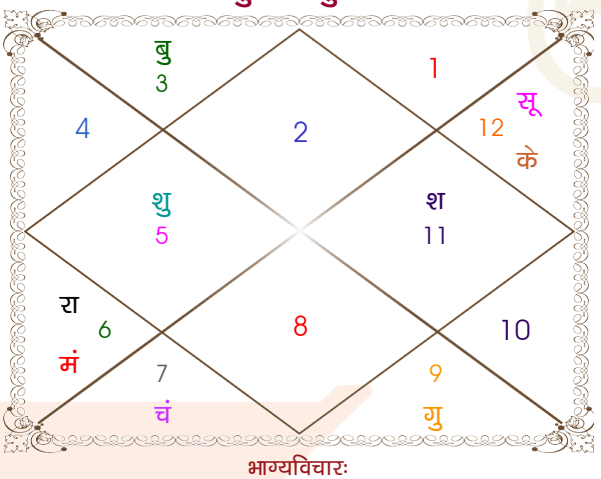

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

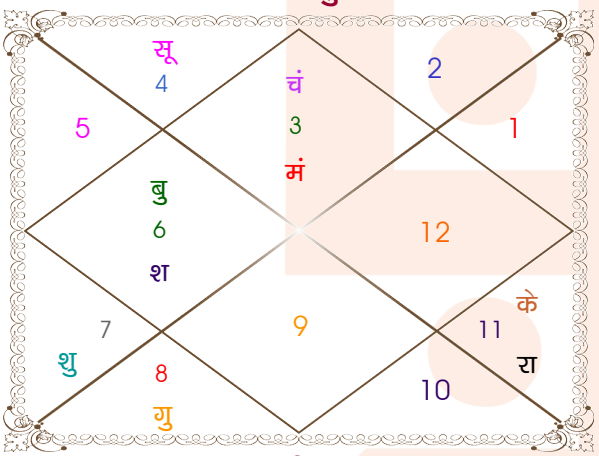

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

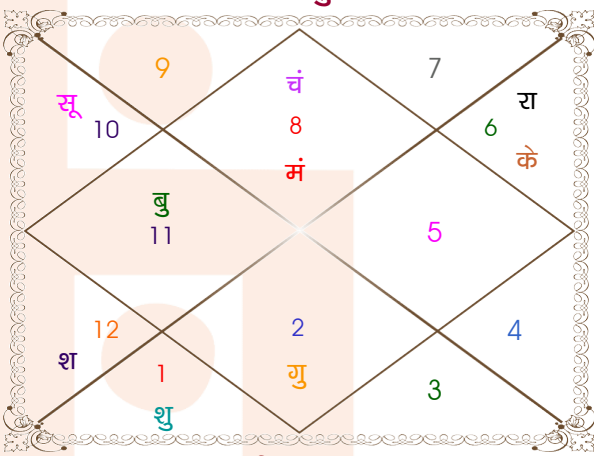

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

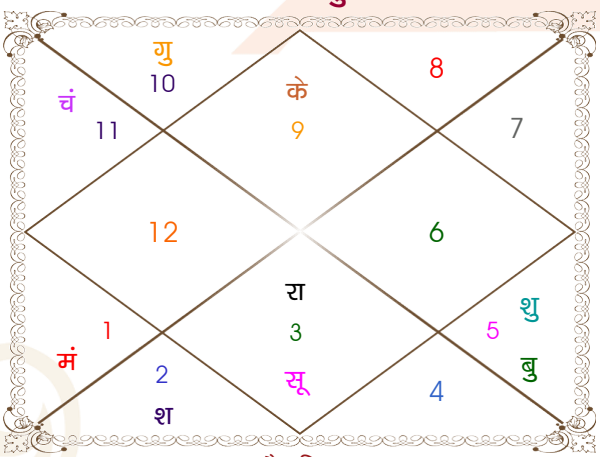

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

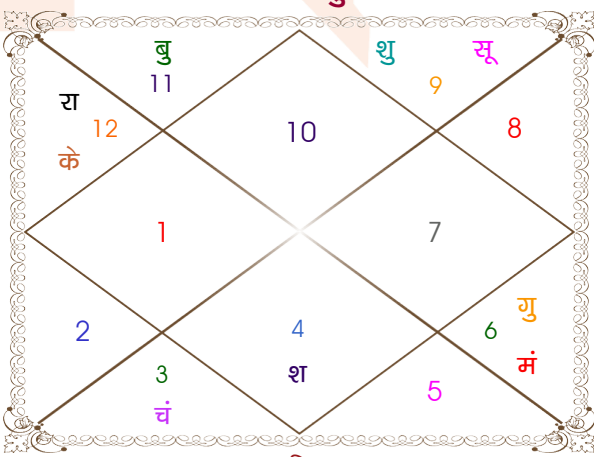

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

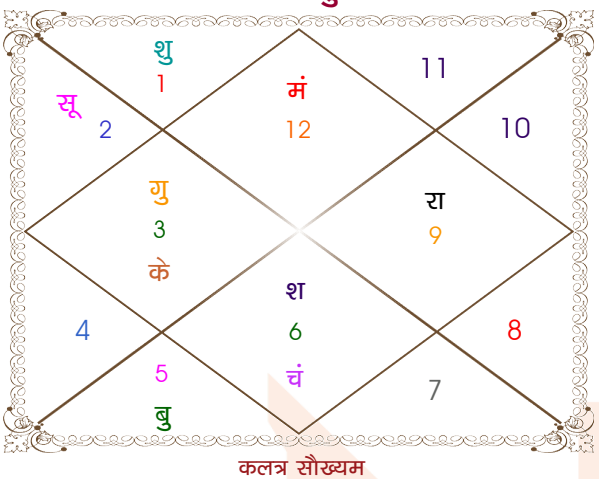

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

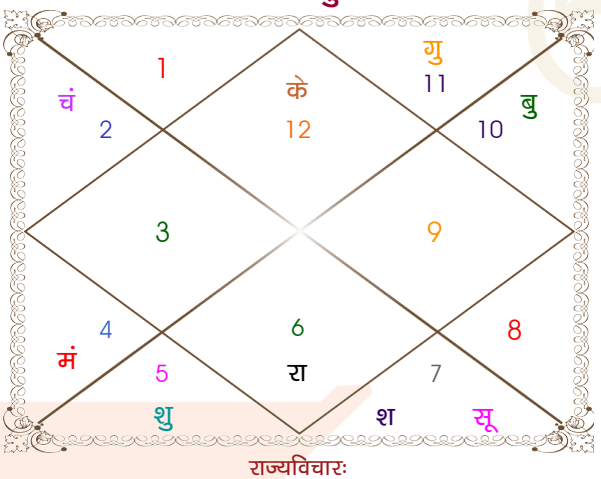

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

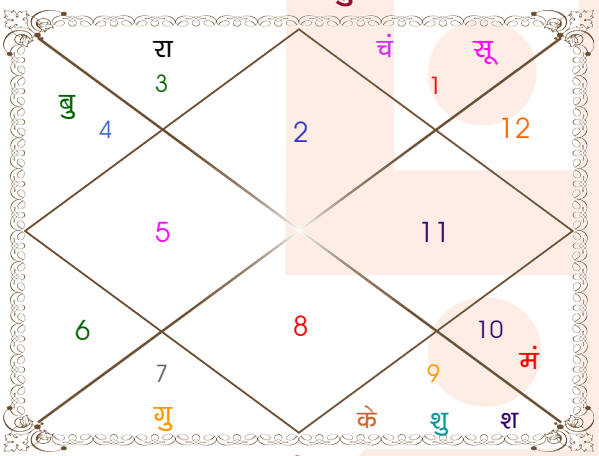

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

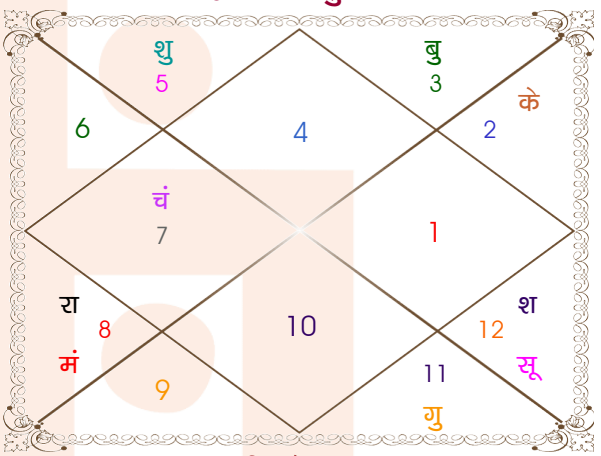

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

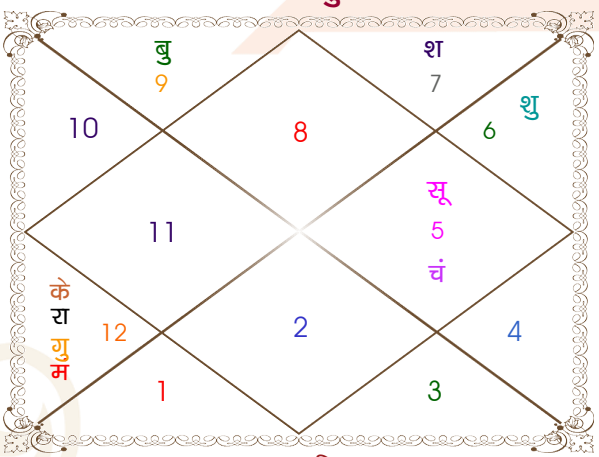

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

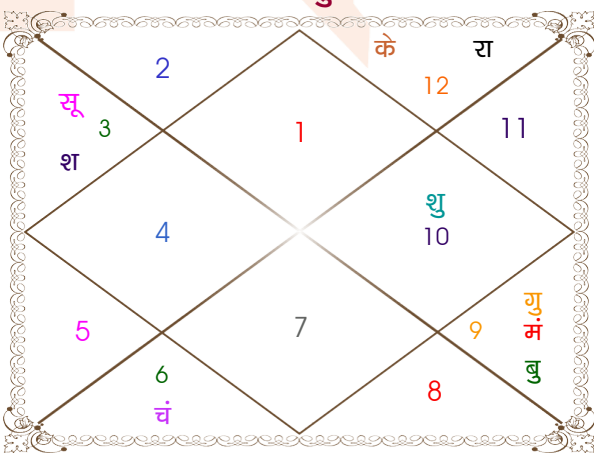

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

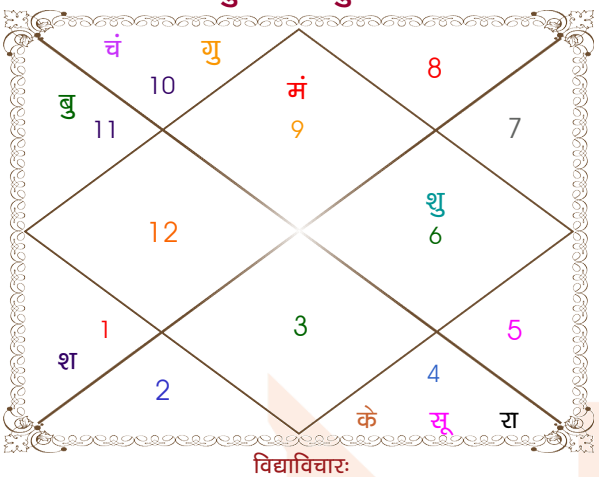

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

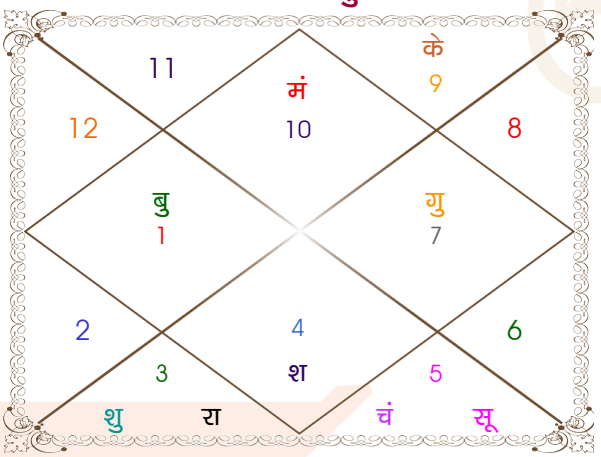

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

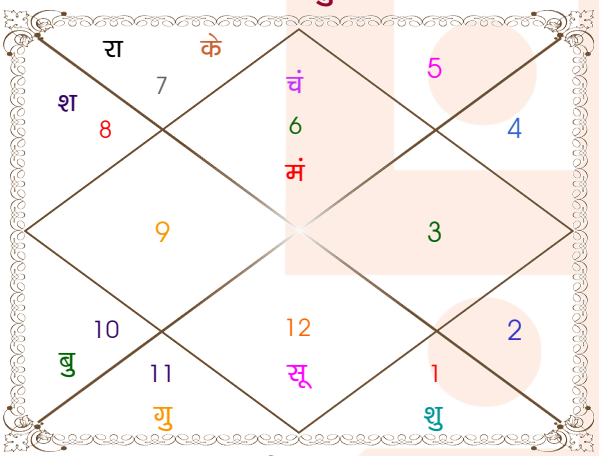

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

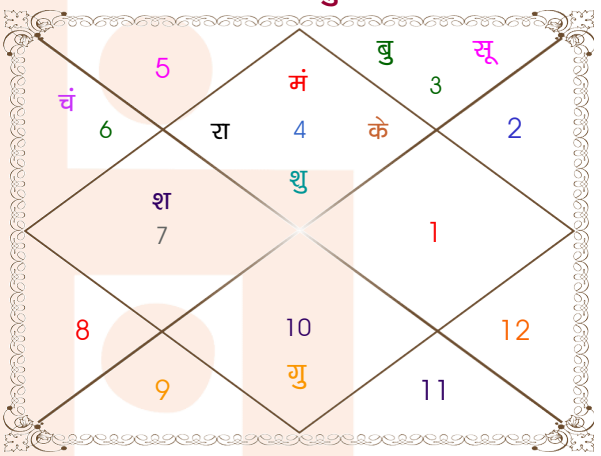

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

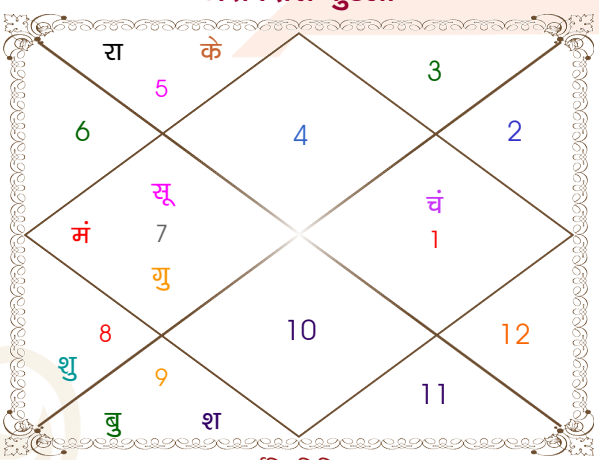

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

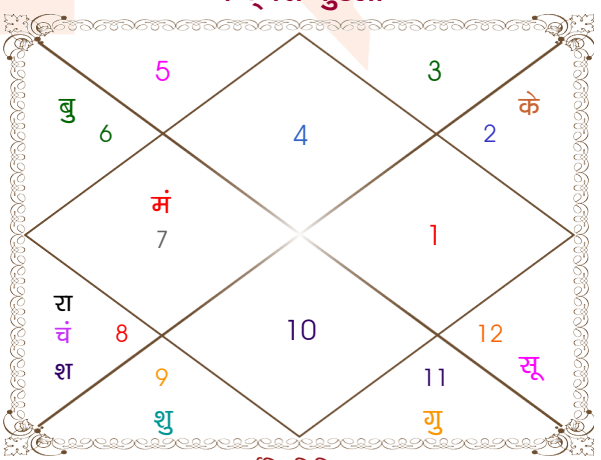

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कन्या	कर्क	कन्या	कन्या	धनु	सिंह	वृष	धनु	मिथु
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	मक	कर्क	कन्या	वृष	धनु	सिंह	मक	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	वृष	मीन	तुला	कन्या	मिथु	धनु	सिंह	कुंभ	कन्या	मीन
सप्तमांश	धनु	मिथु	कुंभ	मेष	सिंह	मक	सिंह	वृष	मिथु	धनु
नवमांश	मीन	वृष	कन्या	मीन	सिंह	मिथु	मेष	कन्या	धनु	मिथु
दशमांश	मीन	तुला	वृष	कर्क	मक	कुंभ	सिंह	तुला	कन्या	मीन
द्वादशांश	कर्क	मीन	तुला	वृश्चि	मिथु	कुंभ	सिंह	मीन	वृश्चि	वृष
षोडशांश	वृश्चि	सिंह	सिंह	मीन	धनु	मीन	कन्या	तुला	मीन	मीन
विंशांश	मेष	मिथु	कन्या	धनु	धनु	धनु	मक	मिथु	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	धनु	कर्क	मक	धनु	कुंभ	मक	कन्या	मेष	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	मक	सिंह	सिंह	मक	मेष	तुला	मिथु	कर्क	मिथु	धनु
त्रिंशांश	कन्या	मीन	कन्या	कन्या	मक	कुंभ	मेष	वृश्चि	तुला	तुला
खवेदांश	कर्क	मिथु	कन्या	कर्क	मिथु	मक	कर्क	तुला	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	कर्क	तुला	मेष	तुला	धनु	तुला	वृश्चि	धनु	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	कर्क	मीन	वृश्चि	तुला	कन्या	कुंभ	धनु	वृश्चि	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शुक्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
शनि	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	0 ---	1 ---	3 उत्तम	6 केरल

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.30	18.90	11.05	15.45	15.35	11.50	13.35	7.85	13.95
सप्तवर्ग	10.33	18.33	12.60	14.55	13.98	11.38	13.45	8.70	13.20
दशवर्ग	13.65	17.18	13.65	15.28	11.95	10.60	11.53	9.48	13.65
षोडशवर्ग	13.35	17.50	13.25	15.28	12.78	11.93	11.78	8.65	13.15

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	8	38	13	57	9	18	12
सप्तवर्गज बल	92	165	111	124	116	68	90
ओजयुग्मक बल	0	30	0	15	30	0	0
केन्द्र बल	30	15	30	30	30	60	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	15	0	0
कुल स्थान बल	130	248	169	226	201	146	162
कुल दिग्बल	18	55	15	14	10	57	7
नतोन्नत बल	17	43	43	60	17	17	43
पक्ष बल	38	75	38	38	22	22	38
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	51	4	30	39	0	47	0
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	210	213	111	152	99	86	82
कुल चेष्टाबल	0	0	4	7	30	30	38
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-10	7	-2	-11	-39	-8	-7
कुल षट्बल	408	575	314	414	334	353	289
रूप षट्बल	6.8	9.6	5.2	6.9	5.6	5.9	4.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.6	1.0	1.0	0.9	1.1	1.0
संबंधित पद	2	1	4	5	7	3	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	15.02	29.18	7.09	20.35	16.58	23.37	21.63
कष्ट फल	41.21	28.66	51.37	12.60	39.28	35.43	32.51

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	353	414	414	575	408	353	314	334	334	289	289	314
भावदिग्बल	30	50	40	60	10	10	60	10	50	0	40	40
भावदृष्टि बल	26	67	60	35	36	-10	-2	-3	2	18	14	67
कुल भाव बल	409	530	513	670	454	353	372	341	386	307	343	420
रूप भाव बल	6.8	8.8	8.6	11.2	7.6	5.9	6.2	5.7	6.4	5.1	5.7	7.0
संबंधित पद	6	2	3	1	4	9	8	11	7	12	10	5

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

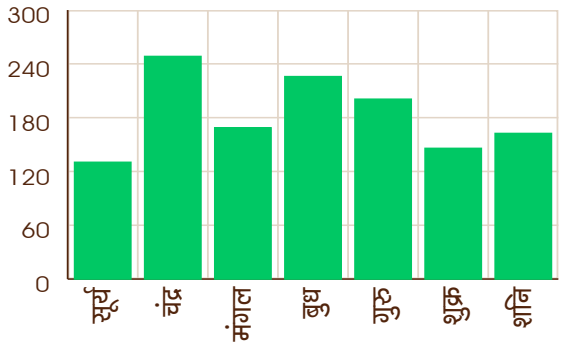

दिग्बल

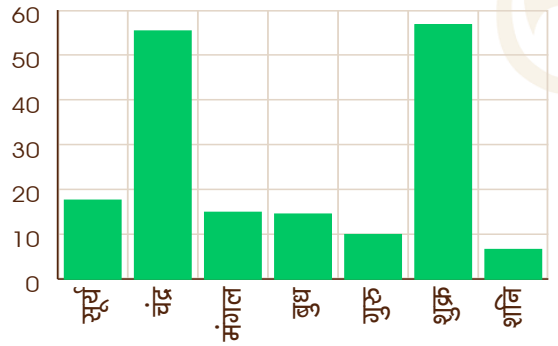

कालबल

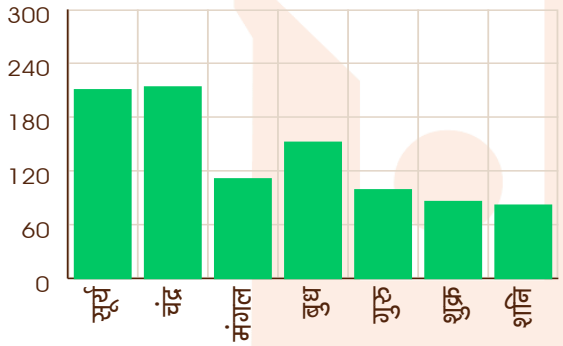

चेष्टाबल

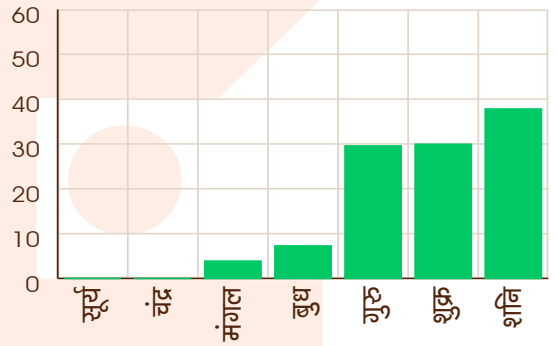

नैसर्गिक बल

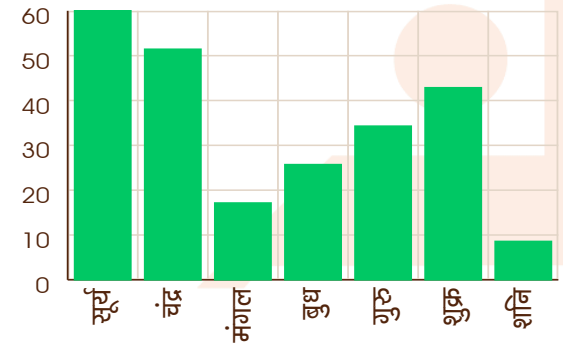

दृग्बल

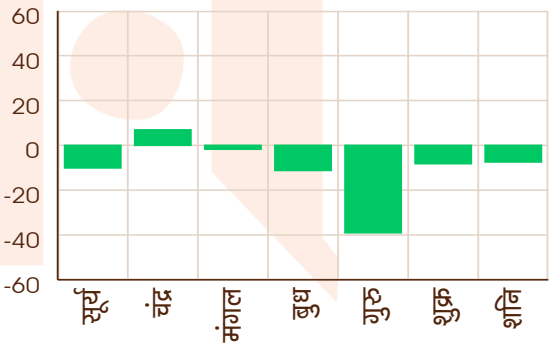

रूप षट्बल

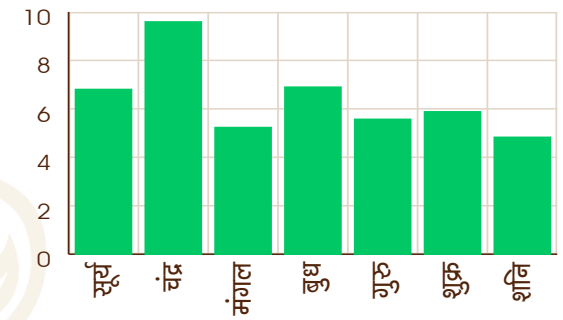

न्यूनतम षट्बल

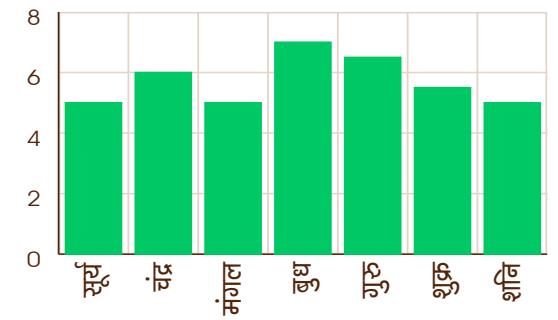

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

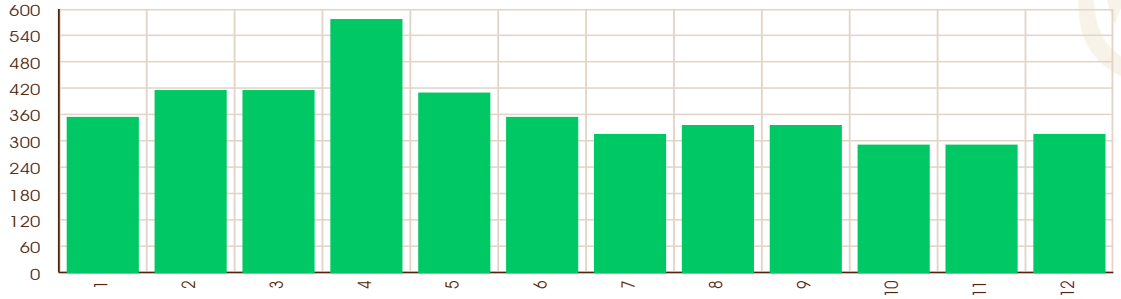

भावदिग्बल

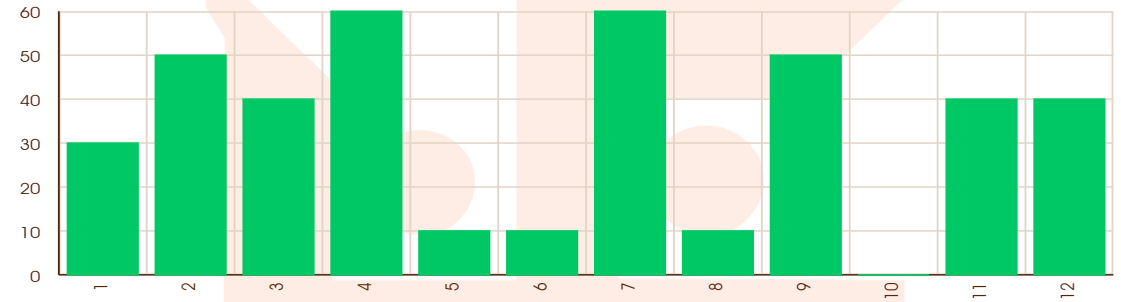

भावदृष्टि बल

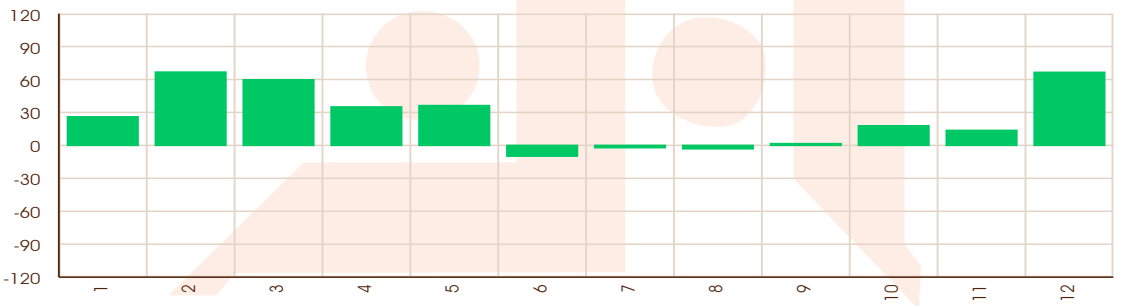

भाव बल

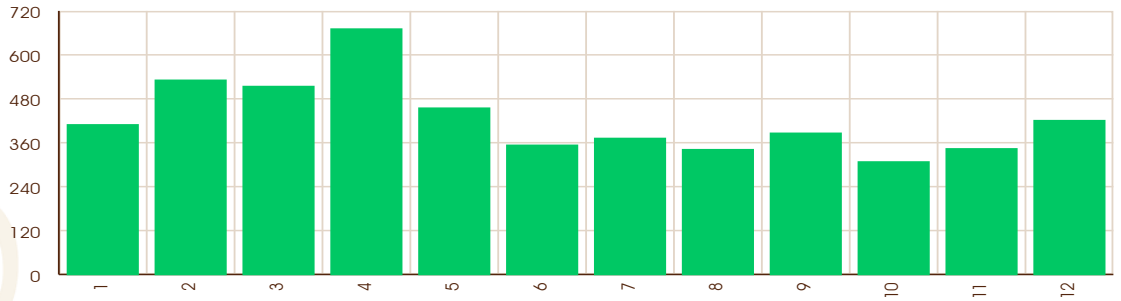

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

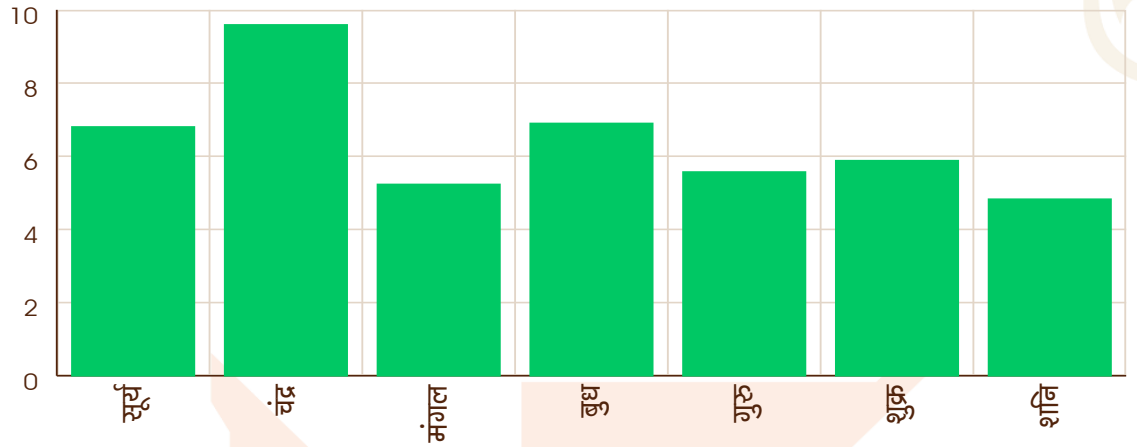

इष्ट - कष्ट फल

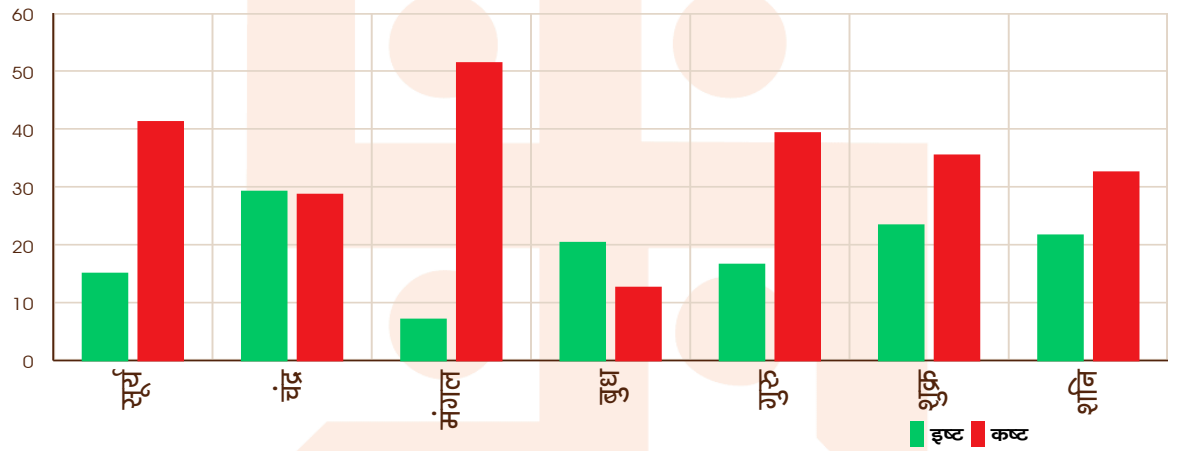

रूप भाव बल

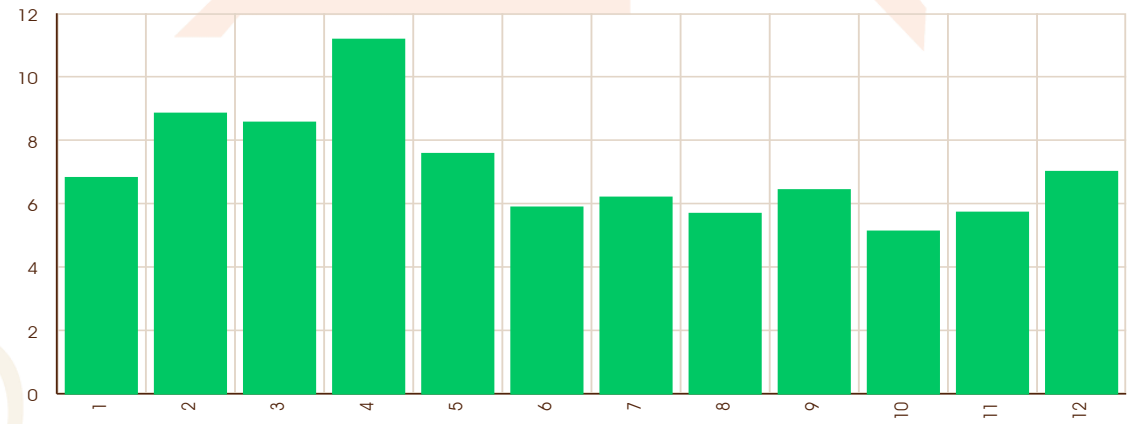

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	07:25:25	--	--	कृतिका	4	3
गुलिक	गु	मिथु	04:24:27	--	--	मृगशिरा	4	5
काल	का	मिथु	24:30:38	--	--	पुनर्वसु	2	7
मृत्यु	मृ	सिंह	04:09:00	--	--	मघा	2	10
यमघंटक	यम	मेष	15:59:55	--	--	भरणी	1	2
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	24:21:01	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
धूम	धू	मक	28:23:55	--	मूल	धनिष्ठा	2	23
व्यतिपात	व्य	मिथु	01:36:05	--	मूल	मृगशिरा	3	5
परिवेश	परि	धनु	01:36:05	नीच	मूल	मूल	1	19
इन्द्रचाप	इ	कर्क	28:23:55	--	मूल	आश्लेषा	4	9
उपकेतु	उप	सिंह	15:03:55	नीच	--	पू०फाल्गुनी	1	11

प्राणपद	:	मेष	00:20:22	कारकाँश लग्न	:	धनु	26:11:01
भाव लग्न	:	धनु	17:11:14	होरा लग्न	:	कर्क	26:57:04
घटी लग्न	:	तुला	03:53:02	वर्णद लग्न	:	तुला	25:37:32

उपग्रह कुंडली

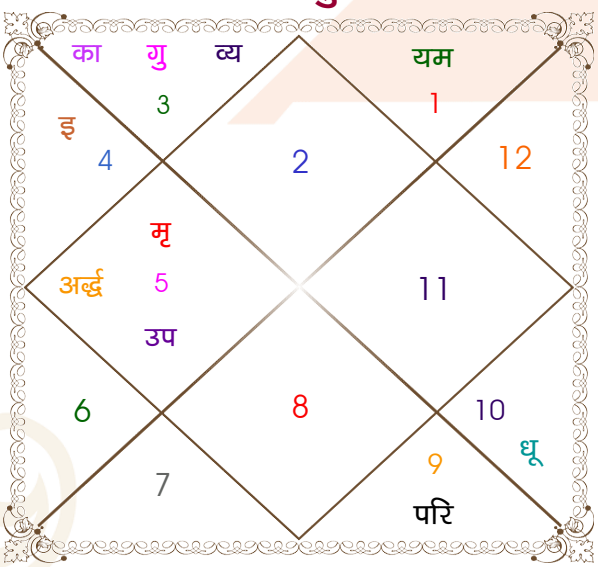

आरूढ़ कुंडली

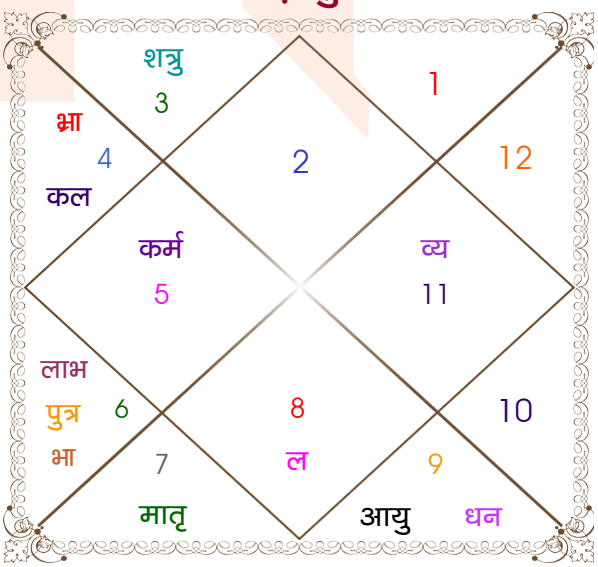

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

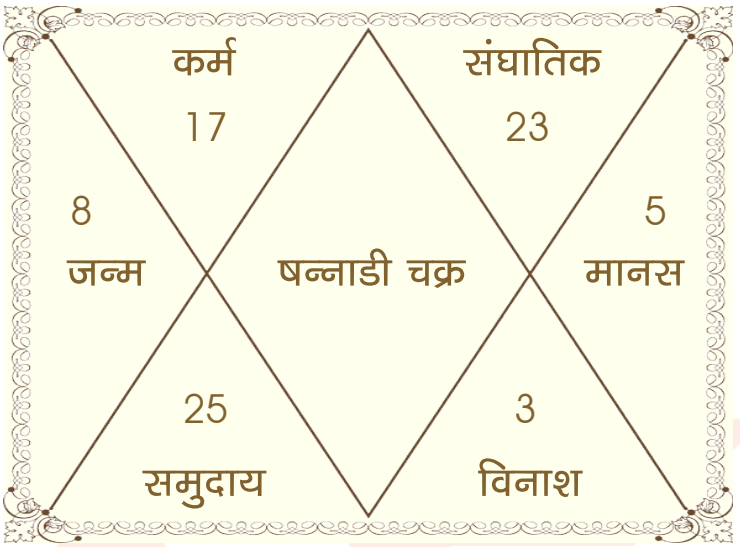

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	3	4	2	4	3	4	4	5	6	4	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	7	0	4	5	4	4	4	4	6	4	2	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
कुल	3	3	4	3	4	4	4	1	4	3	5	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	3	5	4	5	3	5	4	3	7	5	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	5	5	3	5	4	5	6	5	2	7	6	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	7	5	3	4	4	3	4	4	3	5	3	7	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	4	4	6	3	3	4	2	2	2	3	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	5	5	4	5	5	3	5	1	5	4	4	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	4	4	6	3	3	4	2	2	2	3	3	39
गुरु	4	5	6	5	2	7	6	3	5	5	3	5	56
मंगल	1	4	3	5	1	3	3	4	3	4	4	4	39
सूर्य	5	6	4	5	4	3	4	2	4	3	4	4	48
शुक्र	3	5	3	7	7	5	3	4	4	3	4	4	52
बुध	3	7	5	4	6	3	5	4	5	3	5	4	54
चंद्र	4	2	5	7	0	4	5	4	4	4	4	6	49
बिन्दु	23	33	30	39	23	28	30	23	27	24	27	30	337
रेखा	33	23	26	17	33	28	26	33	29	32	29	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	1	4	1	1	1	0	0	0	0	1	12
गुरु	2	0	3	2	0	2	3	0	3	0	0	2	17
मंगल	0	1	0	1	0	0	0	0	2	1	1	0	6
सूर्य	1	3	0	3	0	0	0	0	0	0	0	2	9
शुक्र	0	2	0	3	4	2	0	0	1	0	1	0	13
बुध	0	4	0	0	3	0	0	0	2	0	0	0	9
चंद्र	4	0	1	3	0	2	1	0	4	2	0	2	19
रेखा	8	12	5	16	8	7	5	0	12	3	2	7	85

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	0	4	1	1	0	0	0	0	0	1	10
गुरु	2	0	1	2	0	2	3	0	3	0	0	0	13
मंगल	0	1	0	1	0	0	0	0	2	0	0	0	4
सूर्य	1	3	0	3	0	0	0	0	0	0	0	2	9
शुक्र	0	2	0	3	4	2	0	0	1	0	1	0	13
बुध	0	4	0	0	3	0	0	0	2	0	0	0	9
चंद्र	4	0	0	3	0	2	1	0	4	2	0	0	16
रेखा	8	12	1	16	8	7	4	0	12	2	1	3	74

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	73	103	32	88	88	102	70
ग्रह पिंड	30	91	30	61	76	99	55
शोध्य पिंड	103	194	62	149	164	201	125

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

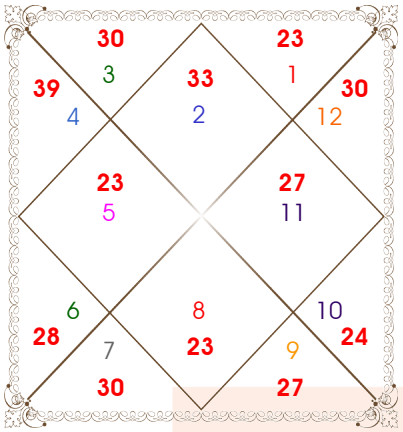

सूर्य का अष्टकवर्ग

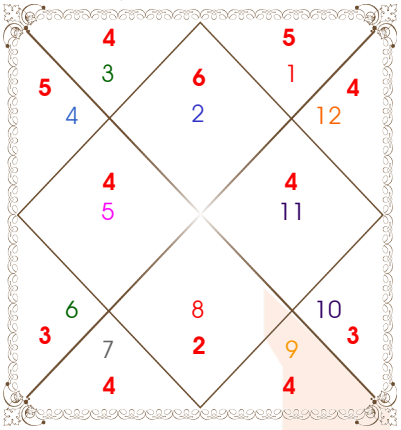

चंद्र का अष्टकवर्ग

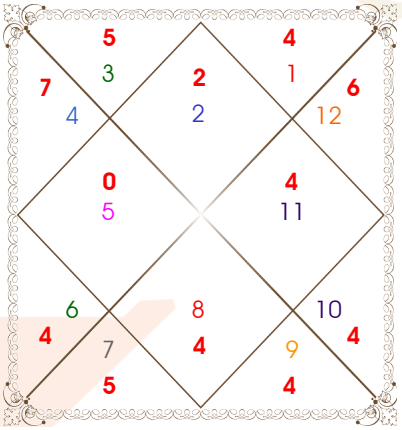

मंगल का अष्टकवर्ग

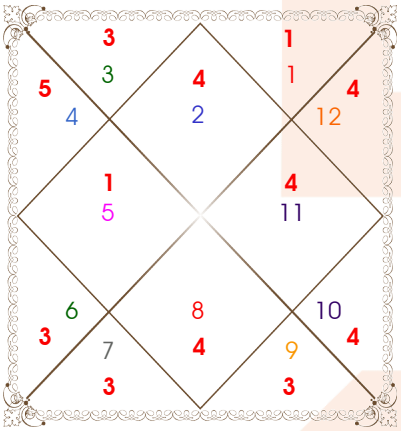

बुध का अष्टकवर्ग

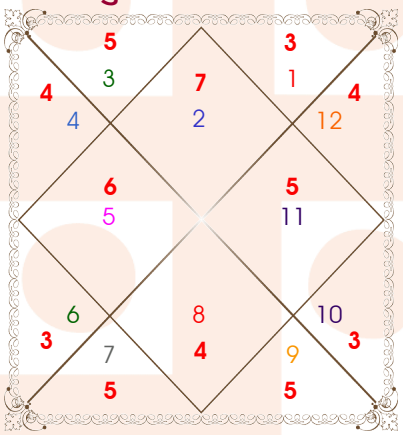

गुरू का अष्टकवर्ग

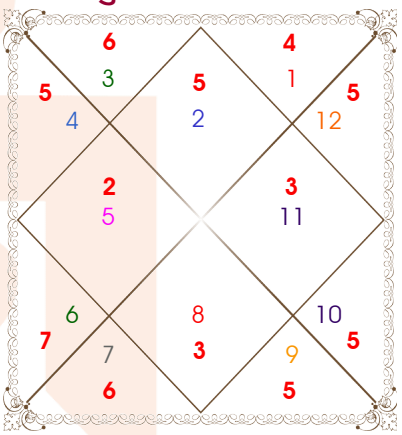

शुक्र का अष्टकवर्ग

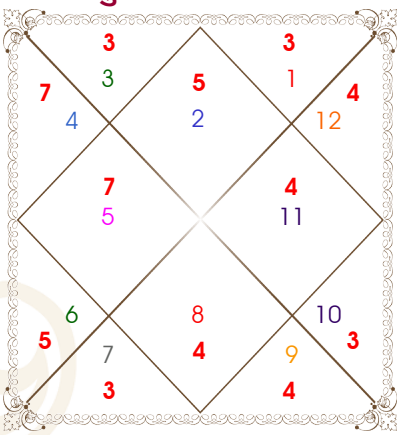

शनि का अष्टकवर्ग

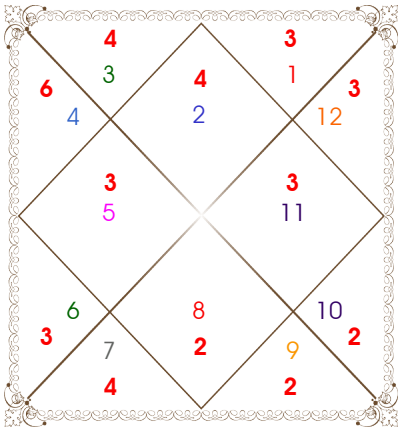

लग्न का अष्टकवर्ग

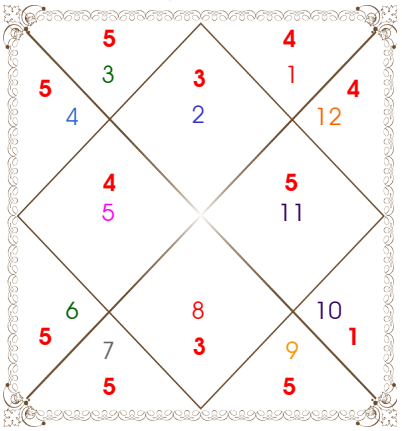

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

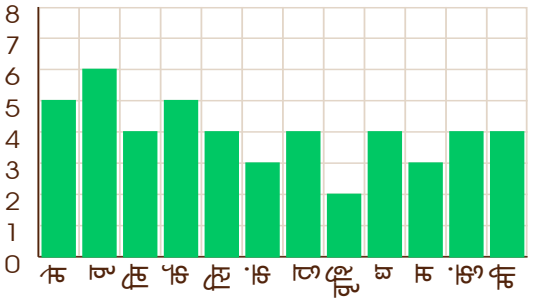

चन्द्र

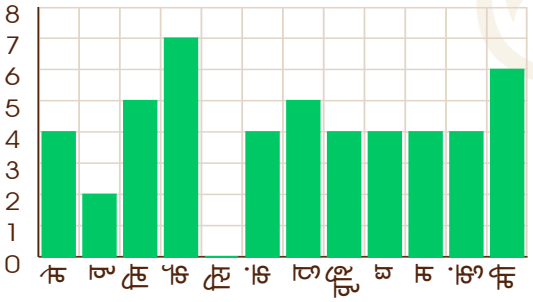

मंगल

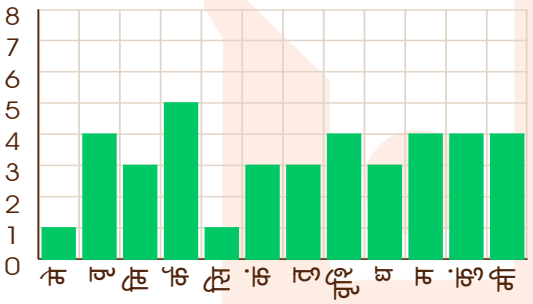

बुध

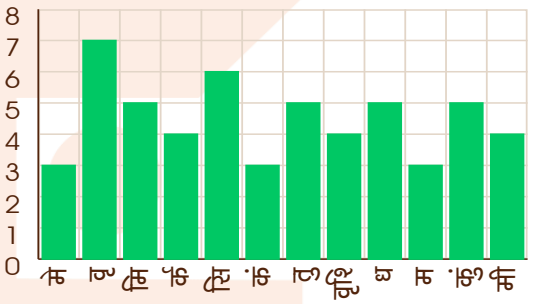

गुरु

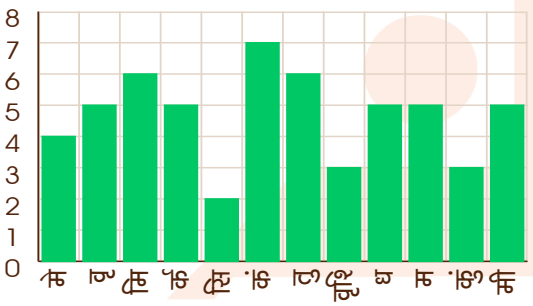

शुक्र

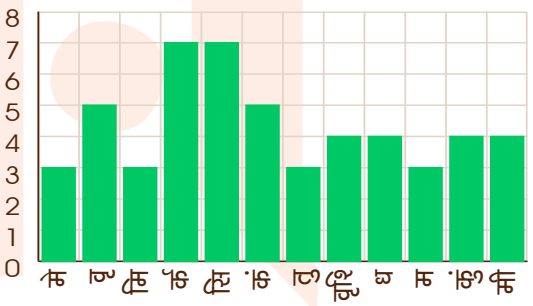

शनि

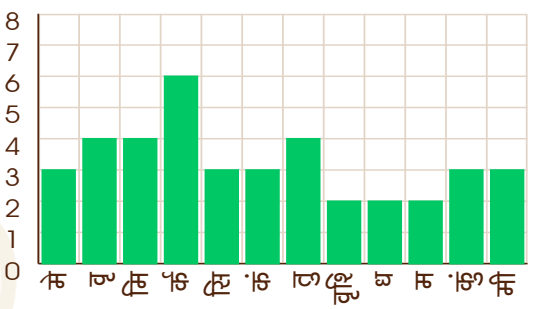

लग्न

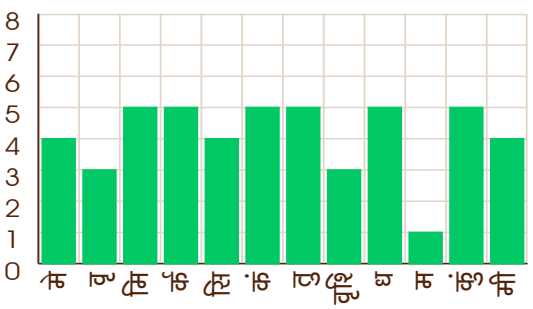

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

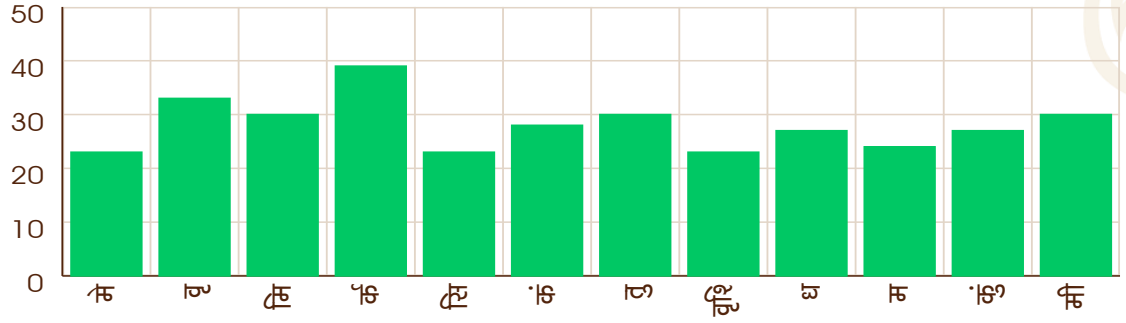

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

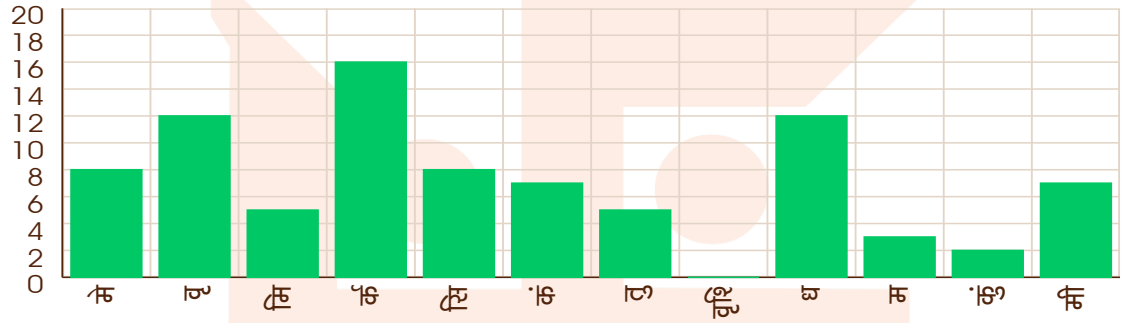

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

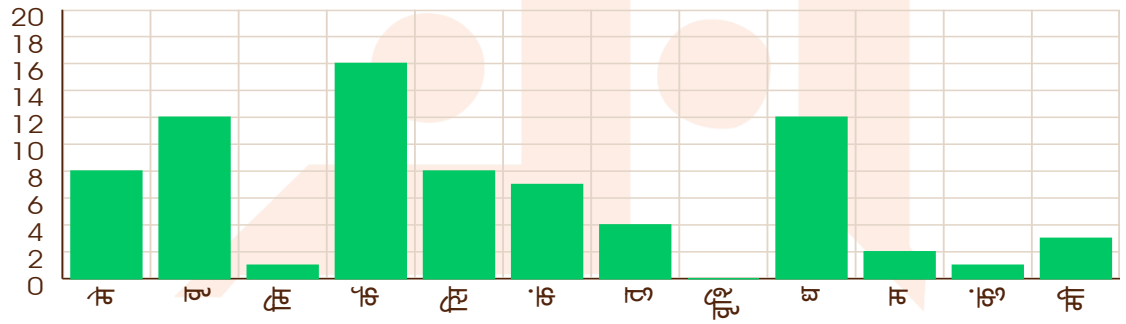

शोध्य पिंड

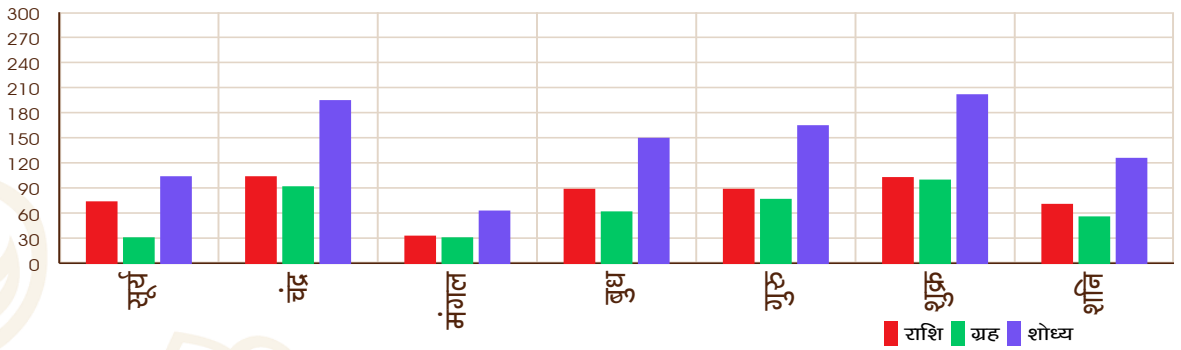

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 11 मास 13 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/10/1972		14/09/1984		14/09/2001		14/09/2008		14/09/2028	
14/09/1984		14/09/2001		14/09/2008		14/09/2028		15/09/2034	
	00/00/0000	बुध	11/02/1987	केतु	11/02/2002	शुक्र	15/01/2012	सूर्य	02/01/2029
	00/00/0000	केतु	08/02/1988	शुक्र	13/04/2003	सूर्य	14/01/2013	चंद्र	03/07/2029
	01/10/1972	शुक्र	09/12/1990	सूर्य	19/08/2003	चंद्र	15/09/2014	मंगल	08/11/2029
शुक्र	06/09/1975	सूर्य	15/10/1991	चंद्र	19/03/2004	मंगल	15/11/2015	राहु	03/10/2030
सूर्य	18/08/1976	चंद्र	16/03/1993	मंगल	15/08/2004	राहु	15/11/2018	गुरु	22/07/2031
चंद्र	19/03/1978	मंगल	13/03/1994	राहु	02/09/2005	गुरु	16/07/2021	शनि	03/07/2032
मंगल	28/04/1979	राहु	29/09/1996	गुरु	09/08/2006	शनि	14/09/2024	बुध	10/05/2033
राहु	04/03/1982	गुरु	05/01/1999	शनि	18/09/2007	बुध	16/07/2027	केतु	14/09/2033
गुरु	14/09/1984	शनि	14/09/2001	बुध	14/09/2008	केतु	14/09/2028	शुक्र	15/09/2034

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
15/09/2034		14/09/2044		15/09/2051		14/09/2069		14/09/2085	
14/09/2044		15/09/2051		14/09/2069		14/09/2085		00/00/0000	
चंद्र	16/07/2035	मंगल	10/02/2045	राहु	28/05/2054	गुरु	03/11/2071	शनि	17/09/2088
मंगल	14/02/2036	राहु	01/03/2046	गुरु	21/10/2056	शनि	16/05/2074	बुध	28/05/2091
राहु	15/08/2037	गुरु	05/02/2047	शनि	28/08/2059	बुध	21/08/2076	केतु	06/07/2092
गुरु	15/12/2038	शनि	16/03/2048	बुध	16/03/2062	केतु	28/07/2077	शुक्र	01/10/2092
शनि	15/07/2040	बुध	13/03/2049	केतु	04/04/2063	शुक्र	28/03/2080		00/00/0000
बुध	15/12/2041	केतु	09/08/2049	शुक्र	03/04/2066	सूर्य	14/01/2081		00/00/0000
केतु	16/07/2042	शुक्र	09/10/2050	सूर्य	26/02/2067	चंद्र	16/05/2082		00/00/0000
शुक्र	16/03/2044	सूर्य	14/02/2051	चंद्र	27/08/2068	मंगल	22/04/2083		00/00/0000
सूर्य	14/09/2044	चंद्र	15/09/2051	मंगल	14/09/2069	राहु	14/09/2085		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 11 वर्ष 11 मा 28 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
01/10/1972		06/09/1975		18/08/1976		19/03/1978		28/04/1979	
06/09/1975		18/08/1976		19/03/1978		28/04/1979		04/03/1982	
शुक्र	15/01/1973	सूर्य	23/09/1975	चंद्र	05/10/1976	मंगल	12/04/1978	राहु	01/10/1979
सूर्य	14/03/1973	चंद्र	22/10/1975	मंगल	08/11/1976	राहु	12/06/1978	गुरु	17/02/1980
चंद्र	18/06/1973	मंगल	11/11/1975	राहु	03/02/1977	गुरु	04/08/1978	शनि	31/07/1980
मंगल	25/08/1973	राहु	02/01/1976	गुरु	21/04/1977	शनि	08/10/1978	बुध	25/12/1980
राहु	14/02/1974	गुरु	18/02/1976	शनि	21/07/1977	बुध	04/12/1978	केतु	24/02/1981
गुरु	18/07/1974	शनि	13/04/1976	बुध	11/10/1977	केतु	28/12/1978	शुक्र	16/08/1981
शनि	18/01/1975	बुध	01/06/1976	केतु	14/11/1977	शुक्र	05/03/1979	सूर्य	07/10/1981
बुध	30/06/1975	केतु	21/06/1976	शुक्र	18/02/1978	सूर्य	25/03/1979	चंद्र	02/01/1982
केतु	06/09/1975	शुक्र	18/08/1976	सूर्य	19/03/1978	चंद्र	28/04/1979	मंगल	04/03/1982

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
04/03/1982		14/09/1984		11/02/1987		08/02/1988		09/12/1990	
14/09/1984		11/02/1987		08/02/1988		09/12/1990		15/10/1991	
गुरु	05/07/1982	बुध	17/01/1985	केतु	04/03/1987	शुक्र	30/07/1988	सूर्य	24/12/1990
शनि	29/11/1982	केतु	09/03/1985	शुक्र	03/05/1987	सूर्य	19/09/1988	चंद्र	19/01/1991
बुध	09/04/1983	शुक्र	03/08/1985	सूर्य	21/05/1987	चंद्र	15/12/1988	मंगल	06/02/1991
केतु	02/06/1983	सूर्य	16/09/1985	चंद्र	21/06/1987	मंगल	13/02/1989	राहु	25/03/1991
शुक्र	03/11/1983	चंद्र	28/11/1985	मंगल	12/07/1987	राहु	18/07/1989	गुरु	05/05/1991
सूर्य	19/12/1983	मंगल	18/01/1986	राहु	04/09/1987	गुरु	03/12/1989	शनि	24/06/1991
चंद्र	05/03/1984	राहु	30/05/1986	गुरु	22/10/1987	शनि	16/05/1990	बुध	07/08/1991
मंगल	28/04/1984	गुरु	25/09/1986	शनि	19/12/1987	बुध	10/10/1990	केतु	25/08/1991
राहु	14/09/1984	शनि	11/02/1987	बुध	08/02/1988	केतु	09/12/1990	शुक्र	15/10/1991

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
15/10/1991		16/03/1993		13/03/1994		29/09/1996		05/01/1999	
16/03/1993		13/03/1994		29/09/1996		05/01/1999		14/09/2001	
चंद्र	28/11/1991	मंगल	06/04/1993	राहु	31/07/1994	गुरु	18/01/1997	शनि	10/06/1999
मंगल	28/12/1991	राहु	30/05/1993	गुरु	02/12/1994	शनि	29/05/1997	बुध	27/10/1999
राहु	14/03/1992	गुरु	18/07/1993	शनि	28/04/1995	बुध	23/09/1997	केतु	24/12/1999
गुरु	22/05/1992	शनि	13/09/1993	बुध	07/09/1995	केतु	11/11/1997	शुक्र	05/06/2000
शनि	12/08/1992	बुध	03/11/1993	केतु	01/11/1995	शुक्र	28/03/1998	सूर्य	24/07/2000
बुध	25/10/1992	केतु	24/11/1993	शुक्र	04/04/1996	सूर्य	09/05/1998	चंद्र	14/10/2000
केतु	24/11/1992	शुक्र	24/01/1994	सूर्य	21/05/1996	चंद्र	17/07/1998	मंगल	10/12/2000
शुक्र	18/02/1993	सूर्य	11/02/1994	चंद्र	06/08/1996	मंगल	03/09/1998	राहु	06/05/2001
सूर्य	16/03/1993	चंद्र	13/03/1994	मंगल	29/09/1996	राहु	05/01/1999	गुरु	14/09/2001

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
14/09/2001		11/02/2002		13/04/2003		19/08/2003		19/03/2004	
11/02/2002		13/04/2003		19/08/2003		19/03/2004		15/08/2004	
केतु	23/09/2001	शुक्र	23/04/2002	सूर्य	19/04/2003	चंद्र	05/09/2003	मंगल	27/03/2004
शुक्र	18/10/2001	सूर्य	14/05/2002	चंद्र	30/04/2003	मंगल	18/09/2003	राहु	19/04/2004
सूर्य	26/10/2001	चंद्र	18/06/2002	मंगल	07/05/2003	राहु	20/10/2003	गुरु	09/05/2004
चंद्र	07/11/2001	मंगल	13/07/2002	राहु	26/05/2003	गुरु	17/11/2003	शनि	01/06/2004
मंगल	16/11/2001	राहु	15/09/2002	गुरु	12/06/2003	शनि	21/12/2003	बुध	22/06/2004
राहु	08/12/2001	गुरु	11/11/2002	शनि	03/07/2003	बुध	20/01/2004	केतु	01/07/2004
गुरु	28/12/2001	शनि	18/01/2003	बुध	21/07/2003	केतु	02/02/2004	शुक्र	26/07/2004
शनि	21/01/2002	बुध	19/03/2003	केतु	28/07/2003	शुक्र	08/03/2004	सूर्य	02/08/2004
बुध	11/02/2002	केतु	13/04/2003	शुक्र	19/08/2003	सूर्य	19/03/2004	चंद्र	15/08/2004

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
15/08/2004		02/09/2005		09/08/2006		18/09/2007		14/09/2008	
02/09/2005		09/08/2006		18/09/2007		14/09/2008		15/01/2012	
राहु	11/10/2004	गुरु	18/10/2005	शनि	12/10/2006	बुध	08/11/2007	शुक्र	05/04/2009
गुरु	01/12/2004	शनि	11/12/2005	बुध	09/12/2006	केतु	29/11/2007	सूर्य	05/06/2009
शनि	31/01/2005	बुध	28/01/2006	केतु	01/01/2007	शुक्र	29/01/2008	चंद्र	14/09/2009
बुध	27/03/2005	केतु	17/02/2006	शुक्र	10/03/2007	सूर्य	16/02/2008	मंगल	25/11/2009
केतु	18/04/2005	शुक्र	15/04/2006	सूर्य	30/03/2007	चंद्र	17/03/2008	राहु	26/05/2010
शुक्र	21/06/2005	सूर्य	02/05/2006	चंद्र	03/05/2007	मंगल	07/04/2008	गुरु	04/11/2010
सूर्य	10/07/2005	चंद्र	30/05/2006	मंगल	26/05/2007	राहु	01/06/2008	शनि	16/05/2011
चंद्र	11/08/2005	मंगल	19/06/2006	राहु	26/07/2007	गुरु	19/07/2008	बुध	05/11/2011
मंगल	02/09/2005	राहु	09/08/2006	गुरु	18/09/2007	शनि	14/09/2008	केतु	15/01/2012

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
15/01/2012		14/01/2013		15/09/2014		15/11/2015		15/11/2018	
14/01/2013		15/09/2014		15/11/2015		15/11/2018		16/07/2021	
सूर्य	02/02/2012	चंद्र	06/03/2013	मंगल	10/10/2014	राहु	27/04/2016	गुरु	24/03/2019
चंद्र	03/03/2012	मंगल	10/04/2013	राहु	13/12/2014	गुरु	20/09/2016	शनि	26/08/2019
मंगल	25/03/2012	राहु	11/07/2013	गुरु	07/02/2015	शनि	13/03/2017	बुध	11/01/2020
राहु	19/05/2012	गुरु	30/09/2013	शनि	16/04/2015	बुध	15/08/2017	केतु	08/03/2020
गुरु	06/07/2012	शनि	04/01/2014	बुध	15/06/2015	केतु	18/10/2017	शुक्र	17/08/2020
शनि	02/09/2012	बुध	31/03/2014	केतु	10/07/2015	शुक्र	19/04/2018	सूर्य	05/10/2020
बुध	24/10/2012	केतु	06/05/2014	शुक्र	19/09/2015	सूर्य	12/06/2018	चंद्र	25/12/2020
केतु	14/11/2012	शुक्र	15/08/2014	सूर्य	10/10/2015	चंद्र	12/09/2018	मंगल	20/02/2021
शुक्र	14/01/2013	सूर्य	15/09/2014	चंद्र	15/11/2015	मंगल	15/11/2018	राहु	16/07/2021

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
16/07/2021		14/09/2024		16/07/2027		14/09/2028		02/01/2029	
14/09/2024		16/07/2027		14/09/2028		02/01/2029		03/07/2029	
शनि	15/01/2022	बुध	08/02/2025	केतु	10/08/2027	सूर्य	20/09/2028	चंद्र	17/01/2029
बुध	28/06/2022	केतु	09/04/2025	शुक्र	20/10/2027	चंद्र	29/09/2028	मंगल	28/01/2029
केतु	03/09/2022	शुक्र	29/09/2025	सूर्य	10/11/2027	मंगल	05/10/2028	राहु	24/02/2029
शुक्र	15/03/2023	सूर्य	19/11/2025	चंद्र	16/12/2027	राहु	22/10/2028	गुरु	20/03/2029
सूर्य	12/05/2023	चंद्र	14/02/2026	मंगल	10/01/2028	गुरु	05/11/2028	शनि	18/04/2029
चंद्र	16/08/2023	मंगल	15/04/2026	राहु	14/03/2028	शनि	23/11/2028	बुध	14/05/2029
मंगल	23/10/2023	राहु	17/09/2026	गुरु	09/05/2028	बुध	08/12/2028	केतु	25/05/2029
राहु	13/04/2024	गुरु	02/02/2027	शनि	16/07/2028	केतु	15/12/2028	शुक्र	24/06/2029
गुरु	14/09/2024	शनि	16/07/2027	बुध	14/09/2028	शुक्र	02/01/2029	सूर्य	03/07/2029

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
03/07/2029		08/11/2029		03/10/2030		22/07/2031		03/07/2032	
08/11/2029		03/10/2030		22/07/2031		03/07/2032		10/05/2033	
मंगल	11/07/2029	राहु	28/12/2029	गुरु	11/11/2030	शनि	15/09/2031	बुध	16/08/2032
राहु	30/07/2029	गुरु	09/02/2030	शनि	27/12/2030	बुध	03/11/2031	केतु	03/09/2032
गुरु	16/08/2029	शनि	02/04/2030	बुध	07/02/2031	केतु	24/11/2031	शुक्र	25/10/2032
शनि	05/09/2029	बुध	19/05/2030	केतु	24/02/2031	शुक्र	20/01/2032	सूर्य	10/11/2032
बुध	23/09/2029	केतु	07/06/2030	शुक्र	13/04/2031	सूर्य	07/02/2032	चंद्र	05/12/2032
केतु	01/10/2029	शुक्र	01/08/2030	सूर्य	28/04/2031	चंद्र	07/03/2032	मंगल	24/12/2032
शुक्र	22/10/2029	सूर्य	17/08/2030	चंद्र	22/05/2031	मंगल	27/03/2032	राहु	08/02/2033
सूर्य	29/10/2029	चंद्र	14/09/2030	मंगल	08/06/2031	राहु	18/05/2032	गुरु	22/03/2033
चंद्र	08/11/2029	मंगल	03/10/2030	राहु	22/07/2031	गुरु	03/07/2032	शनि	10/05/2033

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
10/05/2033		14/09/2033		15/09/2034		16/07/2035		14/02/2036	
14/09/2033		15/09/2034		16/07/2035		14/02/2036		15/08/2037	
केतु	17/05/2033	शुक्र	14/11/2033	चंद्र	10/10/2034	मंगल	29/07/2035	राहु	06/05/2036
शुक्र	07/06/2033	सूर्य	03/12/2033	मंगल	28/10/2034	राहु	30/08/2035	गुरु	18/07/2036
सूर्य	14/06/2033	चंद्र	02/01/2034	राहु	13/12/2034	गुरु	27/09/2035	शनि	13/10/2036
चंद्र	24/06/2033	मंगल	23/01/2034	गुरु	22/01/2035	शनि	31/10/2035	बुध	30/12/2036
मंगल	02/07/2033	राहु	19/03/2034	शनि	11/03/2035	बुध	30/11/2035	केतु	31/01/2037
राहु	21/07/2033	गुरु	07/05/2034	बुध	23/04/2035	केतु	12/12/2035	शुक्र	02/05/2037
गुरु	07/08/2033	शनि	04/07/2034	केतु	11/05/2035	शुक्र	17/01/2036	सूर्य	29/05/2037
शनि	27/08/2033	बुध	24/08/2034	शुक्र	01/07/2035	सूर्य	27/01/2036	चंद्र	14/07/2037
बुध	14/09/2033	केतु	15/09/2034	सूर्य	16/07/2035	चंद्र	14/02/2036	मंगल	15/08/2037

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
15/08/2037		15/12/2038		15/07/2040		15/12/2041		16/07/2042	
15/12/2038		15/07/2040		15/12/2041		16/07/2042		16/03/2044	
गुरु	19/10/2037	शनि	17/03/2039	बुध	27/09/2040	केतु	27/12/2041	शुक्र	25/10/2042
शनि	04/01/2038	बुध	07/06/2039	केतु	27/10/2040	शुक्र	01/02/2042	सूर्य	25/11/2042
बुध	14/03/2038	केतु	10/07/2039	शुक्र	21/01/2041	सूर्य	11/02/2042	चंद्र	14/01/2043
केतु	12/04/2038	शुक्र	15/10/2039	सूर्य	16/02/2041	चंद्र	01/03/2042	मंगल	19/02/2043
शुक्र	02/07/2038	सूर्य	13/11/2039	चंद्र	31/03/2041	मंगल	14/03/2042	राहु	21/05/2043
सूर्य	26/07/2038	चंद्र	31/12/2039	मंगल	30/04/2041	राहु	15/04/2042	गुरु	10/08/2043
चंद्र	05/09/2038	मंगल	03/02/2040	राहु	17/07/2041	गुरु	13/05/2042	शनि	15/11/2043
मंगल	03/10/2038	राहु	29/04/2040	गुरु	24/09/2041	शनि	16/06/2042	बुध	09/02/2044
राहु	15/12/2038	गुरु	15/07/2040	शनि	15/12/2041	बुध	16/07/2042	केतु	16/03/2044

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
16/03/2044		14/09/2044		10/02/2045		01/03/2046		05/02/2047	
14/09/2044		10/02/2045		01/03/2046		05/02/2047		16/03/2048	
सूर्य	25/03/2044	मंगल	23/09/2044	राहु	09/04/2045	गुरु	15/04/2046	शनि	10/04/2047
चंद्र	09/04/2044	राहु	15/10/2044	गुरु	30/05/2045	शनि	08/06/2046	बुध	06/06/2047
मंगल	20/04/2044	गुरु	04/11/2044	शनि	30/07/2045	बुध	27/07/2046	केतु	30/06/2047
राहु	17/05/2044	शनि	28/11/2044	बुध	22/09/2045	केतु	16/08/2046	शुक्र	05/09/2047
गुरु	10/06/2044	बुध	19/12/2044	केतु	14/10/2045	शुक्र	11/10/2046	सूर्य	26/09/2047
शनि	09/07/2044	केतु	28/12/2044	शुक्र	17/12/2045	सूर्य	28/10/2046	चंद्र	29/10/2047
बुध	04/08/2044	शुक्र	22/01/2045	सूर्य	06/01/2046	चंद्र	26/11/2046	मंगल	22/11/2047
केतु	15/08/2044	सूर्य	29/01/2045	चंद्र	07/02/2046	मंगल	16/12/2046	राहु	22/01/2048
शुक्र	14/09/2044	चंद्र	10/02/2045	मंगल	01/03/2046	राहु	05/02/2047	गुरु	16/03/2048

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
16/03/2048		13/03/2049		09/08/2049		09/10/2050		14/02/2051	
13/03/2049		09/08/2049		09/10/2050		14/02/2051		15/09/2051	
बुध	06/05/2048	केतु	22/03/2049	शुक्र	19/10/2049	सूर्य	15/10/2050	चंद्र	04/03/2051
केतु	27/05/2048	शुक्र	15/04/2049	सूर्य	09/11/2049	चंद्र	26/10/2050	मंगल	16/03/2051
शुक्र	26/07/2048	सूर्य	23/04/2049	चंद्र	15/12/2049	मंगल	03/11/2050	राहु	17/04/2051
सूर्य	14/08/2048	चंद्र	05/05/2049	मंगल	09/01/2050	राहु	22/11/2050	गुरु	15/05/2051
चंद्र	13/09/2048	मंगल	14/05/2049	राहु	14/03/2050	गुरु	09/12/2050	शनि	18/06/2051
मंगल	04/10/2048	राहु	05/06/2049	गुरु	09/05/2050	शनि	29/12/2050	बुध	18/07/2051
राहु	27/11/2048	गुरु	25/06/2049	शनि	16/07/2050	बुध	16/01/2051	केतु	31/07/2051
गुरु	14/01/2049	शनि	19/07/2049	बुध	14/09/2050	केतु	24/01/2051	शुक्र	04/09/2051
शनि	13/03/2049	बुध	09/08/2049	केतु	09/10/2050	शुक्र	14/02/2051	सूर्य	15/09/2051

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
15/09/2051		28/05/2054		21/10/2056		28/08/2059		16/03/2062	
28/05/2054		21/10/2056		28/08/2059		16/03/2062		04/04/2063	
राहु	10/02/2052	गुरु	22/09/2054	शनि	04/04/2057	बुध	07/01/2060	केतु	07/04/2062
गुरु	20/06/2052	शनि	08/02/2055	बुध	29/08/2057	केतु	01/03/2060	शुक्र	10/06/2062
शनि	24/11/2052	बुध	12/06/2055	केतु	29/10/2057	शुक्र	03/08/2060	सूर्य	30/06/2062
बुध	12/04/2053	केतु	02/08/2055	शुक्र	20/04/2058	सूर्य	19/09/2060	चंद्र	01/08/2062
केतु	09/06/2053	शुक्र	26/12/2055	सूर्य	11/06/2058	चंद्र	05/12/2060	मंगल	23/08/2062
शुक्र	20/11/2053	सूर्य	08/02/2056	चंद्र	06/09/2058	मंगल	29/01/2061	राहु	19/10/2062
सूर्य	08/01/2054	चंद्र	21/04/2056	मंगल	06/11/2058	राहु	17/06/2061	गुरु	10/12/2062
चंद्र	01/04/2054	मंगल	11/06/2056	राहु	11/04/2059	गुरु	20/10/2061	शनि	08/02/2063
मंगल	28/05/2054	राहु	21/10/2056	गुरु	28/08/2059	शनि	16/03/2062	बुध	04/04/2063

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
04/04/2063		03/04/2066		26/02/2067		27/08/2068		14/09/2069	
03/04/2066		26/02/2067		27/08/2068		14/09/2069		03/11/2071	
शुक्र	03/10/2063	सूर्य	20/04/2066	चंद्र	13/04/2067	मंगल	18/09/2068	गुरु	27/12/2069
सूर्य	27/11/2063	चंद्र	17/05/2066	मंगल	15/05/2067	राहु	15/11/2068	शनि	30/04/2070
चंद्र	26/02/2064	मंगल	05/06/2066	राहु	05/08/2067	गुरु	05/01/2069	बुध	18/08/2070
मंगल	30/04/2064	राहु	25/07/2066	गुरु	17/10/2067	शनि	07/03/2069	केतु	03/10/2070
राहु	12/10/2064	गुरु	07/09/2066	शनि	12/01/2068	बुध	30/04/2069	शुक्र	09/02/2071
गुरु	07/03/2065	शनि	29/10/2066	बुध	29/03/2068	केतु	22/05/2069	सूर्य	20/03/2071
शनि	27/08/2065	बुध	14/12/2066	केतु	30/04/2068	शुक्र	25/07/2069	चंद्र	24/05/2071
बुध	29/01/2066	केतु	02/01/2067	शुक्र	31/07/2068	सूर्य	14/08/2069	मंगल	09/07/2071
केतु	03/04/2066	शुक्र	26/02/2067	सूर्य	27/08/2068	चंद्र	14/09/2069	राहु	03/11/2071

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
03/11/2071		16/05/2074		21/08/2076		28/07/2077		28/03/2080	
16/05/2074		21/08/2076		28/07/2077		28/03/2080		14/01/2081	
शनि	28/03/2072	बुध	10/09/2074	केतु	10/09/2076	शुक्र	06/01/2078	सूर्य	11/04/2080
बुध	06/08/2072	केतु	29/10/2074	शुक्र	06/11/2076	सूर्य	24/02/2078	चंद्र	06/05/2080
केतु	29/09/2072	शुक्र	16/03/2075	सूर्य	23/11/2076	चंद्र	16/05/2078	मंगल	23/05/2080
शुक्र	02/03/2073	सूर्य	26/04/2075	चंद्र	21/12/2076	मंगल	12/07/2078	राहु	06/07/2080
सूर्य	18/04/2073	चंद्र	04/07/2075	मंगल	10/01/2077	राहु	05/12/2078	गुरु	14/08/2080
चंद्र	04/07/2073	मंगल	21/08/2075	राहु	02/03/2077	गुरु	14/04/2079	शनि	29/09/2080
मंगल	27/08/2073	राहु	23/12/2075	गुरु	17/04/2077	शनि	15/09/2079	बुध	09/11/2080
राहु	13/01/2074	गुरु	12/04/2076	शनि	10/06/2077	बुध	31/01/2080	केतु	26/11/2080
गुरु	16/05/2074	शनि	21/08/2076	बुध	28/07/2077	केतु	28/03/2080	शुक्र	14/01/2081

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - सूर्य		शुक्र - बुध - चंद्र		शुक्र - बुध - मंगल		शुक्र - बुध - राहु	
29/09/2025 04:49		19/11/2025 22:40		14/02/2026 04:25		15/04/2026 13:15	
19/11/2025 22:40		14/02/2026 04:25		15/04/2026 13:15		17/09/2026 18:48	
सूर्य	01/10/2025 18:55	चंद्र	27/11/2025 03:09	मंगल	17/02/2026 16:56	राहु	08/05/2026 20:05
चंद्र	06/10/2025 02:24	मंगल	02/12/2025 03:53	राहु	26/02/2026 18:16	गुरु	29/05/2026 12:49
मंगल	09/10/2025 02:51	राहु	15/12/2025 02:21	गुरु	06/03/2026 19:26	शनि	23/06/2026 02:42
राहु	16/10/2025 21:07	गुरु	26/12/2025 14:19	शनि	16/03/2026 08:50	बुध	15/07/2026 02:29
गुरु	23/10/2025 18:42	शनि	09/01/2026 06:02	बुध	24/03/2026 22:05	केतु	24/07/2026 03:49
शनि	31/10/2025 23:20	बुध	21/01/2026 11:15	केतु	28/03/2026 10:36	शुक्र	19/08/2026 00:44
बुध	08/11/2025 07:15	केतु	26/01/2026 11:59	शुक्र	07/04/2026 12:04	सूर्य	26/08/2026 19:01
केतु	11/11/2025 07:42	शुक्र	09/02/2026 20:56	सूर्य	10/04/2026 12:31	चंद्र	08/09/2026 17:28
शुक्र	19/11/2025 22:40	सूर्य	14/02/2026 04:25	चंद्र	15/04/2026 13:15	मंगल	17/09/2026 18:48

शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि		शुक्र - केतु - केतु		शुक्र - केतु - शुक्र	
17/09/2026 18:48		02/02/2027 18:24		16/07/2027 14:55		10/08/2027 11:30	
02/02/2027 18:24		16/07/2027 14:55		10/08/2027 11:30		20/10/2027 12:00	
गुरु	06/10/2026 04:21	शनि	28/02/2027 17:03	केतु	18/07/2027 01:43	शुक्र	22/08/2027 07:35
शनि	28/10/2026 00:41	बुध	23/03/2027 22:09	शुक्र	22/07/2027 05:09	सूर्य	25/08/2027 20:48
बुध	16/11/2026 13:49	केतु	02/04/2027 11:33	सूर्य	23/07/2027 10:59	चंद्र	31/08/2027 18:51
केतु	24/11/2026 15:00	शुक्र	29/04/2027 18:58	चंद्र	25/07/2027 12:42	मंगल	04/09/2027 22:17
शुक्र	17/12/2026 14:56	सूर्य	07/05/2027 23:36	मंगल	26/07/2027 23:30	राहु	15/09/2027 13:57
सूर्य	24/12/2026 12:31	चंद्र	21/05/2027 15:19	राहु	30/07/2027 16:59	गुरु	25/09/2027 01:13
चंद्र	05/01/2027 00:29	मंगल	31/05/2027 04:42	गुरु	03/08/2027 00:32	शनि	06/10/2027 07:06
मंगल	13/01/2027 01:39	राहु	24/06/2027 18:35	शनि	06/08/2027 22:59	बुध	16/10/2027 08:34
राहु	02/02/2027 18:24	गुरु	16/07/2027 14:55	बुध	10/08/2027 11:30	केतु	20/10/2027 12:00

शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल		शुक्र - केतु - राहु	
20/10/2027 12:00		10/11/2027 19:21		16/12/2027 07:36		10/01/2028 04:10	
10/11/2027 19:21		16/12/2027 07:36		10/01/2028 04:10		14/03/2028 02:13	
सूर्य	21/10/2027 13:34	चंद्र	13/11/2027 18:22	मंगल	17/12/2027 18:24	राहु	19/01/2028 18:17
चंद्र	23/10/2027 08:11	मंगल	15/11/2027 20:05	राहु	21/12/2027 11:53	गुरु	28/01/2028 06:49
मंगल	24/10/2027 14:00	राहु	21/11/2027 03:55	गुरु	24/12/2027 19:26	शनि	07/02/2028 09:43
राहु	27/10/2027 18:43	गुरु	25/11/2027 21:33	शनि	28/12/2027 17:53	बुध	16/02/2028 11:02
गुरु	30/10/2027 14:53	शनि	01/12/2027 12:30	बुध	01/01/2028 06:24	केतु	20/02/2028 04:31
शनि	02/11/2027 23:51	बुध	06/12/2027 13:14	केतु	02/01/2028 17:12	शुक्र	01/03/2028 20:12
बुध	06/11/2027 00:18	केतु	08/12/2027 14:57	शुक्र	06/01/2028 20:38	सूर्य	05/03/2028 00:54
केतु	07/11/2027 06:07	शुक्र	14/12/2027 12:59	सूर्य	08/01/2028 02:28	चंद्र	10/03/2028 08:44
शुक्र	10/11/2027 19:21	सूर्य	16/12/2027 07:36	चंद्र	10/01/2028 04:10	मंगल	14/03/2028 02:13

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - गुरु	
14/03/2028 02:13	
09/05/2028 21:49	
गुरु	21/03/2028 16:02
शनि	30/03/2028 15:56
बुध	07/04/2028 17:07
केतु	11/04/2028 00:40
शुक्र	20/04/2028 11:56
सूर्य	23/04/2028 08:06
चंद्र	28/04/2028 01:44
मंगल	01/05/2028 09:17
राहु	09/05/2028 21:49

शुक्र - केतु - शनि	
09/05/2028 21:49	
16/07/2028 09:06	
शनि	20/05/2028 14:13
बुध	30/05/2028 03:36
केतु	03/06/2028 02:04
शुक्र	14/06/2028 07:57
सूर्य	17/06/2028 16:54
चंद्र	23/06/2028 07:51
मंगल	27/06/2028 06:18
राहु	07/07/2028 09:12
गुरु	16/07/2028 09:06

शुक्र - केतु - बुध	
16/07/2028 09:06	
14/09/2028 17:55	
बुध	24/07/2028 22:21
केतु	28/07/2028 10:52
शुक्र	07/08/2028 12:20
सूर्य	10/08/2028 12:47
चंद्र	15/08/2028 13:31
मंगल	19/08/2028 02:02
राहु	28/08/2028 03:21
गुरु	05/09/2028 04:32
शनि	14/09/2028 17:55

सूर्य - सूर्य - सूर्य	
14/09/2028 17:55	
20/09/2028 05:25	
सूर्य	15/09/2028 00:30
चंद्र	15/09/2028 11:27
मंगल	15/09/2028 19:08
राहु	16/09/2028 14:51
गुरु	17/09/2028 08:23
शनि	18/09/2028 05:12
बुध	18/09/2028 23:50
केतु	19/09/2028 07:30
शुक्र	20/09/2028 05:25

सूर्य - सूर्य - चंद्र	
20/09/2028 05:25	
29/09/2028 08:34	
चंद्र	20/09/2028 23:41
मंगल	21/09/2028 12:28
राहु	22/09/2028 21:20
गुरु	24/09/2028 02:33
शनि	25/09/2028 13:15
बुध	26/09/2028 20:18
केतु	27/09/2028 09:05
शुक्र	28/09/2028 21:36
सूर्य	29/09/2028 08:34

सूर्य - सूर्य - मंगल	
29/09/2028 08:34	
05/10/2028 17:58	
मंगल	29/09/2028 17:31
राहु	30/09/2028 16:31
गुरु	01/10/2028 12:59
शनि	02/10/2028 13:16
बुध	03/10/2028 11:00
केतु	03/10/2028 19:57
शुक्र	04/10/2028 21:31
सूर्य	05/10/2028 05:11
चंद्र	05/10/2028 17:58

सूर्य - सूर्य - राहु	
05/10/2028 17:58	
22/10/2028 04:26	
राहु	08/10/2028 05:08
गुरु	10/10/2028 09:44
शनि	13/10/2028 00:12
बुध	15/10/2028 08:05
केतु	16/10/2028 07:05
शुक्र	19/10/2028 00:50
सूर्य	19/10/2028 20:33
चंद्र	21/10/2028 05:26
मंगल	22/10/2028 04:26

सूर्य - सूर्य - गुरु	
22/10/2028 04:26	
05/11/2028 19:05	
गुरु	24/10/2028 03:11
शनि	26/10/2028 10:42
बुध	28/10/2028 12:23
केतु	29/10/2028 08:50
शुक्र	31/10/2028 19:17
सूर्य	01/11/2028 12:48
चंद्र	02/11/2028 18:02
मंगल	03/11/2028 14:29
राहु	05/11/2028 19:05

सूर्य - सूर्य - शनि	
05/11/2028 19:05	
23/11/2028 03:28	
शनि	08/11/2028 13:00
बुध	10/11/2028 24:00
केतु	12/11/2028 00:17
शुक्र	14/11/2028 21:41
सूर्य	15/11/2028 18:30
चंद्र	17/11/2028 05:12
मंगल	18/11/2028 05:29
राहु	20/11/2028 19:57
गुरु	23/11/2028 03:28

सूर्य - सूर्य - बुध	
23/11/2028 03:28	
08/12/2028 16:01	
बुध	25/11/2028 08:15
केतु	26/11/2028 05:58
शुक्र	28/11/2028 20:04
सूर्य	29/11/2028 14:42
चंद्र	30/11/2028 21:44
मंगल	01/12/2028 19:28
राहु	04/12/2028 03:21
गुरु	06/12/2028 05:02
शनि	08/12/2028 16:01

सूर्य - सूर्य - केतु	
08/12/2028 16:01	
15/12/2028 01:25	
केतु	09/12/2028 00:58
शुक्र	10/12/2028 02:32
सूर्य	10/12/2028 10:12
चंद्र	10/12/2028 22:59
मंगल	11/12/2028 07:56
राहु	12/12/2028 06:57
गुरु	13/12/2028 03:24
शनि	14/12/2028 03:41
बुध	15/12/2028 01:25

सूर्य - सूर्य - शुक्र	
15/12/2028 01:25	
02/01/2029 07:43	
शुक्र	18/12/2028 02:28
सूर्य	19/12/2028 00:23
चंद्र	20/12/2028 12:55
मंगल	21/12/2028 14:29
राहु	24/12/2028 08:14
गुरु	26/12/2028 18:40
शनि	29/12/2028 16:04
बुध	01/01/2029 06:09
केतु	02/01/2029 07:43

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - चंद्र	
02/01/2029 07:43	
17/01/2029 12:58	
चंद्र	03/01/2029 14:10
मंगल	04/01/2029 11:28
राहु	06/01/2029 18:15
गुरु	08/01/2029 18:57
शनि	11/01/2029 04:47
बुध	13/01/2029 08:32
केतु	14/01/2029 05:50
शुक्र	16/01/2029 18:43
सूर्य	17/01/2029 12:58

सूर्य - चंद्र - मंगल	
17/01/2029 12:58	
28/01/2029 04:39	
मंगल	18/01/2029 03:53
राहु	19/01/2029 18:14
गुरु	21/01/2029 04:20
शनि	22/01/2029 20:49
बुध	24/01/2029 09:02
केतु	24/01/2029 23:57
शुक्र	26/01/2029 18:33
सूर्य	27/01/2029 07:21
चंद्र	28/01/2029 04:39

सूर्य - चंद्र - राहु	
28/01/2029 04:39	
24/02/2029 14:06	
राहु	01/02/2029 07:16
गुरु	04/02/2029 22:56
शनि	09/02/2029 07:01
बुध	13/02/2029 04:10
केतु	14/02/2029 18:31
शुक्र	19/02/2029 08:05
सूर्य	20/02/2029 16:58
चंद्र	22/02/2029 23:45
मंगल	24/02/2029 14:06

सूर्य - चंद्र - गुरु	
24/02/2029 14:06	
20/03/2029 22:30	
गुरु	27/02/2029 20:01
शनि	03/03/2029 16:33
बुध	07/03/2029 03:20
केतु	08/03/2029 13:26
शुक्र	12/03/2029 14:50
सूर्य	13/03/2029 20:03
चंद्र	15/03/2029 20:45
मंगल	17/03/2029 06:50
राहु	20/03/2029 22:30

सूर्य - चंद्र - शनि	
20/03/2029 22:30	
18/04/2029 20:28	
शनि	25/03/2029 12:23
बुध	29/03/2029 14:41
केतु	31/03/2029 07:10
शुक्र	05/04/2029 02:50
सूर्य	06/04/2029 13:32
चंद्र	08/04/2029 23:22
मंगल	10/04/2029 15:51
राहु	14/04/2029 23:57
गुरु	18/04/2029 20:28

सूर्य - चंद्र - बुध	
18/04/2029 20:28	
14/05/2029 17:24	
बुध	22/04/2029 12:26
केतु	24/04/2029 00:39
शुक्र	28/04/2029 08:09
सूर्य	29/04/2029 15:12
चंद्र	01/05/2029 18:56
मंगल	03/05/2029 07:09
राहु	07/05/2029 04:18
गुरु	10/05/2029 15:05
शनि	14/05/2029 17:24

सूर्य - चंद्र - केतु	
14/05/2029 17:24	
25/05/2029 09:04	
केतु	15/05/2029 08:19
शुक्र	17/05/2029 02:56
सूर्य	17/05/2029 15:43
चंद्र	18/05/2029 13:01
मंगल	19/05/2029 03:56
राहु	20/05/2029 18:17
गुरु	22/05/2029 04:22
शनि	23/05/2029 20:51
बुध	25/05/2029 09:04

सूर्य - चंद्र - शुक्र	
25/05/2029 09:04	
24/06/2029 19:34	
शुक्र	30/05/2029 10:49
सूर्य	31/05/2029 23:21
चंद्र	03/06/2029 12:13
मंगल	05/06/2029 06:50
राहु	09/06/2029 20:25
गुरु	13/06/2029 21:49
शनि	18/06/2029 17:28
बुध	23/06/2029 00:58
केतु	24/06/2029 19:34

सूर्य - चंद्र - सूर्य	
24/06/2029 19:34	
03/07/2029 22:43	
सूर्य	25/06/2029 06:32
चंद्र	26/06/2029 00:48
मंगल	26/06/2029 13:35
राहु	27/06/2029 22:27
गुरु	29/06/2029 03:40
शनि	30/06/2029 14:22
बुध	01/07/2029 21:25
केतु	02/07/2029 10:12
शुक्र	03/07/2029 22:43

सूर्य - मंगल - मंगल	
03/07/2029 22:43	
11/07/2029 09:42	
मंगल	04/07/2029 09:10
राहु	05/07/2029 12:01
गुरु	06/07/2029 11:52
शनि	07/07/2029 16:13
बुध	08/07/2029 17:34
केतु	09/07/2029 04:00
शुक्र	10/07/2029 09:50
सूर्य	10/07/2029 18:47
चंद्र	11/07/2029 09:42

सूर्य - मंगल - राहु	
11/07/2029 09:42	
30/07/2029 13:55	
राहु	14/07/2029 06:44
गुरु	16/07/2029 20:05
शनि	19/07/2029 20:57
बुध	22/07/2029 14:09
केतु	23/07/2029 17:00
शुक्र	26/07/2029 21:42
सूर्य	27/07/2029 20:43
चंद्र	29/07/2029 11:04
मंगल	30/07/2029 13:55

सूर्य - मंगल - गुरु	
30/07/2029 13:55	
16/08/2029 14:59	
गुरु	01/08/2029 20:27
शनि	04/08/2029 13:14
बुध	06/08/2029 23:11
केतु	07/08/2029 23:03
शुक्र	10/08/2029 19:13
सूर्य	11/08/2029 15:41
चंद्र	13/08/2029 01:46
मंगल	14/08/2029 01:38
राहु	16/08/2029 14:59

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - मंगल - शनि		सूर्य - मंगल - बुध		सूर्य - मंगल - केतु		सूर्य - मंगल - शुक्र	
16/08/2029 14:59		05/09/2029 20:46		23/09/2029 23:25		01/10/2029 10:24	
05/09/2029 20:46		23/09/2029 23:25		01/10/2029 10:24		22/10/2029 17:45	
शनि	19/08/2029 19:54	बुध	08/09/2029 10:21	केतु	24/09/2029 09:52	शुक्र	04/10/2029 23:37
बुध	22/08/2029 16:44	केतु	09/09/2029 11:42	शुक्र	25/09/2029 15:41	सूर्य	06/10/2029 01:11
केतु	23/08/2029 21:04	शुक्र	12/09/2029 12:09	सूर्य	26/09/2029 00:38	चंद्र	07/10/2029 19:48
शुक्र	27/08/2029 06:02	सूर्य	13/09/2029 09:53	चंद्र	26/09/2029 15:33	मंगल	09/10/2029 01:38
सूर्य	28/08/2029 06:19	चंद्र	14/09/2029 22:06	मंगल	27/09/2029 02:00	राहु	12/10/2029 06:20
चंद्र	29/08/2029 22:48	मंगल	15/09/2029 23:27	राहु	28/09/2029 04:50	गुरु	15/10/2029 02:31
मंगल	31/08/2029 03:08	राहु	18/09/2029 16:39	गुरु	29/09/2029 04:42	शनि	18/10/2029 11:28
राहु	03/09/2029 04:00	गुरु	21/09/2029 02:36	शनि	30/09/2029 09:02	बुध	21/10/2029 11:55
गुरु	05/09/2029 20:46	शनि	23/09/2029 23:25	बुध	01/10/2029 10:24	केतु	22/10/2029 17:45

सूर्य - मंगल - सूर्य		सूर्य - मंगल - चंद्र		सूर्य - राहु - राहु		सूर्य - राहु - गुरु	
22/10/2029 17:45		29/10/2029 03:09		08/11/2029 18:49		28/12/2029 02:14	
29/10/2029 03:09		08/11/2029 18:49		28/12/2029 02:14		09/02/2030 22:09	
सूर्य	23/10/2029 01:25	चंद्र	30/10/2029 00:27	राहु	16/11/2029 04:20	गुरु	02/01/2030 22:29
चंद्र	23/10/2029 14:12	मंगल	30/10/2029 15:22	गुरु	22/11/2029 18:07	शनि	09/01/2030 21:03
मंगल	23/10/2029 23:09	राहु	01/11/2029 05:43	शनि	30/11/2029 13:30	बुध	16/01/2030 02:04
राहु	24/10/2029 22:09	गुरु	02/11/2029 15:49	बुध	07/12/2029 13:09	केतु	18/01/2030 15:26
गुरु	25/10/2029 18:37	शनि	04/11/2029 08:18	केतु	10/12/2029 10:11	शुक्र	25/01/2030 22:45
शनि	26/10/2029 18:54	बुध	05/11/2029 20:31	शुक्र	18/12/2029 15:25	सूर्य	28/01/2030 03:21
बुध	27/10/2029 16:38	केतु	06/11/2029 11:26	सूर्य	21/12/2029 02:35	चंद्र	31/01/2030 19:00
केतु	28/10/2029 01:35	शुक्र	08/11/2029 06:02	चंद्र	25/12/2029 05:12	मंगल	03/02/2030 08:22
शुक्र	29/10/2029 03:09	सूर्य	08/11/2029 18:49	मंगल	28/12/2029 02:14	राहु	09/02/2030 22:09

सूर्य - राहु - शनि		सूर्य - राहु - बुध		सूर्य - राहु - केतु		सूर्य - राहु - शुक्र	
09/02/2030 22:09		02/04/2030 23:18		19/05/2030 12:58		07/06/2030 17:11	
02/04/2030 23:18		19/05/2030 12:58		07/06/2030 17:11		01/08/2030 12:05	
शनि	18/02/2030 03:56	बुध	09/04/2030 13:39	केतु	20/05/2030 15:49	शुक्र	16/06/2030 20:20
बुध	25/02/2030 12:54	केतु	12/04/2030 06:50	शुक्र	23/05/2030 20:31	सूर्य	19/06/2030 14:05
केतु	28/02/2030 13:46	शुक्र	20/04/2030 01:07	सूर्य	24/05/2030 19:32	चंद्र	24/06/2030 03:39
शुक्र	09/03/2030 05:58	सूर्य	22/04/2030 09:00	चंद्र	26/05/2030 09:53	मंगल	27/06/2030 08:22
सूर्य	11/03/2030 20:25	चंद्र	26/04/2030 06:08	मंगल	27/05/2030 12:44	राहु	05/07/2030 13:36
चंद्र	16/03/2030 04:31	मंगल	28/04/2030 23:20	राहु	30/05/2030 09:46	गुरु	12/07/2030 20:55
मंगल	19/03/2030 05:23	राहु	05/05/2030 22:59	गुरु	01/06/2030 23:07	शनि	21/07/2030 13:06
राहु	27/03/2030 00:45	गुरु	12/05/2030 04:01	शनि	04/06/2030 23:59	बुध	29/07/2030 07:23
गुरु	02/04/2030 23:18	शनि	19/05/2030 12:58	बुध	07/06/2030 17:11	केतु	01/08/2030 12:05

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - सूर्य - सूर्य	
29/09/2025 04:49	
01/10/2025 18:55	
सूर्य	29/09/2025 07:56
चंद्र	29/09/2025 13:06
मंगल	29/09/2025 16:43
राहु	30/09/2025 02:02
गुरु	30/09/2025 10:19
शनि	30/09/2025 20:09
बुध	01/10/2025 04:57
केतु	01/10/2025 08:34
शुक्र	01/10/2025 18:55

शुक्र - बुध - सूर्य - चंद्र	
01/10/2025 18:55	
06/10/2025 02:24	
चंद्र	02/10/2025 03:32
मंगल	02/10/2025 09:35
राहु	03/10/2025 01:06
गुरु	03/10/2025 14:54
शनि	04/10/2025 07:17
बुध	04/10/2025 21:57
केतु	05/10/2025 03:59
शुक्र	05/10/2025 21:14
सूर्य	06/10/2025 02:24

शुक्र - बुध - सूर्य - मंगल	
06/10/2025 02:24	
09/10/2025 02:51	
मंगल	06/10/2025 06:38
राहु	06/10/2025 17:30
गुरु	07/10/2025 03:09
शनि	07/10/2025 14:37
बुध	08/10/2025 00:53
केतु	08/10/2025 05:07
शुक्र	08/10/2025 17:11
सूर्य	08/10/2025 20:48
चंद्र	09/10/2025 02:51

शुक्र - बुध - सूर्य - राहु	
09/10/2025 02:51	
16/10/2025 21:07	
राहु	10/10/2025 06:47
गुरु	11/10/2025 07:37
शनि	12/10/2025 13:07
बुध	13/10/2025 15:30
केतु	14/10/2025 02:22
शुक्र	15/10/2025 09:25
सूर्य	15/10/2025 18:44
चंद्र	16/10/2025 10:15
मंगल	16/10/2025 21:07

शुक्र - बुध - सूर्य - गुरु	
16/10/2025 21:07	
23/10/2025 18:42	
गुरु	17/10/2025 19:12
शनि	18/10/2025 21:25
बुध	19/10/2025 20:52
केतु	20/10/2025 06:32
शुक्र	21/10/2025 10:08
सूर्य	21/10/2025 18:24
चंद्र	22/10/2025 08:12
मंगल	22/10/2025 17:52
राहु	23/10/2025 18:42

शुक्र - बुध - सूर्य - शनि	
23/10/2025 18:42	
31/10/2025 23:20	
शनि	25/10/2025 01:50
बुध	26/10/2025 05:41
केतु	26/10/2025 17:10
शुक्र	28/10/2025 01:56
सूर्य	28/10/2025 11:46
चंद्र	29/10/2025 04:09
मंगल	29/10/2025 15:37
राहु	30/10/2025 21:07
गुरु	31/10/2025 23:20

शुक्र - बुध - सूर्य - बुध	
31/10/2025 23:20	
08/11/2025 07:15	
बुध	02/11/2025 00:15
केतु	02/11/2025 10:31
शुक्र	03/11/2025 15:50
सूर्य	04/11/2025 00:38
चंद्र	04/11/2025 15:18
मंगल	05/11/2025 01:33
राहु	06/11/2025 03:57
गुरु	07/11/2025 03:24
शनि	08/11/2025 07:15

शुक्र - बुध - सूर्य - केतु	
08/11/2025 07:15	
11/11/2025 07:42	
केतु	08/11/2025 11:29
शुक्र	08/11/2025 23:33
सूर्य	09/11/2025 03:11
चंद्र	09/11/2025 09:13
मंगल	09/11/2025 13:26
राहु	10/11/2025 00:18
गुरु	10/11/2025 09:58
शनि	10/11/2025 21:26
बुध	11/11/2025 07:42

शुक्र - बुध - सूर्य - शुक्र	
11/11/2025 07:42	
19/11/2025 22:40	
शुक्र	12/11/2025 18:12
सूर्य	13/11/2025 04:33
चंद्र	13/11/2025 21:47
मंगल	14/11/2025 09:52
राहु	15/11/2025 16:55
गुरु	16/11/2025 20:30
शनि	18/11/2025 05:17
बुध	19/11/2025 10:36
केतु	19/11/2025 22:40

शुक्र - बुध - चंद्र - चंद्र	
19/11/2025 22:40	
27/11/2025 03:09	
चंद्र	20/11/2025 13:03
मंगल	20/11/2025 23:06
राहु	22/11/2025 00:59
गुरु	22/11/2025 23:59
शनि	24/11/2025 03:17
बुध	25/11/2025 03:43
केतु	25/11/2025 13:47
शुक्र	26/11/2025 18:32
सूर्य	27/11/2025 03:09

शुक्र - बुध - चंद्र - मंगल	
27/11/2025 03:09	
02/12/2025 03:53	
मंगल	27/11/2025 10:12
राहु	28/11/2025 04:18
गुरु	28/11/2025 20:24
शनि	29/11/2025 15:31
बुध	30/11/2025 08:37
केतु	30/11/2025 15:40
शुक्र	01/12/2025 11:47
सूर्य	01/12/2025 17:50
चंद्र	02/12/2025 03:53

शुक्र - बुध - चंद्र - राहु	
02/12/2025 03:53	
15/12/2025 02:21	
राहु	04/12/2025 02:27
गुरु	05/12/2025 19:51
शनि	07/12/2025 21:01
बुध	09/12/2025 16:59
केतु	10/12/2025 11:06
शुक्र	12/12/2025 14:51
सूर्य	13/12/2025 06:22
चंद्र	14/12/2025 08:14
मंगल	15/12/2025 02:21

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - चंद्र - गुरु	
15/12/2025 02:21	
26/12/2025 14:19	
गुरु	16/12/2025 15:09
शनि	18/12/2025 10:50
बुध	20/12/2025 01:56
केतु	20/12/2025 18:02
शुक्र	22/12/2025 16:02
सूर्य	23/12/2025 05:50
चंद्र	24/12/2025 04:49
मंगल	24/12/2025 20:55
राहु	26/12/2025 14:19

शुक्र - बुध - चंद्र - शनि	
26/12/2025 14:19	
09/01/2026 06:02	
शनि	28/12/2025 18:12
बुध	30/12/2025 16:38
केतु	31/12/2025 11:45
शुक्र	02/01/2026 18:22
सूर्य	03/01/2026 10:45
चंद्र	04/01/2026 14:04
मंगल	05/01/2026 09:11
राहु	07/01/2026 10:20
गुरु	09/01/2026 06:02

शुक्र - बुध - चंद्र - बुध	
09/01/2026 06:02	
21/01/2026 11:15	
बुध	10/01/2026 23:34
केतु	11/01/2026 16:40
शुक्र	13/01/2026 17:32
सूर्य	14/01/2026 08:12
चंद्र	15/01/2026 08:38
मंगल	16/01/2026 01:44
राहु	17/01/2026 21:43
गुरु	19/01/2026 12:49
शनि	21/01/2026 11:15

शुक्र - बुध - चंद्र - केतु	
21/01/2026 11:15	
26/01/2026 11:59	
केतु	21/01/2026 18:17
शुक्र	22/01/2026 14:24
सूर्य	22/01/2026 20:27
चंद्र	23/01/2026 06:30
मंगल	23/01/2026 13:33
राहु	24/01/2026 07:40
गुरु	24/01/2026 23:45
शनि	25/01/2026 18:52
बुध	26/01/2026 11:59

शुक्र - बुध - चंद्र - शुक्र	
26/01/2026 11:59	
09/02/2026 20:56	
शुक्र	28/01/2026 21:28
सूर्य	29/01/2026 14:43
चंद्र	30/01/2026 19:28
मंगल	31/01/2026 15:35
राहु	02/02/2026 19:20
गुरु	04/02/2026 17:20
शनि	06/02/2026 23:57
बुध	09/02/2026 00:49
केतु	09/02/2026 20:56

शुक्र - बुध - चंद्र - सूर्य	
09/02/2026 20:56	
14/02/2026 04:25	
सूर्य	10/02/2026 02:07
चंद्र	10/02/2026 10:44
मंगल	10/02/2026 16:46
राहु	11/02/2026 08:18
गुरु	11/02/2026 22:06
शनि	12/02/2026 14:29
बुध	13/02/2026 05:08
केतु	13/02/2026 11:11
शुक्र	14/02/2026 04:25

शुक्र - बुध - मंगल - मंगल	
14/02/2026 04:25	
17/02/2026 16:56	
मंगल	14/02/2026 09:21
राहु	14/02/2026 22:02
गुरु	15/02/2026 09:18
शनि	15/02/2026 22:41
बुध	16/02/2026 10:39
केतु	16/02/2026 15:35
शुक्र	17/02/2026 05:40
सूर्य	17/02/2026 09:54
चंद्र	17/02/2026 16:56

शुक्र - बुध - मंगल - राहु	
17/02/2026 16:56	
26/02/2026 18:16	
राहु	19/02/2026 01:32
गुरु	20/02/2026 06:31
शनि	21/02/2026 16:55
बुध	22/02/2026 23:43
केतु	23/02/2026 12:23
शुक्र	25/02/2026 00:36
सूर्य	25/02/2026 11:28
चंद्र	26/02/2026 05:35
मंगल	26/02/2026 18:16

शुक्र - बुध - मंगल - गुरु	
26/02/2026 18:16	
06/03/2026 19:26	
गुरु	27/02/2026 20:01
शनि	01/03/2026 02:36
बुध	02/03/2026 05:58
केतु	02/03/2026 17:14
शुक्र	04/03/2026 01:26
सूर्य	04/03/2026 11:06
चंद्र	05/03/2026 03:12
मंगल	05/03/2026 14:28
राहु	06/03/2026 19:26

शुक्र - बुध - मंगल - शनि	
06/03/2026 19:26	
16/03/2026 08:50	
शनि	08/03/2026 07:46
बुध	09/03/2026 16:15
केतु	10/03/2026 05:38
शुक्र	11/03/2026 19:52
सूर्य	12/03/2026 07:21
चंद्र	13/03/2026 02:28
मंगल	13/03/2026 15:50
राहु	15/03/2026 02:15
गुरु	16/03/2026 08:50

शुक्र - बुध - मंगल - बुध	
16/03/2026 08:50	
24/03/2026 22:05	
बुध	17/03/2026 13:55
केतु	18/03/2026 01:53
शुक्र	19/03/2026 12:06
सूर्य	19/03/2026 22:21
चंद्र	20/03/2026 15:28
मंगल	21/03/2026 03:26
राहु	22/03/2026 10:13
गुरु	23/03/2026 13:35
शनि	24/03/2026 22:05

शुक्र - बुध - मंगल - केतु	
24/03/2026 22:05	
28/03/2026 10:36	
केतु	25/03/2026 03:01
शुक्र	25/03/2026 17:06
सूर्य	25/03/2026 21:20
चंद्र	26/03/2026 04:22
मंगल	26/03/2026 09:18
राहु	26/03/2026 21:59
गुरु	27/03/2026 09:15
शनि	27/03/2026 22:38
बुध	28/03/2026 10:36

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 6 वर्ष 11 मास 1 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
01/10/1972		03/09/1979		03/09/1991		02/09/2004		03/09/2018	
03/09/1979		03/09/1991		02/09/2004		03/09/2018		02/09/2033	
	00/00/0000	मंगल	29/11/1980	गुरु	16/02/1993	शनि	12/05/2006	केतु	11/08/2020
	00/00/0000	गुरु	05/04/1982	शनि	12/09/1994	केतु	04/03/2008	चंद्र	06/09/2022
	01/10/1972	शनि	16/09/1983	केतु	18/05/1996	चंद्र	07/02/2010	बुध	17/11/2024
शनि	31/05/1973	केतु	04/04/1985	चंद्र	04/03/1998	बुध	26/02/2012	शुक्र	17/03/2027
केतु	02/11/1974	चंद्र	30/11/1986	बुध	29/01/2000	शुक्र	30/04/2014	सूर्य	17/08/2028
चंद्र	09/05/1976	बुध	02/09/1988	शुक्र	04/02/2002	सूर्य	28/08/2015	मंगल	07/03/2030
बुध	19/12/1977	शुक्र	14/07/1990	सूर्य	30/04/2003	मंगल	07/02/2017	गुरु	11/11/2031
शुक्र	03/09/1979	सूर्य	03/09/1991	मंगल	02/09/2004	गुरु	03/09/2018	शनि	02/09/2033

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
02/09/2033		02/09/2049		03/09/2066		02/09/2084	
02/09/2049		03/09/2066		02/09/2084		00/00/0000	
चंद्र	18/11/2035	बुध	29/02/2052	शुक्र	19/06/2069	सूर्य	18/09/2085
बुध	23/03/2038	शुक्र	20/10/2054	सूर्य	04/03/2071	मंगल	08/11/2086
शुक्र	15/09/2040	सूर्य	31/05/2056	मंगल	12/01/2073	गुरु	01/02/2088
सूर्य	23/03/2042	मंगल	04/03/2058	गुरु	19/01/2075	शनि	01/10/2088
मंगल	18/11/2043	गुरु	29/01/2060	शनि	23/03/2077		00/00/0000
गुरु	02/09/2045	शनि	16/02/2062	केतु	21/07/2079		00/00/0000
शनि	09/08/2047	केतु	29/04/2064	चंद्र	13/01/2082		00/00/0000
केतु	02/09/2049	चंद्र	03/09/2066	बुध	02/09/2084		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
01/10/1972		31/05/1973		02/11/1974		09/05/1976		19/12/1977	
31/05/1973		02/11/1974		09/05/1976		19/12/1977		03/09/1979	
	00/00/0000	केतु	06/08/1973	चंद्र	17/01/1975	बुध	03/08/1976	शुक्र	25/03/1978
	00/00/0000	चंद्र	17/10/1973	बुध	08/04/1975	शुक्र	02/11/1976	सूर्य	23/05/1978
	01/10/1972	बुध	01/01/1974	शुक्र	03/07/1975	सूर्य	28/12/1976	मंगल	27/07/1978
बुध	17/10/1972	शुक्र	23/03/1974	सूर्य	25/08/1975	मंगल	27/02/1977	गुरु	05/10/1978
शुक्र	01/01/1973	सूर्य	11/05/1974	मंगल	21/10/1975	गुरु	04/05/1977	शनि	19/12/1978
सूर्य	16/02/1973	मंगल	04/07/1974	गुरु	22/12/1975	शनि	14/07/1977	केतु	10/03/1979
मंगल	07/04/1973	गुरु	31/08/1974	शनि	27/02/1976	केतु	28/09/1977	चंद्र	04/06/1979
गुरु	31/05/1973	शनि	02/11/1974	केतु	09/05/1976	चंद्र	19/12/1977	बुध	03/09/1979

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
03/09/1979		29/11/1980		05/04/1982		16/09/1983		04/04/1985	
29/11/1980		05/04/1982		16/09/1983		04/04/1985		30/11/1986	
मंगल	20/10/1979	गुरु	23/01/1981	शनि	07/06/1982	केतु	28/11/1983	चंद्र	27/06/1985
गुरु	10/12/1979	शनि	24/03/1981	केतु	15/08/1982	चंद्र	14/02/1984	बुध	23/09/1985
शनि	02/02/1980	केतु	26/05/1981	चंद्र	27/10/1982	बुध	07/05/1984	शुक्र	26/12/1985
केतु	01/04/1980	चंद्र	02/08/1981	बुध	12/01/1983	शुक्र	03/08/1984	सूर्य	21/02/1986
चंद्र	03/06/1980	बुध	13/10/1981	शुक्र	04/04/1983	सूर्य	26/09/1984	मंगल	25/04/1986
बुध	08/08/1980	शुक्र	28/12/1981	सूर्य	25/05/1983	मंगल	23/11/1984	गुरु	02/07/1986
शुक्र	17/10/1980	सूर्य	13/02/1982	मंगल	18/07/1983	गुरु	26/01/1985	शनि	13/09/1986
सूर्य	29/11/1980	मंगल	05/04/1982	गुरु	16/09/1983	शनि	04/04/1985	केतु	30/11/1986

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
30/11/1986		02/09/1988		14/07/1990		03/09/1991		16/02/1993	
02/09/1988		14/07/1990		03/09/1991		16/02/1993		12/09/1994	
बुध	04/03/1987	शुक्र	17/12/1988	सूर्य	23/08/1990	गुरु	02/11/1991	शनि	26/04/1993
शुक्र	12/06/1987	सूर्य	19/02/1989	मंगल	05/10/1990	शनि	05/01/1992	केतु	09/07/1993
सूर्य	12/08/1987	मंगल	01/05/1989	गुरु	20/11/1990	केतु	14/03/1992	चंद्र	26/09/1993
मंगल	17/10/1987	गुरु	16/07/1989	शनि	10/01/1991	चंद्र	26/05/1992	बुध	19/12/1993
गुरु	28/12/1987	शनि	06/10/1989	केतु	04/03/1991	बुध	12/08/1992	शुक्र	18/03/1994
शनि	15/03/1988	केतु	02/01/1990	चंद्र	01/05/1991	शुक्र	03/11/1992	सूर्य	12/05/1994
केतु	06/06/1988	चंद्र	06/04/1990	बुध	30/06/1991	सूर्य	23/12/1992	मंगल	10/07/1994
चंद्र	02/09/1988	बुध	14/07/1990	शुक्र	03/09/1991	मंगल	16/02/1993	गुरु	12/09/1994

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
12/09/1994		18/05/1996		04/03/1998		29/01/2000		04/02/2002	
18/05/1996		04/03/1998		29/01/2000		04/02/2002		30/04/2003	
केतु	01/12/1994	चंद्र	17/08/1996	बुध	14/06/1998	शुक्र	22/05/2000	सूर्य	18/03/2002
चंद्र	23/02/1995	बुध	20/11/1996	शुक्र	30/09/1998	सूर्य	31/07/2000	मंगल	04/05/2002
बुध	24/05/1995	शुक्र	02/03/1997	सूर्य	05/12/1998	मंगल	15/10/2000	गुरु	24/06/2002
शुक्र	28/08/1995	सूर्य	03/05/1997	मंगल	15/02/1999	गुरु	06/01/2001	शनि	17/08/2002
सूर्य	25/10/1995	मंगल	10/07/1997	गुरु	04/05/1999	शनि	05/04/2001	केतु	14/10/2002
मंगल	27/12/1995	गुरु	21/09/1997	शनि	27/07/1999	केतु	09/07/2001	चंद्र	15/12/2002
गुरु	05/03/1996	शनि	09/12/1997	केतु	25/10/1999	चंद्र	19/10/2001	बुध	19/02/2003
शनि	18/05/1996	केतु	04/03/1998	चंद्र	29/01/2000	बुध	04/02/2002	शुक्र	30/04/2003

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
30/04/2003		02/09/2004		12/05/2006		04/03/2008		07/02/2010	
02/09/2004		12/05/2006		04/03/2008		07/02/2010		26/02/2012	
मंगल	20/06/2003	शनि	16/11/2004	केतु	06/08/2006	चंद्र	09/06/2008	बुध	28/05/2010
गुरु	14/08/2003	केतु	04/02/2005	चंद्र	05/11/2006	बुध	20/09/2008	शुक्र	21/09/2010
शनि	12/10/2003	चंद्र	30/04/2005	बुध	10/02/2007	शुक्र	08/01/2009	सूर्य	01/12/2010
केतु	15/12/2003	बुध	29/07/2005	शुक्र	24/05/2007	सूर्य	16/03/2009	मंगल	17/02/2011
चंद्र	20/02/2004	शुक्र	02/11/2005	सूर्य	25/07/2007	मंगल	28/05/2009	गुरु	12/05/2011
बुध	02/05/2004	सूर्य	30/12/2005	मंगल	02/10/2007	गुरु	15/08/2009	शनि	10/08/2011
शुक्र	18/07/2004	मंगल	04/03/2006	गुरु	15/12/2007	शनि	08/11/2009	केतु	15/11/2011
सूर्य	02/09/2004	गुरु	12/05/2006	शनि	04/03/2008	केतु	07/02/2010	चंद्र	26/02/2012

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु	
26/02/2012		30/04/2014		28/08/2015		07/02/2017		03/09/2018	
30/04/2014		28/08/2015		07/02/2017		03/09/2018		11/08/2020	
शुक्र	28/06/2012	सूर्य	15/06/2014	मंगल	21/10/2015	गुरु	12/04/2017	केतु	03/12/2018
सूर्य	12/09/2012	मंगल	04/08/2014	गुरु	20/12/2015	शनि	20/06/2017	चंद्र	11/03/2019
मंगल	03/12/2012	गुरु	27/09/2014	शनि	22/02/2016	केतु	02/09/2017	बुध	23/06/2019
गुरु	02/03/2013	शनि	25/11/2014	केतु	30/04/2016	चंद्र	20/11/2017	शुक्र	11/10/2019
शनि	05/06/2013	केतु	26/01/2015	चंद्र	12/07/2016	बुध	12/02/2018	सूर्य	17/12/2019
केतु	16/09/2013	चंद्र	03/04/2015	बुध	27/09/2016	शुक्र	12/05/2018	मंगल	28/02/2020
चंद्र	04/01/2014	बुध	13/06/2015	शुक्र	19/12/2016	सूर्य	05/07/2018	गुरु	18/05/2020
बुध	30/04/2014	शुक्र	28/08/2015	सूर्य	07/02/2017	मंगल	03/09/2018	शनि	11/08/2020

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल	
11/08/2020		06/09/2022		17/11/2024		17/03/2027		17/08/2028	
06/09/2022		17/11/2024		17/03/2027		17/08/2028		07/03/2030	
चंद्र	23/11/2020	बुध	02/01/2023	शुक्र	29/03/2025	सूर्य	05/05/2027	मंगल	15/10/2028
बुध	14/03/2021	शुक्र	06/05/2023	सूर्य	17/06/2025	मंगल	28/06/2027	गुरु	18/12/2028
शुक्र	09/07/2021	सूर्य	21/07/2023	मंगल	13/09/2025	गुरु	25/08/2027	शनि	24/02/2029
सूर्य	19/09/2021	मंगल	12/10/2023	गुरु	18/12/2025	शनि	27/10/2027	केतु	08/05/2029
मंगल	06/12/2021	गुरु	10/01/2024	शनि	30/03/2026	केतु	02/01/2028	चंद्र	26/07/2029
गुरु	01/03/2022	शनि	16/04/2024	केतु	18/07/2026	चंद्र	14/03/2028	बुध	17/10/2029
शनि	31/05/2022	केतु	29/07/2024	चंद्र	12/11/2026	बुध	29/05/2028	शुक्र	13/01/2030
केतु	06/09/2022	चंद्र	17/11/2024	बुध	17/03/2027	शुक्र	17/08/2028	सूर्य	07/03/2030

केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र	
07/03/2030		11/11/2031		02/09/2033		18/11/2035		23/03/2038	
11/11/2031		02/09/2033		18/11/2035		23/03/2038		15/09/2040	
गुरु	15/05/2030	शनि	30/01/2032	चंद्र	23/12/2033	बुध	22/03/2036	शुक्र	11/08/2038
शनि	28/07/2030	केतु	25/04/2032	बुध	20/04/2034	शुक्र	02/08/2036	सूर्य	05/11/2038
केतु	16/10/2030	चंद्र	25/07/2032	शुक्र	23/08/2034	सूर्य	22/10/2036	मंगल	07/02/2039
चंद्र	08/01/2031	बुध	30/10/2032	सूर्य	07/11/2034	मंगल	19/01/2037	गुरु	19/05/2039
बुध	08/04/2031	शुक्र	09/02/2033	मंगल	30/01/2035	गुरु	25/04/2037	शनि	06/09/2039
शुक्र	13/07/2031	सूर्य	13/04/2033	गुरु	30/04/2035	शनि	06/08/2037	केतु	01/01/2040
सूर्य	09/09/2031	मंगल	20/06/2033	शनि	05/08/2035	केतु	25/11/2037	चंद्र	05/05/2040
मंगल	11/11/2031	गुरु	02/09/2033	केतु	18/11/2035	चंद्र	23/03/2038	बुध	15/09/2040

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
15/09/2040		23/03/2042		18/11/2043		02/09/2045		09/08/2047	
23/03/2042		18/11/2043		02/09/2045		09/08/2047		02/09/2049	
सूर्य	06/11/2040	मंगल	25/05/2042	गुरु	30/01/2044	शनि	27/11/2045	केतु	15/11/2047
मंगल	03/01/2041	गुरु	31/07/2042	शनि	18/04/2044	केतु	26/02/2046	चंद्र	27/02/2048
गुरु	06/03/2041	शनि	12/10/2042	केतु	12/07/2044	चंद्र	03/06/2046	बुध	16/06/2048
शनि	12/05/2041	केतु	29/12/2042	चंद्र	10/10/2044	बुध	14/09/2046	शुक्र	12/10/2048
केतु	22/07/2041	चंद्र	23/03/2043	बुध	14/01/2045	शुक्र	02/01/2047	सूर्य	22/12/2048
चंद्र	07/10/2041	बुध	19/06/2043	शुक्र	26/04/2045	सूर्य	10/03/2047	मंगल	11/03/2049
बुध	27/12/2041	शुक्र	21/09/2043	सूर्य	27/06/2045	मंगल	22/05/2047	गुरु	03/06/2049
शुक्र	23/03/2042	सूर्य	18/11/2043	मंगल	02/09/2045	गुरु	09/08/2047	शनि	02/09/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
02/09/2049		29/02/2052		20/10/2054		31/05/2056		04/03/2058	
29/02/2052		20/10/2054		31/05/2056		04/03/2058		29/01/2060	
बुध	14/01/2050	शुक्र	28/07/2052	सूर्य	15/12/2054	मंगल	05/08/2056	गुरु	21/05/2058
शुक्र	04/06/2050	सूर्य	27/10/2052	मंगल	14/02/2055	गुरु	16/10/2056	शनि	13/08/2058
सूर्य	29/08/2050	मंगल	04/02/2053	गुरु	21/04/2055	शनि	02/01/2057	केतु	11/11/2058
मंगल	01/12/2050	गुरु	23/05/2053	शनि	01/07/2055	केतु	26/03/2057	चंद्र	15/02/2059
गुरु	13/03/2051	शनि	16/09/2053	केतु	15/09/2055	चंद्र	22/06/2057	बुध	28/05/2059
शनि	01/07/2051	केतु	19/01/2054	चंद्र	05/12/2055	बुध	25/09/2057	शुक्र	13/09/2059
केतु	27/10/2051	चंद्र	01/06/2054	बुध	29/02/2056	शुक्र	02/01/2058	सूर्य	18/11/2059
चंद्र	29/02/2052	बुध	20/10/2054	शुक्र	31/05/2056	सूर्य	04/03/2058	मंगल	29/01/2060

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
29/01/2060		16/02/2062		29/04/2064		03/09/2066		19/06/2069	
16/02/2062		29/04/2064		03/09/2066		19/06/2069		04/03/2071	
शनि	28/04/2060	केतु	31/05/2062	चंद्र	25/08/2064	शुक्र	08/02/2067	सूर्य	17/08/2069
केतु	03/08/2060	चंद्र	19/09/2062	बुध	29/12/2064	सूर्य	16/05/2067	मंगल	21/10/2069
चंद्र	15/11/2060	बुध	15/01/2063	शुक्र	11/05/2065	मंगल	29/08/2067	गुरु	29/12/2069
बुध	05/03/2061	शुक्र	19/05/2063	सूर्य	31/07/2065	गुरु	22/12/2067	शनि	15/03/2070
शुक्र	29/06/2061	सूर्य	03/08/2063	मंगल	28/10/2065	शनि	23/04/2068	केतु	03/06/2070
सूर्य	08/09/2061	मंगल	25/10/2063	गुरु	01/02/2066	केतु	02/09/2068	चंद्र	28/08/2070
मंगल	24/11/2061	गुरु	23/01/2064	शनि	15/05/2066	चंद्र	20/01/2069	बुध	28/11/2070
गुरु	16/02/2062	शनि	29/04/2064	केतु	03/09/2066	बुध	19/06/2069	शुक्र	04/03/2071

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
04/03/2071		12/01/2073		19/01/2075		23/03/2077		21/07/2079	
12/01/2073		19/01/2075		23/03/2077		21/07/2079		13/01/2082	
मंगल	14/05/2071	गुरु	05/04/2073	शनि	25/04/2075	केतु	11/07/2077	चंद्र	23/11/2079
गुरु	29/07/2071	शनि	03/07/2073	केतु	06/08/2075	चंद्र	05/11/2077	बुध	04/04/2080
शनि	19/10/2071	केतु	06/10/2073	चंद्र	23/11/2075	बुध	10/03/2078	शुक्र	23/08/2080
केतु	15/01/2072	चंद्र	16/01/2074	बुध	18/03/2076	शुक्र	19/07/2078	सूर्य	17/11/2080
चंद्र	18/04/2072	बुध	04/05/2074	शुक्र	20/07/2076	सूर्य	08/10/2078	मंगल	18/02/2081
बुध	26/07/2072	शुक्र	26/08/2074	सूर्य	03/10/2076	मंगल	04/01/2079	गुरु	31/05/2081
शुक्र	09/11/2072	सूर्य	04/11/2074	मंगल	24/12/2076	गुरु	09/04/2079	शनि	17/09/2081
सूर्य	12/01/2073	मंगल	19/01/2075	गुरु	23/03/2077	शनि	21/07/2079	केतु	13/01/2082

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 7 वर्ष 11 मास 19 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
01/10/1972		20/09/1980		20/01/1992		20/09/1996		20/01/2010	
20/09/1980		20/01/1992		20/09/1996		20/01/2010		20/01/2014	
	00/00/0000	बुध	29/04/1982	केतु	29/04/1992	शुक्र	11/12/1998	सूर्य	03/04/2010
	00/00/0000	केतु	27/12/1982	शुक्र	07/02/1993	सूर्य	11/08/1999	चंद्र	03/08/2010
	01/10/1972	शुक्र	16/11/1984	सूर्य	03/05/1993	चंद्र	20/09/2000	मंगल	27/10/2010
शुक्र	14/09/1974	सूर्य	11/06/1985	चंद्र	22/09/1993	मंगल	01/07/2001	राहु	03/06/2011
सूर्य	04/05/1975	चंद्र	22/05/1986	मंगल	31/12/1993	राहु	02/07/2003	गुरु	15/12/2011
चंद्र	23/05/1976	मंगल	18/01/1987	राहु	12/09/1994	गुरु	11/04/2005	शनि	02/08/2012
मंगल	17/02/1977	राहु	30/09/1988	गुरु	28/04/1995	शनि	22/05/2007	बुध	25/02/2013
राहु	12/01/1979	गुरु	05/04/1990	शनि	22/01/1996	बुध	11/04/2009	केतु	21/05/2013
गुरु	20/09/1980	शनि	20/01/1992	बुध	20/09/1996	केतु	20/01/2010	शुक्र	20/01/2014

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
20/01/2014		20/09/2020		21/05/2025		21/05/2037		20/01/2048	
20/09/2020		21/05/2025		21/05/2037		20/01/2048		00/00/0000	
चंद्र	11/08/2014	मंगल	28/12/2020	राहु	10/03/2027	गुरु	23/10/2038	शनि	22/01/2050
मंगल	31/12/2014	राहु	10/09/2021	गुरु	14/10/2028	शनि	01/07/2040	बुध	08/11/2051
राहु	31/12/2015	गुरु	25/04/2022	शनि	08/09/2030	बुध	04/01/2042	केतु	04/08/2052
गुरु	20/11/2016	शनि	20/01/2023	बुध	21/05/2032	केतु	19/08/2042	शुक्र	01/10/2052
शनि	10/12/2017	बुध	19/09/2023	केतु	01/02/2033	शुक्र	29/05/2044		00/00/0000
बुध	20/11/2018	केतु	27/12/2023	शुक्र	01/02/2035	सूर्य	10/12/2044		00/00/0000
केतु	11/04/2019	शुक्र	06/10/2024	सूर्य	09/09/2035	चंद्र	31/10/2045		00/00/0000
शुक्र	21/05/2020	सूर्य	30/12/2024	चंद्र	08/09/2036	मंगल	15/06/2046		00/00/0000
सूर्य	20/09/2020	चंद्र	21/05/2025	मंगल	21/05/2037	राहु	20/01/2048		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
01/10/1972		14/09/1974		04/05/1975		23/05/1976		17/02/1977	
14/09/1974		04/05/1975		23/05/1976		17/02/1977		12/01/1979	
शुक्र	11/12/1972	सूर्य	26/09/1974	चंद्र	05/06/1975	मंगल	08/06/1976	राहु	01/06/1977
सूर्य	18/01/1973	चंद्र	15/10/1974	मंगल	27/06/1975	राहु	18/07/1976	गुरु	02/09/1977
चंद्र	24/03/1973	मंगल	29/10/1974	राहु	24/08/1975	गुरु	23/08/1976	शनि	21/12/1977
मंगल	08/05/1973	राहु	02/12/1974	गुरु	15/10/1975	शनि	05/10/1976	बुध	29/03/1978
राहु	31/08/1973	गुरु	02/01/1975	शनि	15/12/1975	बुध	12/11/1976	केतु	08/05/1978
गुरु	12/12/1973	शनि	08/02/1975	बुध	07/02/1976	केतु	28/11/1976	शुक्र	01/09/1978
शनि	13/04/1974	बुध	13/03/1975	केतु	01/03/1976	शुक्र	12/01/1977	सूर्य	06/10/1978
बुध	31/07/1974	केतु	26/03/1975	शुक्र	04/05/1976	सूर्य	26/01/1977	चंद्र	03/12/1978
केतु	14/09/1974	शुक्र	04/05/1975	सूर्य	23/05/1976	चंद्र	17/02/1977	मंगल	12/01/1979

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
12/01/1979		20/09/1980		29/04/1982		27/12/1982		16/11/1984	
20/09/1980		29/04/1982		27/12/1982		16/11/1984		11/06/1985	
गुरु	04/04/1979	बुध	12/12/1980	केतु	13/05/1982	शुक्र	21/04/1983	सूर्य	26/11/1984
शनि	11/07/1979	केतु	15/01/1981	शुक्र	23/06/1982	सूर्य	25/05/1983	चंद्र	13/12/1984
बुध	06/10/1979	शुक्र	23/04/1981	सूर्य	05/07/1982	चंद्र	22/07/1983	मंगल	25/12/1984
केतु	11/11/1979	सूर्य	22/05/1981	चंद्र	25/07/1982	मंगल	31/08/1983	राहु	25/01/1985
शुक्र	22/02/1980	चंद्र	10/07/1981	मंगल	08/08/1982	राहु	13/12/1983	गुरु	22/02/1985
सूर्य	24/03/1980	मंगल	13/08/1981	राहु	13/09/1982	गुरु	14/03/1984	शनि	27/03/1985
चंद्र	14/05/1980	राहु	09/11/1981	गुरु	15/10/1982	शनि	01/07/1984	बुध	25/04/1985
मंगल	19/06/1980	गुरु	27/01/1982	शनि	23/11/1982	बुध	07/10/1984	केतु	07/05/1985
राहु	20/09/1980	शनि	29/04/1982	बुध	27/12/1982	केतु	16/11/1984	शुक्र	11/06/1985

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
11/06/1985		22/05/1986		18/01/1987		30/09/1988		05/04/1990	
22/05/1986		18/01/1987		30/09/1988		05/04/1990		20/01/1992	
चंद्र	09/07/1985	मंगल	05/06/1986	राहु	21/04/1987	गुरु	13/12/1988	शनि	18/07/1990
मंगल	30/07/1985	राहु	11/07/1986	गुरु	13/07/1987	शनि	10/03/1989	बुध	19/10/1990
राहु	19/09/1985	गुरु	12/08/1986	शनि	19/10/1987	बुध	27/05/1989	केतु	26/11/1990
गुरु	04/11/1985	शनि	19/09/1986	बुध	15/01/1988	केतु	28/06/1989	शुक्र	15/03/1991
शनि	29/12/1985	बुध	24/10/1986	केतु	21/02/1988	शुक्र	28/09/1989	सूर्य	17/04/1991
बुध	16/02/1986	केतु	07/11/1986	शुक्र	03/06/1988	सूर्य	26/10/1989	चंद्र	11/06/1991
केतु	08/03/1986	शुक्र	17/12/1986	सूर्य	04/07/1988	चंद्र	11/12/1989	मंगल	19/07/1991
शुक्र	04/05/1986	सूर्य	29/12/1986	चंद्र	25/08/1988	मंगल	12/01/1990	राहु	25/10/1991
सूर्य	22/05/1986	चंद्र	18/01/1987	मंगल	30/09/1988	राहु	05/04/1990	गुरु	20/01/1992

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
20/01/1992		29/04/1992		07/02/1993		03/05/1993		22/09/1993	
29/04/1992		07/02/1993		03/05/1993		22/09/1993		31/12/1993	
केतु	26/01/1992	शुक्र	15/06/1992	सूर्य	11/02/1993	चंद्र	15/05/1993	मंगल	28/09/1993
शुक्र	12/02/1992	सूर्य	29/06/1992	चंद्र	18/02/1993	मंगल	23/05/1993	राहु	13/10/1993
सूर्य	17/02/1992	चंद्र	23/07/1992	मंगल	23/02/1993	राहु	14/06/1993	गुरु	26/10/1993
चंद्र	25/02/1992	मंगल	09/08/1992	राहु	08/03/1993	गुरु	03/07/1993	शनि	11/11/1993
मंगल	02/03/1992	राहु	20/09/1992	गुरु	19/03/1993	शनि	25/07/1993	बुध	25/11/1993
राहु	17/03/1992	गुरु	28/10/1992	शनि	02/04/1993	बुध	14/08/1993	केतु	01/12/1993
गुरु	30/03/1992	शनि	12/12/1992	बुध	14/04/1993	केतु	22/08/1993	शुक्र	17/12/1993
शनि	15/04/1992	बुध	21/01/1993	केतु	19/04/1993	शुक्र	15/09/1993	सूर्य	22/12/1993
बुध	29/04/1992	केतु	07/02/1993	शुक्र	03/05/1993	सूर्य	22/09/1993	चंद्र	31/12/1993

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
31/12/1993		12/09/1994		28/04/1995		22/01/1996		20/09/1996	
12/09/1994		28/04/1995		22/01/1996		20/09/1996		11/12/1998	
राहु	07/02/1994	गुरु	13/10/1994	शनि	09/06/1995	बुध	26/02/1996	शुक्र	02/02/1997
गुरु	13/03/1994	शनि	18/11/1994	बुध	18/07/1995	केतु	11/03/1996	सूर्य	15/03/1997
शनि	23/04/1994	बुध	20/12/1994	केतु	02/08/1995	शुक्र	20/04/1996	चंद्र	21/05/1997
बुध	29/05/1994	केतु	02/01/1995	शुक्र	16/09/1995	सूर्य	02/05/1996	मंगल	08/07/1997
केतु	13/06/1994	शुक्र	09/02/1995	सूर्य	30/09/1995	चंद्र	22/05/1996	राहु	07/11/1997
शुक्र	25/07/1994	सूर्य	20/02/1995	चंद्र	22/10/1995	मंगल	05/06/1996	गुरु	23/02/1998
सूर्य	07/08/1994	चंद्र	11/03/1995	मंगल	07/11/1995	राहु	12/07/1996	शनि	01/07/1998
चंद्र	28/08/1994	मंगल	25/03/1995	राहु	18/12/1995	गुरु	13/08/1996	बुध	24/10/1998
मंगल	12/09/1994	राहु	28/04/1995	गुरु	22/01/1996	शनि	20/09/1996	केतु	11/12/1998

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
11/12/1998		11/08/1999		20/09/2000		01/07/2001		02/07/2003	
11/08/1999		20/09/2000		01/07/2001		02/07/2003		11/04/2005	
सूर्य	23/12/1998	चंद्र	14/09/1999	मंगल	07/10/2000	राहु	19/10/2001	गुरु	26/09/2003
चंद्र	12/01/1999	मंगल	08/10/1999	राहु	18/11/2000	गुरु	24/01/2002	शनि	07/01/2004
मंगल	26/01/1999	राहु	07/12/1999	गुरु	26/12/2000	शनि	20/05/2002	बुध	08/04/2004
राहु	04/03/1999	गुरु	31/01/2000	शनि	09/02/2001	बुध	31/08/2002	केतु	16/05/2004
गुरु	05/04/1999	शनि	04/04/2000	बुध	21/03/2001	केतु	13/10/2002	शुक्र	01/09/2004
शनि	14/05/1999	बुध	31/05/2000	केतु	07/04/2001	शुक्र	12/02/2003	सूर्य	03/10/2004
बुध	17/06/1999	केतु	24/06/2000	शुक्र	24/05/2001	सूर्य	20/03/2003	चंद्र	27/11/2004
केतु	02/07/1999	शुक्र	31/08/2000	सूर्य	07/06/2001	चंद्र	20/05/2003	मंगल	03/01/2005
शुक्र	11/08/1999	सूर्य	20/09/2000	चंद्र	01/07/2001	मंगल	02/07/2003	राहु	11/04/2005

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
11/04/2005		22/05/2007		11/04/2009		20/01/2010		03/04/2010	
22/05/2007		11/04/2009		20/01/2010		03/04/2010		03/08/2010	
शनि	11/08/2005	बुध	28/08/2007	केतु	27/04/2009	सूर्य	24/01/2010	चंद्र	13/04/2010
बुध	28/11/2005	केतु	07/10/2007	शुक्र	14/06/2009	चंद्र	30/01/2010	मंगल	20/04/2010
केतु	12/01/2006	शुक्र	30/01/2008	सूर्य	28/06/2009	मंगल	03/02/2010	राहु	09/05/2010
शुक्र	21/05/2006	सूर्य	04/03/2008	चंद्र	22/07/2009	राहु	14/02/2010	गुरु	25/05/2010
सूर्य	28/06/2006	चंद्र	01/05/2008	मंगल	07/08/2009	गुरु	24/02/2010	शनि	13/06/2010
चंद्र	01/09/2006	मंगल	10/06/2008	राहु	19/09/2009	शनि	07/03/2010	बुध	30/06/2010
मंगल	15/10/2006	राहु	22/09/2008	गुरु	27/10/2009	बुध	18/03/2010	केतु	07/07/2010
राहु	08/02/2007	गुरु	23/12/2008	शनि	11/12/2009	केतु	22/03/2010	शुक्र	28/07/2010
गुरु	22/05/2007	शनि	11/04/2009	बुध	20/01/2010	शुक्र	03/04/2010	सूर्य	03/08/2010

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
03/08/2010		27/10/2010		03/06/2011		15/12/2011		02/08/2012	
27/10/2010		03/06/2011		15/12/2011		02/08/2012		25/02/2013	
मंगल	08/08/2010	राहु	29/11/2010	गुरु	29/06/2011	शनि	21/01/2012	बुध	01/09/2012
राहु	21/08/2010	गुरु	28/12/2010	शनि	30/07/2011	बुध	22/02/2012	केतु	13/09/2012
गुरु	01/09/2010	शनि	01/02/2011	बुध	27/08/2011	केतु	07/03/2012	शुक्र	17/10/2012
शनि	14/09/2010	बुध	04/03/2011	केतु	07/09/2011	शुक्र	14/04/2012	सूर्य	27/10/2012
बुध	26/09/2010	केतु	17/03/2011	शुक्र	09/10/2011	सूर्य	26/04/2012	चंद्र	14/11/2012
केतु	01/10/2010	शुक्र	22/04/2011	सूर्य	19/10/2011	चंद्र	15/05/2012	मंगल	26/11/2012
शुक्र	16/10/2010	सूर्य	03/05/2011	चंद्र	04/11/2011	मंगल	29/05/2012	राहु	27/12/2012
सूर्य	20/10/2010	चंद्र	21/05/2011	मंगल	16/11/2011	राहु	02/07/2012	गुरु	23/01/2013
चंद्र	27/10/2010	मंगल	03/06/2011	राहु	15/12/2011	गुरु	02/08/2012	शनि	25/02/2013

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
25/02/2013		21/05/2013		20/01/2014		11/08/2014		31/12/2014	
21/05/2013		20/01/2014		11/08/2014		31/12/2014		31/12/2015	
केतु	02/03/2013	शुक्र	01/07/2013	चंद्र	06/02/2014	मंगल	19/08/2014	राहु	24/02/2015
शुक्र	16/03/2013	सूर्य	13/07/2013	मंगल	18/02/2014	राहु	09/09/2014	गुरु	13/04/2015
सूर्य	21/03/2013	चंद्र	03/08/2013	राहु	20/03/2014	गुरु	28/09/2014	शनि	10/06/2015
चंद्र	28/03/2013	मंगल	17/08/2013	गुरु	16/04/2014	शनि	21/10/2014	बुध	01/08/2015
मंगल	02/04/2013	राहु	22/09/2013	शनि	18/05/2014	बुध	10/11/2014	केतु	22/08/2015
राहु	15/04/2013	गुरु	25/10/2013	बुध	16/06/2014	केतु	18/11/2014	शुक्र	22/10/2015
गुरु	26/04/2013	शनि	02/12/2013	केतु	28/06/2014	शुक्र	12/12/2014	सूर्य	09/11/2015
शनि	09/05/2013	बुध	06/01/2014	शुक्र	01/08/2014	सूर्य	19/12/2014	चंद्र	10/12/2015
बुध	21/05/2013	केतु	20/01/2014	सूर्य	11/08/2014	चंद्र	31/12/2014	मंगल	31/12/2015

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
31/12/2015		20/11/2016		10/12/2017		20/11/2018		11/04/2019	
20/11/2016		10/12/2017		20/11/2018		11/04/2019		21/05/2020	
गुरु	12/02/2016	शनि	20/01/2017	बुध	28/01/2018	केतु	29/11/2018	शुक्र	18/06/2019
शनि	04/04/2016	बुध	15/03/2017	केतु	17/02/2018	शुक्र	22/12/2018	सूर्य	08/07/2019
बुध	20/05/2016	केतु	07/04/2017	शुक्र	16/04/2018	सूर्य	29/12/2018	चंद्र	11/08/2019
केतु	08/06/2016	शुक्र	10/06/2017	सूर्य	03/05/2018	चंद्र	10/01/2019	मंगल	04/09/2019
शुक्र	01/08/2016	सूर्य	30/06/2017	चंद्र	01/06/2018	मंगल	19/01/2019	राहु	04/11/2019
सूर्य	17/08/2016	चंद्र	01/08/2017	मंगल	21/06/2018	राहु	09/02/2019	गुरु	28/12/2019
चंद्र	13/09/2016	मंगल	23/08/2017	राहु	12/08/2018	गुरु	28/02/2019	शनि	01/03/2020
मंगल	02/10/2016	राहु	20/10/2017	गुरु	27/09/2018	शनि	22/03/2019	बुध	28/04/2020
राहु	20/11/2016	गुरु	10/12/2017	शनि	20/11/2018	बुध	11/04/2019	केतु	21/05/2020

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
21/05/2020		20/09/2020		28/12/2020		10/09/2021		25/04/2022	
20/09/2020		28/12/2020		10/09/2021		25/04/2022		20/01/2023	
सूर्य	27/05/2020	मंगल	26/09/2020	राहु	05/02/2021	गुरु	10/10/2021	शनि	07/06/2022
चंद्र	06/06/2020	राहु	11/10/2020	गुरु	11/03/2021	शनि	15/11/2021	बुध	15/07/2022
मंगल	14/06/2020	गुरु	24/10/2020	शनि	20/04/2021	बुध	18/12/2021	केतु	31/07/2022
राहु	02/07/2020	शनि	09/11/2020	बुध	27/05/2021	केतु	31/12/2021	शुक्र	14/09/2022
गुरु	18/07/2020	बुध	23/11/2020	केतु	10/06/2021	शुक्र	07/02/2022	सूर्य	28/09/2022
शनि	06/08/2020	केतु	29/11/2020	शुक्र	23/07/2021	सूर्य	18/02/2022	चंद्र	20/10/2022
बुध	24/08/2020	शुक्र	15/12/2020	सूर्य	05/08/2021	चंद्र	09/03/2022	मंगल	05/11/2022
केतु	31/08/2020	सूर्य	20/12/2020	चंद्र	26/08/2021	मंगल	22/03/2022	राहु	15/12/2022
शुक्र	20/09/2020	चंद्र	28/12/2020	मंगल	10/09/2021	राहु	25/04/2022	गुरु	20/01/2023

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
20/01/2023		19/09/2023		27/12/2023		06/10/2024		30/12/2024	
19/09/2023		27/12/2023		06/10/2024		30/12/2024		21/05/2025	
बुध	23/02/2023	केतु	24/09/2023	शुक्र	12/02/2024	सूर्य	10/10/2024	चंद्र	11/01/2025
केतु	10/03/2023	शुक्र	11/10/2023	सूर्य	27/02/2024	चंद्र	18/10/2024	मंगल	20/01/2025
शुक्र	19/04/2023	सूर्य	16/10/2023	चंद्र	21/03/2024	मंगल	23/10/2024	राहु	10/02/2025
सूर्य	01/05/2023	चंद्र	24/10/2023	मंगल	07/04/2024	राहु	04/11/2024	गुरु	01/03/2025
चंद्र	21/05/2023	मंगल	30/10/2023	राहु	20/05/2024	गुरु	16/11/2024	शनि	23/03/2025
मंगल	04/06/2023	राहु	14/11/2023	गुरु	26/06/2024	शनि	29/11/2024	बुध	12/04/2025
राहु	10/07/2023	गुरु	27/11/2023	शनि	10/08/2024	बुध	11/12/2024	केतु	21/04/2025
गुरु	11/08/2023	शनि	13/12/2023	बुध	20/09/2024	केतु	16/12/2024	शुक्र	14/05/2025
शनि	19/09/2023	बुध	27/12/2023	केतु	06/10/2024	शुक्र	30/12/2024	सूर्य	21/05/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
21/05/2025		10/03/2027		14/10/2028		08/09/2030		21/05/2032	
10/03/2027		14/10/2028		08/09/2030		21/05/2032		01/02/2033	
राहु	28/08/2025	गुरु	27/05/2027	शनि	01/02/2029	बुध	05/12/2030	केतु	05/06/2032
गुरु	24/11/2025	शनि	27/08/2027	बुध	10/05/2029	केतु	10/01/2031	शुक्र	18/07/2032
शनि	08/03/2026	बुध	18/11/2027	केतु	20/06/2029	शुक्र	24/04/2031	सूर्य	31/07/2032
बुध	09/06/2026	केतु	22/12/2027	शुक्र	14/10/2029	सूर्य	25/05/2031	चंद्र	21/08/2032
केतु	17/07/2026	शुक्र	29/03/2028	सूर्य	17/11/2029	चंद्र	16/07/2031	मंगल	05/09/2032
शुक्र	04/11/2026	सूर्य	27/04/2028	चंद्र	14/01/2030	मंगल	21/08/2031	राहु	13/10/2032
सूर्य	07/12/2026	चंद्र	15/06/2028	मंगल	24/02/2030	राहु	22/11/2031	गुरु	16/11/2032
चंद्र	31/01/2027	मंगल	19/07/2028	राहु	08/06/2030	गुरु	13/02/2032	शनि	27/12/2032
मंगल	10/03/2027	राहु	14/10/2028	गुरु	08/09/2030	शनि	21/05/2032	बुध	01/02/2033

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
01/02/2033		01/02/2035		09/09/2035		08/09/2036		21/05/2037	
01/02/2035		09/09/2035		08/09/2036		21/05/2037		23/10/2038	
शुक्र	03/06/2033	सूर्य	12/02/2035	चंद्र	09/10/2035	मंगल	23/09/2036	गुरु	30/07/2037
सूर्य	09/07/2033	चंद्र	03/03/2035	मंगल	30/10/2035	राहु	31/10/2036	शनि	20/10/2037
चंद्र	08/09/2033	मंगल	15/03/2035	राहु	24/12/2035	गुरु	04/12/2036	बुध	02/01/2038
मंगल	21/10/2033	राहु	17/04/2035	गुरु	11/02/2036	शनि	14/01/2037	केतु	01/02/2038
राहु	07/02/2034	गुरु	16/05/2035	शनि	09/04/2036	बुध	19/02/2037	शुक्र	28/04/2038
गुरु	16/05/2034	शनि	20/06/2035	बुध	30/05/2036	केतु	06/03/2037	सूर्य	24/05/2038
शनि	08/09/2034	बुध	21/07/2035	केतु	21/06/2036	शुक्र	17/04/2037	चंद्र	07/07/2038
बुध	21/12/2034	केतु	03/08/2035	शुक्र	21/08/2036	सूर्य	30/04/2037	मंगल	06/08/2038
केतु	01/02/2035	शुक्र	09/09/2035	सूर्य	08/09/2036	चंद्र	21/05/2037	राहु	23/10/2038

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
23/10/2038		01/07/2040		04/01/2042		19/08/2042		29/05/2044	
01/07/2040		04/01/2042		19/08/2042		29/05/2044		10/12/2044	
शनि	29/01/2039	बुध	17/09/2040	केतु	17/01/2042	शुक्र	05/12/2042	सूर्य	08/06/2044
बुध	26/04/2039	केतु	19/10/2040	शुक्र	24/02/2042	सूर्य	07/01/2043	चंद्र	24/06/2044
केतु	01/06/2039	शुक्र	19/01/2041	सूर्य	07/03/2042	चंद्र	02/03/2043	मंगल	06/07/2044
शुक्र	12/09/2039	सूर्य	16/02/2041	चंद्र	26/03/2042	मंगल	09/04/2043	राहु	04/08/2044
सूर्य	13/10/2039	चंद्र	03/04/2041	मंगल	08/04/2042	राहु	15/07/2043	गुरु	30/08/2044
चंद्र	03/12/2039	मंगल	05/05/2041	राहु	13/05/2042	गुरु	10/10/2043	शनि	30/09/2044
मंगल	08/01/2040	राहु	27/07/2041	गुरु	12/06/2042	शनि	20/01/2044	बुध	27/10/2044
राहु	10/04/2040	गुरु	08/10/2041	शनि	18/07/2042	बुध	21/04/2044	केतु	08/11/2044
गुरु	01/07/2040	शनि	04/01/2042	बुध	19/08/2042	केतु	29/05/2044	शुक्र	10/12/2044

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 3 मास 3 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
01/10/1972		04/01/1974		04/01/1989		04/01/1997		04/01/2014	
04/01/1974		04/01/1989		04/01/1997		04/01/2014		04/01/2024	
	00/00/0000	चंद्र	04/02/1976	मंगल	08/08/1989	बुध	08/09/1999	शनि	08/12/2014
	00/00/0000	मंगल	16/03/1977	बुध	11/11/1990	शनि	05/04/2001	गुरु	11/09/2016
	00/00/0000	बुध	26/07/1979	शनि	09/08/1991	गुरु	01/04/2004	राहु	22/10/2017
	00/00/0000	शनि	14/12/1980	गुरु	04/01/1993	राहु	20/02/2006	शुक्र	02/10/2019
	00/00/0000	गुरु	05/08/1983	राहु	24/11/1993	शुक्र	12/06/2009	सूर्य	22/04/2020
	01/10/1972	राहु	05/04/1985	शुक्र	16/06/1995	सूर्य	23/05/2010	चंद्र	11/09/2021
राहु	04/11/1972	शुक्र	05/03/1988	सूर्य	25/11/1995	चंद्र	01/10/2012	मंगल	09/06/2022
शुक्र	04/01/1974	सूर्य	04/01/1989	चंद्र	04/01/1997	मंगल	04/01/2014	बुध	04/01/2024

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
04/01/2024		04/01/2043		04/01/2055		04/01/2076	
04/01/2043		04/01/2055		04/01/2076		00/00/0000	
गुरु	09/05/2027	राहु	05/05/2044	शुक्र	04/02/2059	सूर्य	05/05/2076
राहु	18/06/2029	शुक्र	04/09/2046	सूर्य	05/04/2060	चंद्र	06/03/2077
शुक्र	27/02/2033	सूर्य	06/05/2047	चंद्र	06/03/2063	मंगल	15/08/2077
सूर्य	19/03/2034	चंद्र	04/01/2049	मंगल	24/09/2064	बुध	26/07/2078
चंद्र	07/11/2036	मंगल	24/11/2049	बुध	15/01/2068	शनि	14/02/2079
मंगल	05/04/2038	बुध	15/10/2051	शनि	25/12/2069	गुरु	05/03/2080
बुध	02/04/2041	शनि	24/11/2052	गुरु	04/09/2073	राहु	01/10/2080
शनि	04/01/2043	गुरु	04/01/2055	राहु	04/01/2076		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
01/10/1972		04/11/1972		04/01/1974		04/02/1976		16/03/1977	
04/11/1972		04/01/1974		04/02/1976		16/03/1977		26/07/1979	
	00/00/0000	शुक्र	26/01/1973	चंद्र	20/04/1974	मंगल	05/03/1976	बुध	29/07/1977
	00/00/0000	सूर्य	18/02/1973	मंगल	15/06/1974	बुध	08/05/1976	शनि	17/10/1977
	00/00/0000	चंद्र	19/04/1973	बुध	13/10/1974	शनि	14/06/1976	गुरु	18/03/1978
	00/00/0000	मंगल	20/05/1973	शनि	22/12/1974	गुरु	25/08/1976	राहु	22/06/1978
	00/00/0000	बुध	26/07/1973	गुरु	05/05/1975	राहु	09/10/1976	शुक्र	07/12/1978
	00/00/0000	शनि	04/09/1973	राहु	29/07/1975	शुक्र	27/12/1976	सूर्य	23/01/1979
	01/10/1972	गुरु	18/11/1973	शुक्र	24/12/1975	सूर्य	18/01/1977	चंद्र	23/05/1979
गुरु	04/11/1972	राहु	04/01/1974	सूर्य	04/02/1976	चंद्र	16/03/1977	मंगल	26/07/1979

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
26/07/1979		14/12/1980		05/08/1983		05/04/1985		05/03/1988	
14/12/1980		05/08/1983		05/04/1985		05/03/1988		04/01/1989	
शनि	11/09/1979	गुरु	02/06/1981	राहु	12/10/1983	शुक्र	29/10/1985	सूर्य	22/03/1988
गुरु	09/12/1979	राहु	17/09/1981	शुक्र	07/02/1984	सूर्य	27/12/1985	चंद्र	04/05/1988
राहु	04/02/1980	शुक्र	23/03/1982	सूर्य	12/03/1984	चंद्र	24/05/1986	मंगल	26/05/1988
शुक्र	12/05/1980	सूर्य	16/05/1982	चंद्र	05/06/1984	मंगल	11/08/1986	बुध	13/07/1988
सूर्य	10/06/1980	चंद्र	27/09/1982	मंगल	20/07/1984	बुध	26/01/1987	शनि	10/08/1988
चंद्र	19/08/1980	मंगल	07/12/1982	बुध	24/10/1984	शनि	05/05/1987	गुरु	03/10/1988
मंगल	26/09/1980	बुध	08/05/1983	शनि	19/12/1984	गुरु	08/11/1987	राहु	06/11/1988
बुध	14/12/1980	शनि	05/08/1983	गुरु	05/04/1985	राहु	05/03/1988	शुक्र	04/01/1989

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
04/01/1989		08/08/1989		11/11/1990		09/08/1991		04/01/1993	
08/08/1989		11/11/1990		09/08/1991		04/01/1993		24/11/1993	
मंगल	20/01/1989	बुध	20/10/1989	शनि	06/12/1990	गुरु	07/11/1991	राहु	09/02/1993
बुध	23/02/1989	शनि	01/12/1989	गुरु	23/01/1991	राहु	03/01/1992	शुक्र	13/04/1993
शनि	15/03/1989	गुरु	20/02/1990	राहु	22/02/1991	शुक्र	12/04/1992	सूर्य	01/05/1993
गुरु	22/04/1989	राहु	12/04/1990	शुक्र	15/04/1991	सूर्य	11/05/1992	चंद्र	15/06/1993
राहु	16/05/1989	शुक्र	11/07/1990	सूर्य	30/04/1991	चंद्र	21/07/1992	मंगल	09/07/1993
शुक्र	27/06/1989	सूर्य	05/08/1990	चंद्र	07/06/1991	मंगल	28/08/1992	बुध	29/08/1993
सूर्य	09/07/1989	चंद्र	08/10/1990	मंगल	27/06/1991	बुध	17/11/1992	शनि	28/09/1993
चंद्र	08/08/1989	मंगल	11/11/1990	बुध	09/08/1991	शनि	04/01/1993	गुरु	24/11/1993

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
24/11/1993		16/06/1995		25/11/1995		04/01/1997		08/09/1999	
16/06/1995		25/11/1995		04/01/1997		08/09/1999		05/04/2001	
शुक्र	15/03/1994	सूर्य	25/06/1995	चंद्र	20/01/1996	बुध	07/06/1997	शनि	31/10/1999
सूर्य	15/04/1994	चंद्र	17/07/1995	मंगल	19/02/1996	शनि	05/09/1997	गुरु	09/02/2000
चंद्र	03/07/1994	मंगल	29/07/1995	बुध	23/04/1996	गुरु	24/02/1998	राहु	13/04/2000
मंगल	14/08/1994	बुध	24/08/1995	शनि	31/05/1996	राहु	13/06/1998	शुक्र	03/08/2000
बुध	12/11/1994	शनि	08/09/1995	गुरु	10/08/1996	शुक्र	20/12/1998	सूर्य	04/09/2000
शनि	03/01/1995	गुरु	06/10/1995	राहु	24/09/1996	सूर्य	12/02/1999	चंद्र	23/11/2000
गुरु	13/04/1995	राहु	24/10/1995	शुक्र	12/12/1996	चंद्र	28/06/1999	मंगल	05/01/2001
राहु	16/06/1995	शुक्र	25/11/1995	सूर्य	04/01/1997	मंगल	08/09/1999	बुध	05/04/2001

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
05/04/2001		01/04/2004		20/02/2006		12/06/2009		23/05/2010	
01/04/2004		20/02/2006		12/06/2009		23/05/2010		01/10/2012	
गुरु	14/10/2001	राहु	17/06/2004	शुक्र	13/10/2006	सूर्य	01/07/2009	चंद्र	19/09/2010
राहु	13/02/2002	शुक्र	29/10/2004	सूर्य	19/12/2006	चंद्र	18/08/2009	मंगल	22/11/2010
शुक्र	13/09/2002	सूर्य	07/12/2004	चंद्र	05/06/2007	मंगल	12/09/2009	बुध	07/04/2011
सूर्य	13/11/2002	चंद्र	12/03/2005	मंगल	02/09/2007	बुध	06/11/2009	शनि	26/06/2011
चंद्र	13/04/2003	मंगल	02/05/2005	बुध	10/03/2008	शनि	08/12/2009	गुरु	25/11/2011
मंगल	03/07/2003	बुध	19/08/2005	शनि	30/06/2008	गुरु	06/02/2010	राहु	28/02/2012
बुध	22/12/2003	शनि	22/10/2005	गुरु	28/01/2009	राहु	17/03/2010	शुक्र	14/08/2012
शनि	01/04/2004	गुरु	20/02/2006	राहु	12/06/2009	शुक्र	23/05/2010	सूर्य	01/10/2012

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
01/10/2012		04/01/2014		08/12/2014		11/09/2016		22/10/2017	
04/01/2014		08/12/2014		11/09/2016		22/10/2017		02/10/2019	
मंगल	04/11/2012	शनि	04/02/2014	गुरु	31/03/2015	राहु	26/10/2016	शुक्र	09/03/2018
बुध	15/01/2013	गुरु	05/04/2014	राहु	11/06/2015	शुक्र	13/01/2017	सूर्य	17/04/2018
शनि	27/02/2013	राहु	12/05/2014	शुक्र	14/10/2015	सूर्य	04/02/2017	चंद्र	25/07/2018
गुरु	19/05/2013	शुक्र	17/07/2014	सूर्य	18/11/2015	चंद्र	02/04/2017	मंगल	15/09/2018
राहु	09/07/2013	सूर्य	05/08/2014	चंद्र	15/02/2016	मंगल	02/05/2017	बुध	05/01/2019
शुक्र	07/10/2013	चंद्र	21/09/2014	मंगल	03/04/2016	बुध	05/07/2017	शनि	12/03/2019
सूर्य	01/11/2013	मंगल	16/10/2014	बुध	13/07/2016	शनि	11/08/2017	गुरु	15/07/2019
चंद्र	04/01/2014	बुध	08/12/2014	शनि	11/09/2016	गुरु	22/10/2017	राहु	02/10/2019

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
02/10/2019		22/04/2020		11/09/2021		09/06/2022		04/01/2024	
22/04/2020		11/09/2021		09/06/2022		04/01/2024		09/05/2027	
सूर्य	13/10/2019	चंद्र	01/07/2020	मंगल	01/10/2021	बुध	07/09/2022	गुरु	06/08/2024
चंद्र	10/11/2019	मंगल	08/08/2020	बुध	13/11/2021	शनि	30/10/2022	राहु	20/12/2024
मंगल	25/11/2019	बुध	27/10/2020	शनि	08/12/2021	गुरु	08/02/2023	शुक्र	14/08/2025
बुध	27/12/2019	शनि	13/12/2020	गुरु	24/01/2022	राहु	13/04/2023	सूर्य	21/10/2025
शनि	15/01/2020	गुरु	12/03/2021	राहु	23/02/2022	शुक्र	03/08/2023	चंद्र	09/04/2026
गुरु	20/02/2020	राहु	07/05/2021	शुक्र	17/04/2022	सूर्य	04/09/2023	मंगल	08/07/2026
राहु	13/03/2020	शुक्र	14/08/2021	सूर्य	02/05/2022	चंद्र	23/11/2023	बुध	16/01/2027
शुक्र	22/04/2020	सूर्य	11/09/2021	चंद्र	09/06/2022	मंगल	04/01/2024	शनि	09/05/2027

गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
09/05/2027		18/06/2029		27/02/2033		19/03/2034		07/11/2036	
18/06/2029		27/02/2033		19/03/2034		07/11/2036		05/04/2038	
राहु	03/08/2027	शुक्र	08/03/2030	सूर्य	20/03/2033	चंद्र	31/07/2034	मंगल	15/12/2036
शुक्र	31/12/2027	सूर्य	22/05/2030	चंद्र	13/05/2033	मंगल	11/10/2034	बुध	06/03/2037
सूर्य	12/02/2028	चंद्र	25/11/2030	मंगल	10/06/2033	बुध	11/03/2035	शनि	23/04/2037
चंद्र	29/05/2028	मंगल	05/03/2031	बुध	10/08/2033	शनि	09/06/2035	गुरु	22/07/2037
मंगल	25/07/2028	बुध	04/10/2031	शनि	15/09/2033	गुरु	25/11/2035	राहु	17/09/2037
बुध	23/11/2028	शनि	05/02/2032	गुरु	22/11/2033	राहु	11/03/2036	शुक्र	26/12/2037
शनि	03/02/2029	गुरु	30/09/2032	राहु	03/01/2034	शुक्र	15/09/2036	सूर्य	24/01/2038
गुरु	18/06/2029	राहु	27/02/2033	शुक्र	19/03/2034	सूर्य	07/11/2036	चंद्र	05/04/2038

गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
05/04/2038		02/04/2041		04/01/2043		05/05/2044		04/09/2046	
02/04/2041		04/01/2043		05/05/2044		04/09/2046		06/05/2047	
बुध	24/09/2038	शनि	31/05/2041	राहु	27/02/2043	शुक्र	18/10/2044	सूर्य	18/09/2046
शनि	03/01/2039	गुरु	21/09/2041	शुक्र	02/06/2043	सूर्य	04/12/2044	चंद्र	22/10/2046
गुरु	15/07/2039	राहु	02/12/2041	सूर्य	29/06/2043	चंद्र	02/04/2045	मंगल	09/11/2046
राहु	13/11/2039	शुक्र	06/04/2042	चंद्र	05/09/2043	मंगल	04/06/2045	बुध	17/12/2046
शुक्र	12/06/2040	सूर्य	11/05/2042	मंगल	11/10/2043	बुध	16/10/2045	शनि	09/01/2047
सूर्य	12/08/2040	चंद्र	08/08/2042	बुध	26/12/2043	शनि	03/01/2046	गुरु	21/02/2047
चंद्र	11/01/2041	मंगल	25/09/2042	शनि	10/02/2044	गुरु	02/06/2046	राहु	20/03/2047
मंगल	02/04/2041	बुध	04/01/2043	गुरु	05/05/2044	राहु	04/09/2046	शुक्र	06/05/2047

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
06/05/2047		04/01/2049		24/11/2049		15/10/2051		24/11/2052	
04/01/2049		24/11/2049		15/10/2051		24/11/2052		04/01/2055	
चंद्र	29/07/2047	मंगल	28/01/2049	बुध	13/03/2050	शनि	22/11/2051	गुरु	09/04/2053
मंगल	13/09/2047	बुध	20/03/2049	शनि	16/05/2050	गुरु	01/02/2052	राहु	03/07/2053
बुध	17/12/2047	शनि	19/04/2049	गुरु	14/09/2050	राहु	17/03/2052	शुक्र	30/11/2053
शनि	12/02/2048	गुरु	15/06/2049	राहु	30/11/2050	शुक्र	04/06/2052	सूर्य	12/01/2054
गुरु	29/05/2048	राहु	21/07/2049	शुक्र	13/04/2051	सूर्य	27/06/2052	चंद्र	29/04/2054
राहु	05/08/2048	शुक्र	22/09/2049	सूर्य	21/05/2051	चंद्र	22/08/2052	मंगल	25/06/2054
शुक्र	01/12/2048	सूर्य	10/10/2049	चंद्र	25/08/2051	मंगल	21/09/2052	बुध	25/10/2054
सूर्य	04/01/2049	चंद्र	24/11/2049	मंगल	15/10/2051	बुध	24/11/2052	शनि	04/01/2055

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
04/01/2055		04/02/2059		05/04/2060		06/03/2063		24/09/2064	
04/02/2059		05/04/2060		06/03/2063		24/09/2064		15/01/2068	
शुक्र	21/10/2055	सूर्य	27/02/2059	चंद्र	31/08/2060	मंगल	17/04/2063	बुध	02/04/2065
सूर्य	12/01/2056	चंद्र	27/04/2059	मंगल	18/11/2060	बुध	16/07/2063	शनि	23/07/2065
चंद्र	06/08/2056	मंगल	29/05/2059	बुध	04/05/2061	शनि	06/09/2063	गुरु	20/02/2066
मंगल	25/11/2056	बुध	04/08/2059	शनि	11/08/2061	गुरु	15/12/2063	राहु	05/07/2066
बुध	17/07/2057	शनि	13/09/2059	गुरु	14/02/2062	राहु	16/02/2064	शुक्र	24/02/2067
शनि	03/12/2057	गुरु	27/11/2059	राहु	13/06/2062	शुक्र	06/06/2064	सूर्य	02/05/2067
गुरु	22/08/2058	राहु	13/01/2060	शुक्र	06/01/2063	सूर्य	07/07/2064	चंद्र	17/10/2067
राहु	04/02/2059	शुक्र	05/04/2060	सूर्य	06/03/2063	चंद्र	24/09/2064	मंगल	15/01/2068

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
15/01/2068		25/12/2069		04/09/2073		04/01/2076		05/05/2076	
25/12/2069		04/09/2073		04/01/2076		05/05/2076		06/03/2077	
शनि	20/03/2068	गुरु	19/08/2070	राहु	08/12/2073	सूर्य	11/01/2076	चंद्र	16/06/2076
गुरु	23/07/2068	राहु	16/01/2071	शुक्र	23/05/2074	चंद्र	28/01/2076	मंगल	09/07/2076
राहु	10/10/2068	शुक्र	06/10/2071	सूर्य	09/07/2074	मंगल	06/02/2076	बुध	26/08/2076
शुक्र	25/02/2069	सूर्य	19/12/2071	चंद्र	04/11/2074	बुध	25/02/2076	शनि	23/09/2076
सूर्य	06/04/2069	चंद्र	24/06/2072	मंगल	06/01/2075	शनि	08/03/2076	गुरु	16/11/2076
चंद्र	13/07/2069	मंगल	02/10/2072	बुध	21/05/2075	गुरु	29/03/2076	राहु	19/12/2076
मंगल	04/09/2069	बुध	02/05/2073	शनि	08/08/2075	राहु	12/04/2076	शुक्र	17/02/2077
बुध	25/12/2069	शनि	04/09/2073	गुरु	04/01/2076	शुक्र	05/05/2076	सूर्य	06/03/2077

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 1 वर्ष 10 मास 19 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
01/10/1972		22/08/1974		22/08/1978		22/08/1983		21/08/1989	
22/08/1974		22/08/1978		22/08/1983		21/08/1989		21/08/1996	
	00/00/0000	भ्राम	31/01/1975	भद्रि	02/05/1979	उल्क	21/08/1984	सिद्ध	01/01/1991
	00/00/0000	भद्रि	22/08/1975	उल्क	02/03/1980	सिद्ध	21/10/1985	संक	22/07/1992
	01/10/1972	उल्क	21/04/1976	सिद्ध	20/02/1981	संक	20/02/1987	मंग	01/10/1992
उल्क	20/02/1973	सिद्ध	31/01/1977	संक	02/04/1982	मंग	22/04/1987	पिंग	20/02/1993
सिद्ध	21/09/1973	संक	21/12/1977	मंग	22/05/1982	पिंग	22/08/1987	धांय	21/09/1993
संक	22/05/1974	मंग	31/01/1978	पिंग	01/09/1982	धांय	21/02/1988	भ्राम	02/07/1994
मंग	22/06/1974	पिंग	22/04/1978	धांय	31/01/1983	भ्राम	21/10/1988	भद्रि	22/06/1995
पिंग	22/08/1974	धांय	22/08/1978	भ्राम	22/08/1983	भद्रि	21/08/1989	उल्क	21/08/1996

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
21/08/1996		21/08/2004		21/08/2005		22/08/2007		22/08/2010	
21/08/2004		21/08/2005		22/08/2007		22/08/2010		22/08/2014	
संक	02/06/1998	मंग	31/08/2004	पिंग	01/10/2005	धांय	21/11/2007	भ्राम	31/01/2011
मंग	22/08/1998	पिंग	21/09/2004	धांय	01/12/2005	भ्राम	22/03/2008	भद्रि	22/08/2011
पिंग	31/01/1999	धांय	21/10/2004	भ्राम	20/02/2006	भद्रि	21/08/2008	उल्क	21/04/2012
धांय	02/10/1999	भ्राम	01/12/2004	भद्रि	02/06/2006	उल्क	20/02/2009	सिद्ध	31/01/2013
भ्राम	21/08/2000	भद्रि	20/01/2005	उल्क	01/10/2006	सिद्ध	21/09/2009	संक	21/12/2013
भद्रि	01/10/2001	उल्क	22/03/2005	सिद्ध	20/02/2007	संक	22/05/2010	मंग	31/01/2014
उल्क	31/01/2003	सिद्ध	01/06/2005	संक	02/08/2007	मंग	22/06/2010	पिंग	22/04/2014
सिद्ध	21/08/2004	संक	21/08/2005	मंग	22/08/2007	पिंग	22/08/2010	धांय	22/08/2014

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
22/08/2014		22/08/2019		21/08/2025		21/08/2032		21/08/2040	
22/08/2019		21/08/2025		21/08/2032		21/08/2040		21/08/2041	
भद्रि	02/05/2015	उल्क	21/08/2020	सिद्ध	01/01/2027	संक	02/06/2034	मंग	31/08/2040
उल्क	02/03/2016	सिद्ध	21/10/2021	संक	22/07/2028	मंग	22/08/2034	पिंग	21/09/2040
सिद्ध	20/02/2017	संक	20/02/2023	मंग	01/10/2028	पिंग	31/01/2035	धांय	21/10/2040
संक	02/04/2018	मंग	22/04/2023	पिंग	20/02/2029	धांय	02/10/2035	भ्राम	01/12/2040
मंग	22/05/2018	पिंग	22/08/2023	धांय	21/09/2029	भ्राम	21/08/2036	भद्रि	20/01/2041
पिंग	01/09/2018	धांय	21/02/2024	भ्राम	02/07/2030	भद्रि	01/10/2037	उल्क	22/03/2041
धांय	31/01/2019	भ्राम	21/10/2024	भद्रि	22/06/2031	उल्क	31/01/2039	सिद्ध	01/06/2041
भ्राम	22/08/2019	भद्रि	21/08/2025	उल्क	21/08/2032	सिद्ध	21/08/2040	संक	21/08/2041

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
21/08/2041		22/08/2043		22/08/2046		22/08/2050		22/08/2055	
22/08/2043		22/08/2046		22/08/2050		22/08/2055		21/08/2061	
पिंग	01/10/2041	धांय	21/11/2043	भ्राम	31/01/2047	भद्रि	02/05/2051	उल्क	21/08/2056
धांय	01/12/2041	भ्राम	22/03/2044	भद्रि	22/08/2047	उल्क	02/03/2052	सिद्ध	21/10/2057
भ्राम	20/02/2042	भद्रि	21/08/2044	उल्क	21/04/2048	सिद्ध	20/02/2053	संक	20/02/2059
भद्रि	02/06/2042	उल्क	20/02/2045	सिद्ध	31/01/2049	संक	02/04/2054	मंग	22/04/2059
उल्क	01/10/2042	सिद्ध	21/09/2045	संक	21/12/2049	मंग	22/05/2054	पिंग	22/08/2059
सिद्ध	20/02/2043	संक	22/05/2046	मंग	31/01/2050	पिंग	01/09/2054	धांय	21/02/2060
संक	02/08/2043	मंग	22/06/2046	पिंग	22/04/2050	धांय	31/01/2055	भ्राम	21/10/2060
मंग	22/08/2043	पिंग	22/08/2046	धांय	22/08/2050	भ्राम	22/08/2055	भद्रि	21/08/2061

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
21/08/2061		21/08/2068		21/08/2076		21/08/2077		22/08/2079	
21/08/2068		21/08/2076		21/08/2077		22/08/2079		00/00/0000	
सिद्ध	01/01/2063	संक	02/06/2070	मंग	31/08/2076	पिंग	01/10/2077	धांय	21/11/2079
संक	22/07/2064	मंग	22/08/2070	पिंग	21/09/2076	धांय	01/12/2077	भ्राम	22/03/2080
मंग	01/10/2064	पिंग	31/01/2071	धांय	21/10/2076	भ्राम	20/02/2078	भद्रि	21/08/2080
पिंग	20/02/2065	धांय	02/10/2071	भ्राम	01/12/2076	भद्रि	02/06/2078	उल्क	01/10/2080
धांय	21/09/2065	भ्राम	21/08/2072	भद्रि	20/01/2077	उल्क	01/10/2078		00/00/0000
भ्राम	02/07/2066	भद्रि	01/10/2073	उल्क	22/03/2077	सिद्ध	20/02/2079		00/00/0000
भद्रि	22/06/2067	उल्क	31/01/2075	सिद्ध	01/06/2077	संक	02/08/2079		00/00/0000
उल्क	21/08/2068	सिद्ध	21/08/2076	संक	21/08/2077	मंग	22/08/2079		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
21/08/2025		01/01/2027		22/07/2028		01/10/2028		20/02/2029	
01/01/2027		22/07/2028		01/10/2028		20/02/2029		21/09/2029	
सिद्ध	26/11/2025	संक	07/05/2027	मंग	24/07/2028	पिंग	09/10/2028	धांय	10/03/2029
संक	17/03/2026	मंग	23/05/2027	पिंग	28/07/2028	धांय	21/10/2028	भ्राम	02/04/2029
मंग	30/03/2026	पिंग	23/06/2027	धांय	03/08/2028	भ्राम	05/11/2028	भद्रि	02/05/2029
पिंग	27/04/2026	धांय	10/08/2027	भ्राम	11/08/2028	भद्रि	25/11/2028	उल्क	06/06/2029
धांय	07/06/2026	भ्राम	12/10/2027	भद्रि	20/08/2028	उल्क	19/12/2028	सिद्ध	18/07/2029
भ्राम	02/08/2026	भद्रि	30/12/2027	उल्क	01/09/2028	सिद्ध	15/01/2029	संक	03/09/2029
भद्रि	10/10/2026	उल्क	02/04/2028	सिद्ध	15/09/2028	संक	16/02/2029	मंग	09/09/2029
उल्क	01/01/2027	सिद्ध	22/07/2028	संक	01/10/2028	मंग	20/02/2029	पिंग	21/09/2029

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
21/09/2029		02/07/2030		22/06/2031		21/08/2032		02/06/2034	
02/07/2030		22/06/2031		21/08/2032		02/06/2034		22/08/2034	
भ्राम	22/10/2029	भद्रि	20/08/2030	उल्क	01/09/2031	संक	13/01/2033	मंग	04/06/2034
भद्रि	01/12/2029	उल्क	19/10/2030	सिद्ध	23/11/2031	मंग	31/01/2033	पिंग	08/06/2034
उल्क	17/01/2030	सिद्ध	27/12/2030	संक	26/02/2032	पिंग	08/03/2033	धांय	15/06/2034
सिद्ध	14/03/2030	संक	15/03/2031	मंग	09/03/2032	धांय	01/05/2033	भ्राम	24/06/2034
संक	16/05/2030	मंग	25/03/2031	पिंग	01/04/2032	भ्राम	12/07/2033	भद्रि	05/07/2034
मंग	24/05/2030	पिंग	14/04/2031	धांय	07/05/2032	भद्रि	10/10/2033	उल्क	19/07/2034
पिंग	08/06/2030	धांय	14/05/2031	भ्राम	23/06/2032	उल्क	26/01/2034	सिद्ध	04/08/2034
धांय	02/07/2030	भ्राम	22/06/2031	भद्रि	21/08/2032	सिद्ध	02/06/2034	संक	22/08/2034

संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क	
22/08/2034		31/01/2035		02/10/2035		21/08/2036		01/10/2037	
31/01/2035		02/10/2035		21/08/2036		01/10/2037		31/01/2039	
पिंग	31/08/2034	धांय	20/02/2035	भ्राम	07/11/2035	भद्रि	17/10/2036	उल्क	21/12/2037
धांय	13/09/2034	भ्राम	19/03/2035	भद्रि	22/12/2035	उल्क	23/12/2036	सिद्ध	26/03/2038
भ्राम	01/10/2034	भद्रि	22/04/2035	उल्क	14/02/2036	सिद्ध	12/03/2037	संक	12/07/2038
भद्रि	24/10/2034	उल्क	02/06/2035	सिद्ध	17/04/2036	संक	10/06/2037	मंग	26/07/2038
उल्क	20/11/2034	सिद्ध	19/07/2035	संक	28/06/2036	मंग	22/06/2037	पिंग	22/08/2038
सिद्ध	21/12/2034	संक	11/09/2035	मंग	07/07/2036	पिंग	14/07/2037	धांय	01/10/2038
संक	27/01/2035	मंग	18/09/2035	पिंग	25/07/2036	धांय	17/08/2037	भ्राम	24/11/2038
मंग	31/01/2035	पिंग	02/10/2035	धांय	21/08/2036	भ्राम	01/10/2037	भद्रि	31/01/2039

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम	
31/01/2039		21/08/2040		31/08/2040		21/09/2040		21/10/2040	
21/08/2040		31/08/2040		21/09/2040		21/10/2040		01/12/2040	
सिद्ध	22/05/2039	मंग	22/08/2040	पिंग	01/09/2040	धांय	23/09/2040	भ्राम	26/10/2040
संक	25/09/2039	पिंग	22/08/2040	धांय	03/09/2040	भ्राम	27/09/2040	भद्रि	31/10/2040
मंग	11/10/2039	धांय	23/08/2040	भ्राम	05/09/2040	भद्रि	01/10/2040	उल्क	07/11/2040
पिंग	11/11/2039	भ्राम	24/08/2040	भद्रि	08/09/2040	उल्क	06/10/2040	सिद्ध	15/11/2040
धांय	28/12/2039	भद्रि	25/08/2040	उल्क	12/09/2040	सिद्ध	12/10/2040	संक	24/11/2040
भ्राम	01/03/2040	उल्क	27/08/2040	सिद्ध	16/09/2040	संक	19/10/2040	मंग	25/11/2040
भद्रि	19/05/2040	सिद्ध	29/08/2040	संक	20/09/2040	मंग	19/10/2040	पिंग	27/11/2040
उल्क	21/08/2040	संक	31/08/2040	मंग	21/09/2040	पिंग	21/10/2040	धांय	01/12/2040

मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग	
01/12/2040		20/01/2041		22/03/2041		01/06/2041		21/08/2041	
20/01/2041		22/03/2041		01/06/2041		21/08/2041		01/10/2041	
भद्रि	08/12/2040	उल्क	31/01/2041	सिद्ध	05/04/2041	संक	19/06/2041	पिंग	24/08/2041
उल्क	16/12/2040	सिद्ध	11/02/2041	संक	21/04/2041	मंग	22/06/2041	धांय	27/08/2041
सिद्ध	26/12/2040	संक	25/02/2041	मंग	23/04/2041	पिंग	26/06/2041	भ्राम	01/09/2041
संक	06/01/2041	मंग	27/02/2041	पिंग	27/04/2041	धांय	03/07/2041	भद्रि	06/09/2041
मंग	08/01/2041	पिंग	02/03/2041	धांय	03/05/2041	भ्राम	12/07/2041	उल्क	13/09/2041
पिंग	11/01/2041	धांय	07/03/2041	भ्राम	11/05/2041	भद्रि	23/07/2041	सिद्ध	21/09/2041
धांय	15/01/2041	भ्राम	14/03/2041	भद्रि	20/05/2041	उल्क	06/08/2041	संक	30/09/2041
भ्राम	20/01/2041	भद्रि	22/03/2041	उल्क	01/06/2041	सिद्ध	21/08/2041	मंग	01/10/2041

पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध	
01/10/2041		01/12/2041		20/02/2042		02/06/2042		01/10/2042	
01/12/2041		20/02/2042		02/06/2042		01/10/2042		20/02/2043	
धांय	06/10/2041	भ्राम	10/12/2041	भद्रि	06/03/2042	उल्क	22/06/2042	सिद्ध	29/10/2042
भ्राम	13/10/2041	भद्रि	21/12/2041	उल्क	23/03/2042	सिद्ध	16/07/2042	संक	29/11/2042
भद्रि	21/10/2041	उल्क	04/01/2042	सिद्ध	12/04/2042	संक	12/08/2042	मंग	03/12/2042
उल्क	31/10/2041	सिद्ध	20/01/2042	संक	04/05/2042	मंग	15/08/2042	पिंग	11/12/2042
सिद्ध	12/11/2041	संक	07/02/2042	मंग	07/05/2042	पिंग	22/08/2042	धांय	23/12/2042
संक	26/11/2041	मंग	09/02/2042	पिंग	13/05/2042	धांय	01/09/2042	भ्राम	08/01/2043
मंग	28/11/2041	पिंग	13/02/2042	धांय	21/05/2042	भ्राम	14/09/2042	भद्रि	28/01/2043
पिंग	01/12/2041	धांय	20/02/2042	भ्राम	02/06/2042	भद्रि	01/10/2042	उल्क	20/02/2043

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 8 वर्ष 10 मास 23 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : पुष्य - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

मिथुन 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष	
01/10/1972		25/08/1981		25/08/2002		26/08/2007		25/08/2016	
25/08/1981		25/08/2002		26/08/2007		25/08/2016		25/08/2020	
मिथु	08/08/1973	कर्क	02/11/1986	सिंह	11/12/2002	कन्या	08/08/2008	कुंभ	02/11/2016
कर्क	29/10/1975	सिंह	27/01/1988	कन्या	22/06/2003	कुंभ	09/01/2009	मक	09/01/2017
सिंह	10/05/1976	कन्या	19/04/1990	कुंभ	16/09/2003	मक	13/06/2009	धनु	30/06/2017
कन्या	23/04/1977	कुंभ	14/04/1991	मक	11/12/2003	धनु	05/07/2010	मेष	29/10/2017
कुंभ	24/09/1977	मक	09/04/1992	धनु	13/07/2004	मेष	02/04/2011	वृष	31/07/2018
मक	26/02/1978	धनु	29/09/1994	मेष	10/12/2004	वृष	10/12/2012	मिथु	01/01/2019
धनु	20/03/1979	मेष	21/06/1996	वृष	19/11/2005	मिथु	23/11/2013	कर्क	28/12/2019
मेष	15/12/1979	वृष	04/06/2000	मिथु	31/05/2006	कर्क	14/02/2016	सिंह	23/03/2020
वृष	25/08/1981	मिथु	25/08/2002	कर्क	26/08/2007	सिंह	25/08/2016	कन्या	25/08/2020

मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
25/08/2020		25/08/2024		25/08/2034		25/08/2041		25/08/2057	
25/08/2024		25/08/2034		25/08/2041		25/08/2057		00/00/0000	
मक	02/11/2020	धनु	29/10/2025	मेष	24/03/2035	वृष	29/08/2044	मिथु	02/10/2057
धनु	23/04/2021	मेष	25/08/2026	वृष	17/07/2036	मिथु	10/05/2046		00/00/0000
मेष	21/08/2021	वृष	13/07/2028	मिथु	14/04/2037	कर्क	23/04/2050		00/00/0000
वृष	23/05/2022	मिथु	04/08/2029	कर्क	06/01/2039	सिंह	02/04/2051		00/00/0000
मिथु	25/10/2022	कर्क	23/01/2032	सिंह	05/06/2039	कन्या	10/12/2052		00/00/0000
कर्क	21/10/2023	सिंह	25/08/2032	कन्या	02/03/2040	कुंभ	11/09/2053		00/00/0000
सिंह	14/01/2024	कन्या	16/09/2033	कुंभ	30/06/2040	मक	13/06/2054		00/00/0000
कन्या	17/06/2024	कुंभ	07/03/2034	मक	28/10/2040	धनु	01/05/2056		00/00/0000
कुंभ	25/08/2024	मक	25/08/2034	धनु	25/08/2041	मेष	25/08/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - धनु		धनु - मेष		धनु - वृष		धनु - मिथु		धनु - कर्क	
25/08/2024		29/10/2025		25/08/2026		13/07/2028		04/08/2029	
29/10/2025		25/08/2026		13/07/2028		04/08/2029		23/01/2032	
धनु	14/10/2024	मेष	22/11/2025	वृष	02/01/2027	मिथु	23/08/2028	कर्क	15/03/2030
मेष	19/11/2024	वृष	18/01/2026	मिथु	16/03/2027	कर्क	26/11/2028	सिंह	07/05/2030
वृष	08/02/2025	मिथु	19/02/2026	कर्क	02/09/2027	सिंह	19/12/2028	कन्या	10/08/2030
मिथु	25/03/2025	कर्क	04/05/2026	सिंह	12/10/2027	कन्या	29/01/2029	कुंभ	22/09/2030
कर्क	09/07/2025	सिंह	22/05/2026	कन्या	24/12/2027	कुंभ	16/02/2029	मक	03/11/2030
सिंह	04/08/2025	कन्या	23/06/2026	कुंभ	25/01/2028	मक	07/03/2029	धनु	17/02/2031
कन्या	18/09/2025	कुंभ	07/07/2026	मक	26/02/2028	धनु	21/04/2029	मेष	03/05/2031
कुंभ	08/10/2025	मक	21/07/2026	धनु	17/05/2028	मेष	23/05/2029	वृष	20/10/2031
मक	29/10/2025	धनु	25/08/2026	मेष	13/07/2028	वृष	04/08/2029	मिथु	23/01/2032

धनु - सिंह		धनु - कन्या		धनु - कुंभ		धनु - मक		मेष - मेष	
23/01/2032		25/08/2032		16/09/2033		07/03/2034		25/08/2034	
25/08/2032		16/09/2033		07/03/2034		25/08/2034		24/03/2035	
सिंह	05/02/2032	कन्या	05/10/2032	कुंभ	24/09/2033	मक	15/03/2034	मेष	12/09/2034
कन्या	27/02/2032	कुंभ	23/10/2032	मक	02/10/2033	धनु	04/04/2034	वृष	21/10/2034
कुंभ	09/03/2032	मक	10/11/2032	धनु	22/10/2033	मेष	18/04/2034	मिथु	13/11/2034
मक	19/03/2032	धनु	26/12/2032	मेष	05/11/2033	वृष	20/05/2034	कर्क	04/01/2035
धनु	13/04/2032	मेष	27/01/2033	वृष	08/12/2033	मिथु	08/06/2034	सिंह	16/01/2035
मेष	01/05/2032	वृष	09/04/2033	मिथु	26/12/2033	कर्क	20/07/2034	कन्या	07/02/2035
वृष	10/06/2032	मिथु	20/05/2033	कर्क	06/02/2034	सिंह	30/07/2034	कुंभ	17/02/2035
मिथु	03/07/2032	कर्क	24/08/2033	सिंह	16/02/2034	कन्या	17/08/2034	मक	27/02/2035
कर्क	25/08/2032	सिंह	16/09/2033	कन्या	07/03/2034	कुंभ	25/08/2034	धनु	24/03/2035

मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - कन्या	
24/03/2035		17/07/2036		14/04/2037		06/01/2039		05/06/2039	
17/07/2036		14/04/2037		06/01/2039		05/06/2039		02/03/2040	
वृष	23/06/2035	मिथु	15/08/2036	कर्क	17/09/2037	सिंह	14/01/2039	कन्या	04/07/2039
मिथु	13/08/2035	कर्क	21/10/2036	सिंह	24/10/2037	कन्या	30/01/2039	कुंभ	16/07/2039
कर्क	09/12/2035	सिंह	06/11/2036	कन्या	30/12/2037	कुंभ	06/02/2039	मक	29/07/2039
सिंह	07/01/2036	कन्या	04/12/2036	कुंभ	29/01/2038	मक	14/02/2039	धनु	30/08/2039
कन्या	27/02/2036	कुंभ	17/12/2036	मक	28/02/2038	धनु	03/03/2039	मेष	21/09/2039
कुंभ	20/03/2036	मक	30/12/2036	धनु	13/05/2038	मेष	16/03/2039	वृष	11/11/2039
मक	12/04/2036	धनु	31/01/2037	मेष	04/07/2038	वृष	13/04/2039	मिथु	10/12/2039
धनु	08/06/2036	मेष	22/02/2037	वृष	31/10/2038	मिथु	29/04/2039	कर्क	15/02/2040
मेष	17/07/2036	वृष	14/04/2037	मिथु	06/01/2039	कर्क	05/06/2039	सिंह	02/03/2040

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कुंभ	
02/03/2040	
30/06/2040	
कुंभ	07/03/2040
मक	13/03/2040
धनु	27/03/2040
मेष	06/04/2040
वृष	29/04/2040
मिथु	12/05/2040
कर्क	10/06/2040
सिंह	17/06/2040
कन्या	30/06/2040

मेष - मक	
30/06/2040	
28/10/2040	
मक	06/07/2040
धनु	20/07/2040
मेष	30/07/2040
वृष	21/08/2040
मिथु	03/09/2040
कर्क	03/10/2040
सिंह	10/10/2040
कन्या	23/10/2040
कुंभ	28/10/2040

मेष - धनु	
28/10/2040	
25/08/2041	
धनु	03/12/2040
मेष	28/12/2040
वृष	22/02/2041
मिथु	26/03/2041
कर्क	08/06/2041
सिंह	26/06/2041
कन्या	28/07/2041
कुंभ	11/08/2041
मक	25/08/2041

वृष - वृष	
25/08/2041	
29/08/2044	
वृष	20/03/2042
मिथु	15/07/2042
कर्क	13/04/2043
सिंह	16/06/2043
कन्या	11/10/2043
कुंभ	01/12/2043
मक	22/01/2044
धनु	31/05/2044
मेष	29/08/2044

वृष - मिथु	
29/08/2044	
10/05/2046	
मिथु	03/11/2044
कर्क	05/04/2045
सिंह	11/05/2045
कन्या	16/07/2045
कुंभ	14/08/2045
मक	12/09/2045
धनु	24/11/2045
मेष	14/01/2046
वृष	10/05/2046

वृष - कर्क	
10/05/2046	
23/04/2050	
कर्क	02/05/2047
सिंह	26/07/2047
कन्या	26/12/2047
कुंभ	02/03/2048
मक	09/05/2048
धनु	26/10/2048
मेष	22/02/2049
वृष	21/11/2049
मिथु	23/04/2050

वृष - सिंह	
23/04/2050	
02/04/2051	
सिंह	13/05/2050
कन्या	18/06/2050
कुंभ	05/07/2050
मक	21/07/2050
धनु	30/08/2050
मेष	28/09/2050
वृष	01/12/2050
मिथु	07/01/2051
कर्क	02/04/2051

वृष - कन्या	
02/04/2051	
10/12/2052	
कन्या	06/06/2051
कुंभ	05/07/2051
मक	03/08/2051
धनु	15/10/2051
मेष	05/12/2051
वृष	31/03/2052
मिथु	04/06/2052
कर्क	04/11/2052
सिंह	10/12/2052

वृष - कुंभ	
10/12/2052	
11/09/2053	
कुंभ	23/12/2052
मक	05/01/2053
धनु	07/02/2053
मेष	01/03/2053
वृष	22/04/2053
मिथु	21/05/2053
कर्क	28/07/2053
सिंह	13/08/2053
कन्या	11/09/2053

वृष - मक	
11/09/2053	
13/06/2054	
मक	24/09/2053
धनु	27/10/2053
मेष	18/11/2053
वृष	09/01/2054
मिथु	07/02/2054
कर्क	16/04/2054
सिंह	02/05/2054
कन्या	31/05/2054
कुंभ	13/06/2054

वृष - धनु	
13/06/2054	
01/05/2056	
धनु	02/09/2054
मेष	29/10/2054
वृष	07/03/2055
मिथु	19/05/2055
कर्क	05/11/2055
सिंह	15/12/2055
कन्या	26/02/2056
कुंभ	30/03/2056
मक	01/05/2056

वृष - मेष	
01/05/2056	
25/08/2057	
मेष	10/06/2056
वृष	08/09/2056
मिथु	29/10/2056
कर्क	25/02/2057
सिंह	25/03/2057
कन्या	15/05/2057
कुंभ	07/06/2057
मक	30/06/2057
धनु	25/08/2057

मिथु - मिथु	
25/08/2057	
00/00/0000	
मिथु	01/10/2057
कर्क	02/10/2057
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 3 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 3 वर्ष	
01/10/1972	
02/10/1975	
मेष	01/01/1973
मीन	02/04/1973
कुंभ	02/07/1973
मक	02/10/1973
धनु	01/01/1974
वृश्चि	02/04/1974
तुला	03/07/1974
कन्या	02/10/1974
सिंह	01/01/1975
कर्क	03/04/1975
मिथु	03/07/1975
वृष	02/10/1975

मेष 5 वर्ष	
02/10/1975	
01/10/1980	
वृष	02/03/1976
मिथु	02/08/1976
कर्क	01/01/1977
सिंह	02/06/1977
कन्या	01/11/1977
तुला	02/04/1978
वृश्चि	01/09/1978
धनु	01/02/1979
मक	03/07/1979
कुंभ	02/12/1979
मीन	02/05/1980
मेष	01/10/1980

मीन 3 वर्ष	
01/10/1980	
02/10/1983	
मेष	01/01/1981
वृष	02/04/1981
मिथु	02/07/1981
कर्क	02/10/1981
सिंह	01/01/1982
कन्या	02/04/1982
तुला	03/07/1982
वृश्चि	02/10/1982
धनु	01/01/1983
मक	03/04/1983
कुंभ	03/07/1983
मीन	02/10/1983

कुम्भ 2 वर्ष	
02/10/1983	
02/10/1985	
मीन	02/12/1983
मेष	01/02/1984
वृष	02/04/1984
मिथु	02/06/1984
कर्क	02/08/1984
सिंह	01/10/1984
कन्या	01/12/1984
तुला	31/01/1985
वृश्चि	02/04/1985
धनु	02/06/1985
मक	02/08/1985
कुंभ	02/10/1985

मकर 8 वर्ष	
02/10/1985	
02/10/1993	
धनु	02/06/1986
वृश्चि	01/02/1987
तुला	02/10/1987
कन्या	02/06/1988
सिंह	31/01/1989
कर्क	02/10/1989
मिथु	02/06/1990
वृष	01/02/1991
मेष	02/10/1991
मीन	02/06/1992
कुंभ	31/01/1993
मक	02/10/1993

धनु 12 वर्ष	
02/10/1993	
02/10/2005	
वृश्चि	02/10/1994
तुला	02/10/1995
कन्या	01/10/1996
सिंह	02/10/1997
कर्क	02/10/1998
मिथु	02/10/1999
वृष	01/10/2000
मेष	02/10/2001
मीन	02/10/2002
कुंभ	02/10/2003
मक	01/10/2004
धनु	02/10/2005

वृश्चिक 10 वर्ष	
02/10/2005	
02/10/2015	
तुला	02/08/2006
कन्या	02/06/2007
सिंह	02/04/2008
कर्क	31/01/2009
मिथु	02/12/2009
वृष	02/10/2010
मेष	02/08/2011
मीन	02/06/2012
कुंभ	02/04/2013
मक	31/01/2014
धनु	02/12/2014
वृश्चि	02/10/2015

तुला 10 वर्ष	
02/10/2015	
02/10/2025	
वृश्चि	02/08/2016
धनु	02/06/2017
मक	02/04/2018
कुंभ	01/02/2019
मीन	02/12/2019
मेष	01/10/2020
वृष	02/08/2021
मिथु	02/06/2022
कर्क	03/04/2023
सिंह	01/02/2024
कन्या	01/12/2024
तुला	02/10/2025

कन्या 12 वर्ष	
02/10/2025	
02/10/2037	
तुला	02/10/2026
वृश्चि	02/10/2027
धनु	01/10/2028
मक	02/10/2029
कुंभ	02/10/2030
मीन	02/10/2031
मेष	01/10/2032
वृष	02/10/2033
मिथु	02/10/2034
कर्क	02/10/2035
सिंह	01/10/2036
कन्या	02/10/2037

सिंह 11 वर्ष	
02/10/2037	
01/10/2048	
कन्या	01/09/2038
तुला	02/08/2039
वृश्चि	02/07/2040
धनु	02/06/2041
मक	03/05/2042
कुंभ	03/04/2043
मीन	02/03/2044
मेष	31/01/2045
वृष	01/01/2046
मिथु	02/12/2046
कर्क	02/11/2047
सिंह	01/10/2048

कर्क 12 वर्ष	
01/10/2048	
01/10/2060	
मिथु	02/10/2049
वृष	02/10/2050
मेष	02/10/2051
मीन	01/10/2052
कुंभ	02/10/2053
मक	02/10/2054
धनु	02/10/2055
वृश्चि	01/10/2056
तुला	02/10/2057
कन्या	02/10/2058
सिंह	02/10/2059
कर्क	01/10/2060

मिथुन 3 वर्ष	
01/10/2060	
02/10/2063	
वृष	01/01/2061
मेष	02/04/2061
मीन	02/07/2061
कुंभ	02/10/2061
मक	01/01/2062
धनु	02/04/2062
वृश्चि	03/07/2062
तुला	02/10/2062
कन्या	01/01/2063
सिंह	03/04/2063
कर्क	03/07/2063
मिथु	02/10/2063

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

तुला - तुला		कन्या - तुला		कन्या - वृश्चि		कन्या - धनु		कन्या - मक	
01/12/2024		02/10/2025		02/10/2026		02/10/2027		01/10/2028	
02/10/2025		02/10/2026		02/10/2027		01/10/2028		02/10/2029	
वृश्चि	27/12/2024	वृश्चि	01/11/2025	तुला	01/11/2026	वृश्चि	02/11/2027	धनु	01/11/2028
धनु	21/01/2025	धनु	02/12/2025	कन्या	02/12/2026	तुला	02/12/2027	वृश्चि	01/12/2028
मक	15/02/2025	मक	01/01/2026	सिंह	01/01/2027	कन्या	01/01/2028	तुला	01/01/2029
कुंभ	13/03/2025	कुंभ	31/01/2026	कर्क	01/02/2027	सिंह	01/02/2028	कन्या	31/01/2029
मीन	07/04/2025	मीन	03/03/2026	मिथु	03/03/2027	कर्क	02/03/2028	सिंह	03/03/2029
मेष	02/05/2025	मेष	02/04/2026	वृष	03/04/2027	मिथु	02/04/2028	कर्क	02/04/2029
वृष	28/05/2025	वृष	03/05/2026	मेष	03/05/2027	वृष	02/05/2028	मिथु	02/05/2029
मिथु	22/06/2025	मिथु	02/06/2026	मीन	02/06/2027	मेष	02/06/2028	वृष	02/06/2029
कर्क	18/07/2025	कर्क	03/07/2026	कुंभ	03/07/2027	मीन	02/07/2028	मेष	02/07/2029
सिंह	12/08/2025	सिंह	02/08/2026	मक	02/08/2027	कुंभ	02/08/2028	मीन	02/08/2029
कन्या	06/09/2025	कन्या	01/09/2026	धनु	02/09/2027	मक	01/09/2028	कुंभ	01/09/2029
तुला	02/10/2025	तुला	02/10/2026	वृश्चि	02/10/2027	धनु	01/10/2028	मक	02/10/2029

कन्या - कुंभ		कन्या - मीन		कन्या - मेष		कन्या - वृष		कन्या - मिथु	
02/10/2029		02/10/2030		02/10/2031		01/10/2032		02/10/2033	
02/10/2030		02/10/2031		01/10/2032		02/10/2033		02/10/2034	
मीन	01/11/2029	मेष	01/11/2030	वृष	02/11/2031	मेष	01/11/2032	वृष	01/11/2033
मेष	02/12/2029	वृष	02/12/2030	मिथु	02/12/2031	मीन	01/12/2032	मेष	02/12/2033
वृष	01/01/2030	मिथु	01/01/2031	कर्क	01/01/2032	कुंभ	01/01/2033	मीन	01/01/2034
मिथु	31/01/2030	कर्क	01/02/2031	सिंह	01/02/2032	मक	31/01/2033	कुंभ	31/01/2034
कर्क	03/03/2030	सिंह	03/03/2031	कन्या	02/03/2032	धनु	03/03/2033	मक	03/03/2034
सिंह	02/04/2030	कन्या	03/04/2031	तुला	02/04/2032	वृश्चि	02/04/2033	धनु	02/04/2034
कन्या	03/05/2030	तुला	03/05/2031	वृश्चि	02/05/2032	तुला	02/05/2033	वृश्चि	03/05/2034
तुला	02/06/2030	वृश्चि	02/06/2031	धनु	02/06/2032	कन्या	02/06/2033	तुला	02/06/2034
वृश्चि	03/07/2030	धनु	03/07/2031	मक	02/07/2032	सिंह	02/07/2033	कन्या	03/07/2034
धनु	02/08/2030	मक	02/08/2031	कुंभ	02/08/2032	कर्क	02/08/2033	सिंह	02/08/2034
मक	01/09/2030	कुंभ	02/09/2031	मीन	01/09/2032	मिथु	01/09/2033	कर्क	01/09/2034
कुंभ	02/10/2030	मीन	02/10/2031	मेष	01/10/2032	वृष	02/10/2033	मिथु	02/10/2034

कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		कन्या - कन्या		सिंह - कन्या		सिंह - तुला	
02/10/2034		02/10/2035		01/10/2036		02/10/2037		01/09/2038	
02/10/2035		01/10/2036		02/10/2037		01/09/2038		02/08/2039	
मिथु	01/11/2034	कन्या	02/11/2035	तुला	01/11/2036	तुला	30/10/2037	वृश्चि	29/09/2038
वृष	02/12/2034	तुला	02/12/2035	वृश्चि	01/12/2036	वृश्चि	26/11/2037	धनु	27/10/2038
मेष	01/01/2035	वृश्चि	01/01/2036	धनु	01/01/2037	धनु	24/12/2037	मक	24/11/2038
मीन	01/02/2035	धनु	01/02/2036	मक	31/01/2037	मक	21/01/2038	कुंभ	22/12/2038
कुंभ	03/03/2035	मक	02/03/2036	कुंभ	03/03/2037	कुंभ	18/02/2038	मीन	19/01/2039
मक	03/04/2035	कुंभ	02/04/2036	मीन	02/04/2037	मीन	18/03/2038	मेष	16/02/2039
धनु	03/05/2035	मीन	02/05/2036	मेष	02/05/2037	मेष	15/04/2038	वृष	16/03/2039
वृश्चि	02/06/2035	मेष	02/06/2036	वृष	02/06/2037	वृष	13/05/2038	मिथु	13/04/2039
तुला	03/07/2035	वृष	02/07/2036	मिथु	02/07/2037	मिथु	10/06/2038	कर्क	11/05/2039
कन्या	02/08/2035	मिथु	02/08/2036	कर्क	02/08/2037	कर्क	08/07/2038	सिंह	07/06/2039
सिंह	02/09/2035	कर्क	01/09/2036	सिंह	01/09/2037	सिंह	05/08/2038	कन्या	05/07/2039
कर्क	02/10/2035	सिंह	01/10/2036	कन्या	02/10/2037	कन्या	01/09/2038	तुला	02/08/2039

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - वृश्चि		सिंह - धनु		सिंह - मक		सिंह - कुंभ		सिंह - मीन	
02/08/2039		02/07/2040		02/06/2041		03/05/2042		03/04/2043	
02/07/2040		02/06/2041		03/05/2042		03/04/2043		02/03/2044	
तुला	30/08/2039	वृश्चि	30/07/2040	धनु	30/06/2041	मीन	31/05/2042	मेष	30/04/2043
कन्या	27/09/2039	तुला	27/08/2040	वृश्चि	28/07/2041	मेष	27/06/2042	वृष	28/05/2043
सिंह	25/10/2039	कन्या	24/09/2040	तुला	25/08/2041	वृष	25/07/2042	मिथु	25/06/2043
कर्क	22/11/2039	सिंह	22/10/2040	कन्या	21/09/2041	मिथु	22/08/2042	कर्क	23/07/2043
मिथु	20/12/2039	कर्क	19/11/2040	सिंह	19/10/2041	कर्क	19/09/2042	सिंह	20/08/2043
वृष	17/01/2040	मिथु	16/12/2040	कर्क	16/11/2041	सिंह	17/10/2042	कन्या	17/09/2043
मेष	14/02/2040	वृष	13/01/2041	मिथु	14/12/2041	कन्या	14/11/2042	तुला	15/10/2043
मीन	12/03/2040	मेष	10/02/2041	वृष	11/01/2042	तुला	12/12/2042	वृश्चि	12/11/2043
कुंभ	09/04/2040	मीन	10/03/2041	मेष	08/02/2042	वृश्चि	09/01/2043	धनु	10/12/2043
मक	07/05/2040	कुंभ	07/04/2041	मीन	08/03/2042	धनु	06/02/2043	मक	07/01/2044
धनु	04/06/2040	मक	05/05/2041	कुंभ	05/04/2042	मक	06/03/2043	कुंभ	03/02/2044
वृश्चि	02/07/2040	धनु	02/06/2041	मक	03/05/2042	कुंभ	03/04/2043	मीन	02/03/2044

सिंह - मेष		सिंह - वृष		सिंह - मिथु		सिंह - कर्क		सिंह - सिंह	
02/03/2044		31/01/2045		01/01/2046		02/12/2046		02/11/2047	
31/01/2045		01/01/2046		02/12/2046		02/11/2047		01/10/2048	
वृष	30/03/2044	मेष	28/02/2045	वृष	29/01/2046	मिथु	30/12/2046	कन्या	29/11/2047
मिथु	27/04/2044	मीन	28/03/2045	मेष	26/02/2046	वृष	27/01/2047	तुला	27/12/2047
कर्क	25/05/2044	कुंभ	25/04/2045	मीन	26/03/2046	मेष	23/02/2047	वृश्चि	24/01/2048
सिंह	22/06/2044	मक	23/05/2045	कुंभ	23/04/2046	मीन	23/03/2047	धनु	21/02/2048
कन्या	20/07/2044	धनु	20/06/2045	मक	20/05/2046	कुंभ	20/04/2047	मक	20/03/2048
तुला	17/08/2044	वृश्चि	18/07/2045	धनु	17/06/2046	मक	18/05/2047	कुंभ	17/04/2048
वृश्चि	14/09/2044	तुला	14/08/2045	वृश्चि	15/07/2046	धनु	15/06/2047	मीन	15/05/2048
धनु	12/10/2044	कन्या	11/09/2045	तुला	12/08/2046	वृश्चि	13/07/2047	मेष	12/06/2048
मक	08/11/2044	सिंह	09/10/2045	कन्या	09/09/2046	तुला	10/08/2047	वृष	10/07/2048
कुंभ	06/12/2044	कर्क	06/11/2045	सिंह	07/10/2046	कन्या	07/09/2047	मिथु	07/08/2048
मीन	03/01/2045	मिथु	04/12/2045	कर्क	04/11/2046	सिंह	05/10/2047	कर्क	03/09/2048
मेष	31/01/2045	वृष	01/01/2046	मिथु	02/12/2046	कर्क	02/11/2047	सिंह	01/10/2048

कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष		कर्क - मीन		कर्क - कुंभ	
01/10/2048		02/10/2049		02/10/2050		02/10/2051		01/10/2052	
02/10/2049		02/10/2050		02/10/2051		01/10/2052		02/10/2053	
वृष	01/11/2048	मेष	01/11/2049	वृष	01/11/2050	मेष	02/11/2051	मीन	01/11/2052
मेष	01/12/2048	मीन	02/12/2049	मिथु	02/12/2050	वृष	02/12/2051	मेष	01/12/2052
मीन	01/01/2049	कुंभ	01/01/2050	कर्क	01/01/2051	मिथु	01/01/2052	वृष	01/01/2053
कुंभ	31/01/2049	मक	31/01/2050	सिंह	01/02/2051	कर्क	01/02/2052	मिथु	31/01/2053
मक	03/03/2049	धनु	03/03/2050	कन्या	03/03/2051	सिंह	02/03/2052	कर्क	03/03/2053
धनु	02/04/2049	वृश्चि	02/04/2050	तुला	03/04/2051	कन्या	02/04/2052	सिंह	02/04/2053
वृश्चि	02/05/2049	तुला	03/05/2050	वृश्चि	03/05/2051	तुला	02/05/2052	कन्या	02/05/2053
तुला	02/06/2049	कन्या	02/06/2050	धनु	02/06/2051	वृश्चि	02/06/2052	तुला	02/06/2053
कन्या	02/07/2049	सिंह	03/07/2050	मक	03/07/2051	धनु	02/07/2052	वृश्चि	02/07/2053
सिंह	02/08/2049	कर्क	02/08/2050	कुंभ	02/08/2051	मक	02/08/2052	धनु	02/08/2053
कर्क	01/09/2049	मिथु	01/09/2050	मीन	02/09/2051	कुंभ	01/09/2052	मक	01/09/2053
मिथु	02/10/2049	वृष	02/10/2050	मेष	02/10/2051	मीन	01/10/2052	कुंभ	02/10/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, धन
नीलम	शनि	98%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	80%	सन्तति सुख, सुख
हीरा	शुक्र	77%	सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	64%	धन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	49%	पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	25%	सन्तति कष्ट, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, हानि
गोमेद	राहु	0%	दुर्घटना

रत्न की शुभता

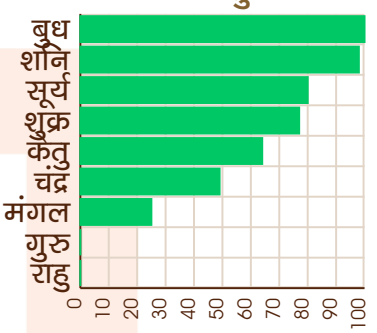

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	14/09/1984	67%	24%	0%	100%	0%	83%	100%	0%	52%
बुध	14/09/2001	86%	24%	25%	100%	0%	83%	98%	0%	64%
केतु	14/09/2008	67%	24%	38%	100%	0%	83%	86%	0%	77%
शुक्र	14/09/2028	67%	24%	25%	100%	0%	89%	100%	0%	70%
सूर्य	15/09/2034	92%	56%	38%	100%	0%	64%	86%	0%	52%
चंद्र	14/09/2044	86%	62%	25%	100%	0%	77%	98%	0%	52%
मंगल	15/09/2051	86%	56%	50%	97%	0%	77%	98%	0%	70%
राहु	14/09/2069	67%	24%	0%	100%	0%	83%	100%	0%	52%
गुरु	14/09/2085	86%	56%	38%	97%	0%	64%	98%	0%	64%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना व माणिक्य रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मोती व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति

बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल

वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनो से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। दूसरे भाव की शुभता प्राप्ति के लिए

आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको सरकारी क्षेत्रों के दंड़ से बचाव करेगा। वाणी में दार्शनिकता का भाव लायेगा। यह रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। परिवारिक संबंधों में मधुरता लाने में भी लहसुनिया रत्न शुभ फल प्रदान करेगा। धन बढ़ायेगा। पारिवारिक सुखों को बढ़ायेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपके लिए शुभत्व प्रदायक रत्न है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यो में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का ९ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते है। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है. आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे

सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यों में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मूंगा रत्न से शीघ्र निर्णय के कारण शेयर बाजार में सट्टे के कारण आपको हानि उठानी पड सकती है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रमक हो सकते है। आपकी संतान को आपके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव आपकी पेट संबंधित परेशानियों को बढ़ा सकता है। स्वभाव की उग्रता वादि-ववाद का कारण बन सकती है। रत्न प्रभाव से शल्यचिकित्सा की स्थिति भी बन सकती है। चोट और दुर्घटनाओं से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी की स्थिति बन सकती है। जिम और व्यायामशाला में शक्ति प्रदर्शन आपको कष्ट दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको

आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपको जन्म स्थान पर रहने के अवसर कम मिल सकते है। यह रत्न आपको स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल बना सकता है। आपकी सहभागिता ऐसे कार्यो में भी हो सकती है जो धार्मिक व सामाजिक न हो। बातचीत में भाषा की शालीनता का उल्लंघन आपके द्वारा हो सकता है। गोमेद रत्न के कारण वृद्ध अवस्था में आप को सुख की कमी का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से धन हानि के योग भी बन रहे है। आपका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत हो सकता है।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(14/09/2008 - 14/09/2028)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(14/09/2028 - 15/09/2034)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन

शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(15/09/2034 - 14/09/2044)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(14/09/2044 - 15/09/2051)

मंगल की दशा में आपका नीलम, पन्ना, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/09/2051 - 14/09/2069)

राहु की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(14/09/2069 - 14/09/2085)

गुरु की दशा में आपका नीलम, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 14/09/1984

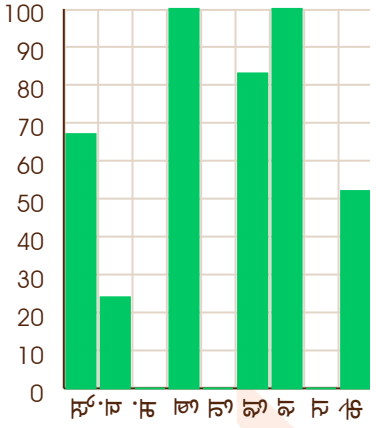

बुध - 14/09/2001

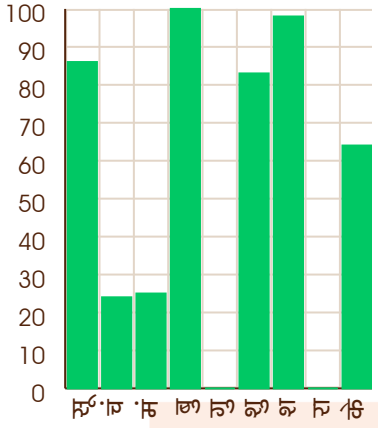

केतु - 14/09/2008

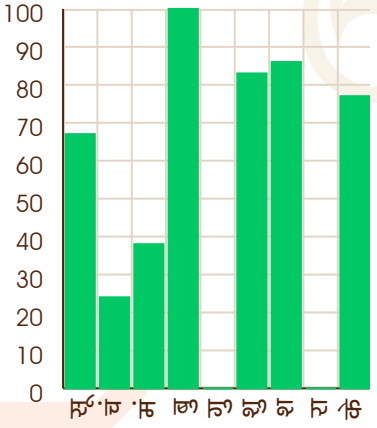

शुक्र - 14/09/2028

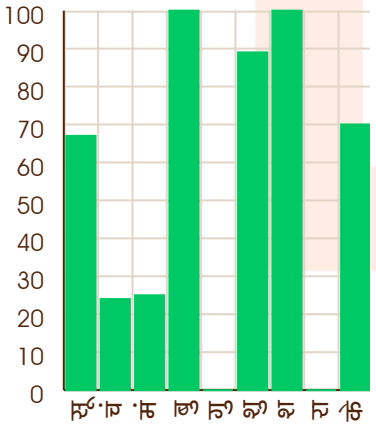

सूर्य - 15/09/2034

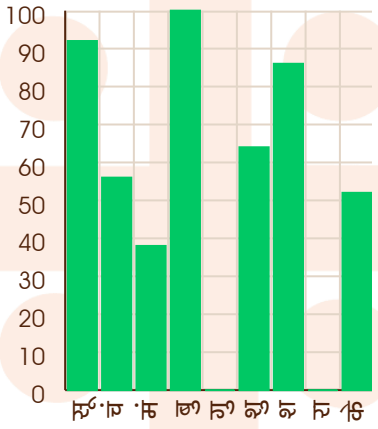

चन्द्र - 14/09/2044

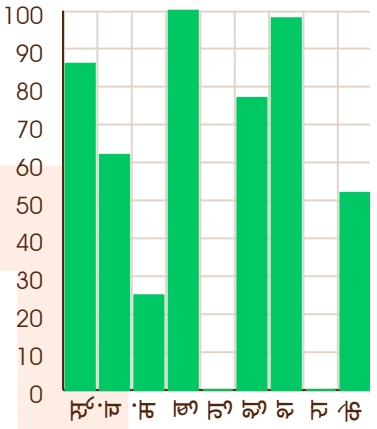

मंगल - 15/09/2051

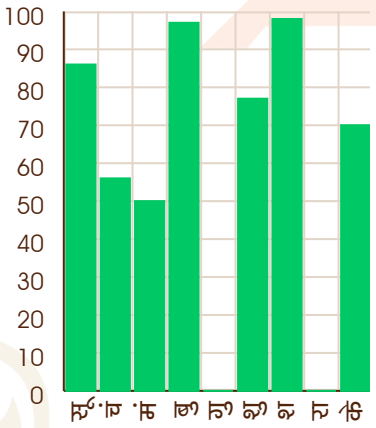

राहु - 14/09/2069

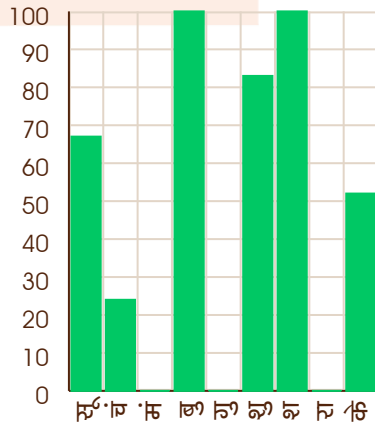

गुरु - 14/09/2085

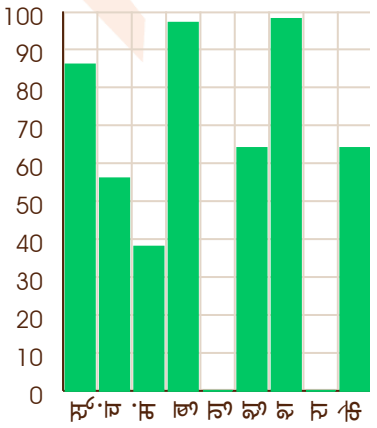

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित हैं। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक संपति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती हैं। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते है। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा हैं, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण

कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति हेंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

आपका मूलांक 1 है तथा भाग्यांक 3 है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है तथा भाग्यांक 3 का स्वामी गुरु है। सूर्य एवं गुरु में सम संबंध होने से दोनों के प्रभावों में समानता रहेगी। आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, गुरु प्रभाव से, समय पर होगी। आपका कार्यक्षेत्र दोंनों के संयुक्त प्रभाव से विस्तृत होगा और लोकप्रियता प्राप्त होगी। अंक 1 तथा अंक 3 दोनों ही आत्मा से संबंध रखते हैं। अतः मूलांक 1 के प्रभाव से जहां आपको आत्मशक्ति का ज्ञान मिलेगा, वहीं

भाग्यांक 3 के प्रभाव से आत्मशक्ति के प्रसार और विस्तार का ज्ञान प्राप्त होगा, अर्थात आपका कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत होगा और आप अधिक से अधिक जन संपर्क में आएंगे। आपका संपर्क क्षेत्र काफी विस्तृत होगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप एक सफल व्यक्ति के रुप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे एवं स्वतंत्रता से निर्णय लेने की सुविधा रहे। आप अपने ज्ञान के द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रियता प्राप्त करेंगे।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 3 के संयुक्त प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 19 से 21 वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हो कर 28 से 30 वर्ष की अवस्था पर अच्छी प्रगति प्राप्त करेगा एवं 37 से 39 वर्ष की आयु पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। आपके जन्म समय मेदिनीय क्षितिज पर वृष लग्न में मीन का नवमांश एवं वृषभ राशि का द्रेष्काण उदित था। उपयुक्त लग्न नवमांश के प्रभाव से आप जब मानवीय जीवन में प्रवेश किए अर्थात् बाल्यकाल से ही आपका जीवन अच्छे विचार से प्रारंभ हुआ। यथा उत्तम प्रकार का भोजन, उदार भावना, उत्कृष्ट साज-श्रृंगार पहनावा आदि अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता है। आप काम शक्ति भावना से प्रेरित हैं, तथा आप अपनी संपत्ति को यथा संभव अखंडित एवं अपव्यय रहित धन कोष की वृद्धि के प्रति पूर्ण रूपेण सतर्क रहने का ज्ञान आप में विद्यमान है। आप धन की महत्ता को भलीं प्रकार जानते हैं, तथा धन संचयन को महत्व देते हैं। आप अपने धन का निवेश एवं व्यय के प्रति अत्यंत सतर्क रहेंगे। तथापि आपकी एक छोटी यह समस्या है कि अकस्मात् आप ठीक निर्धारित समय पर काम के प्रति आलस्य ग्रस्त हो जाते हैं, तथा शीघ्र ही उस कार्य को सुलभ और आसान समझ लेते हैं। आपको इस प्रकार की मनोवृति में बदलाव लाना अर्थात् दमन करना आवश्यक है।

यद्यपि आप सांसारिक सुखों से युक्त, धन से संपन्न एवं अत्यधिक सुसंस्कृत हैं। आप बहुत बड़े धार्मिक तथा धर्मस्थलों की यात्रा भी करते रहते हैं। आप अब तक निश्चित रूप से कई आंशिक यात्रा के क्रम में सामुद्रिक यात्रा करके बहुत व्यापाक रूप से मित्र बनाए हैं और बहुत मात्रा में देश और विदेश के क्षेत्रों में आपके कई घनिष्ट मित्र बन चुके हैं। वे लोग आपके कार्य-कलाप में मुख्य भूमिका निभाते हैं। आप भी उन मित्रों के साथ सहयोगात्मक भावना से यदा-कदा उनकी सहायता के लिए समय-समय पर निश्चित रूप से जाते हैं।

आप मध्यम कद के उन्नत लालट एवं चमकीली आखों से युक्त हैं। आप अधिक समय तक सुंदर स्वास्थ्य से युक्त एवं आनंद प्राप्त करते रहेंगे। परंतु कुछ वर्षों के पश्चात् आपको स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उपस्थित होंगी। यथा मस्तिष्क ज्वर, कब्जीयत फोड़ा फुंसी एवं रक्त दोष से आशंत होंगे। आपको एक बार बीमार होने से परेशानी उपस्थित होगी कि आप दीर्घकालीन रोगग्रत होंगे तथा आपके दौर्बल्यता के कारण बेहोश भी हो जाया करेंगे, तथा आपको स्वास्थ्य लाभ की क्षमता सीमित मात्रा में रहेगी। अतएव आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अन्यथा इस प्रकार ऐसा संभाव्य है कि आप रोग से मुक्त नहीं हो सकेंगे। आपके द्वारा पसंद किया गया जीवन साथी के साथ पूर्ण रूपेण बहुत दिनों तक आनंद प्राप्त करेंगे। परंतु एक बार अपनी इच्छानुसार आश्वस्त होकर सामंजस्य कर लें तो जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

सामान्यतः आपको निर्देश है कि आपका प्रभाव बृष राशीय दृष्टिकोण से प्रभावित है अतः आपके लिए बृश्चिक, मीन, कन्या एवं मकर राशि के व्यक्ति अनुकूल रहेंगे। यदि आप इन राशि वालों से संबंधित रहे तों आपका भौतिकी जीवन सुखमय एवं मधुर रहेगा।

अंततः आप बहुत अधिक सचेत व्यक्ति हैं, अस्तु आपको निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है।

आप लाल रंग का उपयोग अपने जीवन में कदापि नहीं करें। क्योंकि यह रंग आपके लिए प्रतिकूल है। आपके लिए हरा, गुलाबी, एवं सफेद रंग जन्म प्रभाव से अनुकूल है।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए अंक 2 एवं 8 अंक पूर्ण रूपेण प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त अंक 7 एवं 8 अंक आपके लिए आकर्षक है। अंक-1, 3, 4 एवं 6 अंक आपके लिए निष्क्रिय दिन हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्तितिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक धैर्यवान एवं सहिष्णु होते हैं उनकी वाणी में भी मधुरता होती है जिससे अन्य जन उनसे प्रभावित रहते हैं। शारीरिक रूप से भी उनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा स्वभाव से वे शांत तथा उदार होते हैं। साथ ही उनमें परिश्रम करने की अपूर्व क्षमता होती है जिससे जीवन में उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते हैं तथा भौतिक सुख संसाधनों को उनकी प्राप्ति होती है जिनका जीवन में वे सुख पूर्वक उपभोग करते है। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्य कलापों को साहस एवं पराक्रम से सम्पन्न करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता भी बनी रहेगी। अपनी वाणी में आप सामान्यतया मधुर शब्दों का ही उपयोग करेंगे तथा वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। शारीरिक रूप से आप मध्यम कद के व्यक्ति होंगे परन्तु स्वभाव में शांत सहनशीलता तथा उदारता का भाव सर्वदा बना रहेगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने में समर्थ होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इस क्षेत्र में परिश्रम करके वांछित मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि अर्जित करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। स्वपराक्रम एवं उत्साह से आप अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। साथ ही समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश की भी प्राप्ति होगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। यद्यपि यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे परन्तु अवसरानुकूल जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के लिए भी उद्यत होंगे।

आपकी श्रेष्ठ कार्यों को करने में भी अभिरूचि होगी तथा यत्न पूर्वक जीवन में अच्छे कार्यों को सम्पन्न करके अपने प्रभाव में वृद्धि करेंगे। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा तथा उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में यद्यपि आपको किंचित परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु उसके बाद आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्यकलापों को आप अवसरानुकूल सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही पराक्रम का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा जिससे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। राजकार्य करने में भी आप प्रवृत होंगे तथा सामाजिक यश तथा प्रतिष्ठा मिलती रहेगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा लग्नेश शुक्र भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्याराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है। मंगल भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करके उनमें सफलताएं अर्जित करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। कन्याराशि में मंगल की स्थिति से आप किसी भी समस्या का समाधान अल्प समय में ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य एवं धर्म ग्रंथों के अध्ययन आप अल्य मात्रा में करेंगे परंतु भौतिक एवं आधुनिक शास्त्रों के अध्ययन में समर्थ होंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

सप्तमेश की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंग में भी आपकी रूचि होगी परंतु मंगल के प्रभाव से आप यथार्थ एवं भौतिकवादी व्यक्ति होंगे तथा प्रेम प्रसंग असफल होने पर भी आपको परेशानी कम ही होगी लेकिन प्रेम विवाह का योग कम ही बनता है।

आपको प्रथम पुत्र की प्राप्ति में किंचित विलंब का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन कन्या संतति यथोचित समय पर प्राप्त होगी। आपकी पुत्र एवं कन्या संतति बराबर संख्या में होगी। आपकी सन्तति जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा उनकी उन्नति से आप संतुष्टि की अनुभूति करेंगे। लेकिन मंगल के प्रभाव से वे स्वच्छन्द प्रवृति के होंगे तथा अपनी मर्जी के ही अधिक कार्य करेंगे तथा माता पिता की सलाह कम ही लेंगे लेकिन उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव बना रहेगा। माता की अपेक्षा पिता से अधिक लगाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता से ही करवालेंगे। इसके अतिरिक्त आपको बच्चों को स्वावलम्बी बनाना चाहिए तथा उनसे विशेष अपेक्षाएं अल्प मात्रा में ही करनी चाहिए ।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक वे शिक्षा के क्षेत्र में वांछित सफलताएं अर्जित करके उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः जीविकार्जन में उन्हें किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। समाज में अन्य लोग भी उनकी योग्यता एवं कार्य कलापों से प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान एवं आदर में वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुरभाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवती महिला होंगी तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रूचि रखेंगी। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाली होंगी जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका अदभुत सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना दर्शनीय होगी एवं अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि एवं शुक्र ग्रह में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा सतर्क रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी महिला संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भावस्थ शुक्र के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबंधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा ।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबंधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा ससुराल से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग भी अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। साथ ही अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से देवर एवं ननदों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगी जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, नाडी मध्य तथा मेष योनि होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "हे" से प्रारम्भ होगा। यथा हेमराज, हेमेन्द्र आदि।

आप देवताओं की अर्चना द्वारा प्राप्त धन से युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता पूर्ण ढंग से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप परिश्रम पूर्वक अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगे। शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर स्वस्थ तथा सबके प्रिय रहेंगे। आप कफ प्रकृति से युक्त होकर जीवन के समस्त सुखों का उपभोग करते हुए अधिकांश समय व्यतीत करेंगे।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

आप स्वभाव से ही धार्मिक भावों से युक्त रहेंगे तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी। आप के हृदय में चंचलता नहीं होगी अपितु शान्ति रहेगी तथा अपने समस्त कार्यों को अधीरता से नहीं वरन् शान्त चित्त से ही सम्पन्न करेंगे। साथ ही पुत्रों का सहयोग भी आपको आजीवन प्राप्त होगा।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

देवताओं तथा ब्राहमणों के आप भक्त होंगे तथा समयानुसार इनकी पूजा तथा आदर सत्कार करते रहेंगे। आपके पास धनाभाव नहीं रहेगा तथा इससे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा यथोचित आदर की प्राप्ति होगी तथा इस वर्ग में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। अपने बन्धुओं से आप हमेशा सहयोग पाएंगे तथा उनको भी सहयोग प्रदान करेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगे। अपने माता पिता की आप पूर्ण सेवा करेंगे तथा उनकी देखभाल में कोई कसर नहीं छोडेंगे। धर्म के अनुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। समाज में आपका विनयशील व्यवहार रहेगा अतः आप यथोचित सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप अपने समाज में एक सम्माननीय पुरूष भी हो सकते हैं। इस प्रकार आप अपने जीवन में नाना प्रकार के धन तथा वाहन आदि सुखों को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

कर्क राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अपने समस्त कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा आजीवन विपुल धन से युक्त होकर धनवान कहलाएंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा पराक्रम से भी युक्त रहेंगे। आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के होंगे तथा धर्म में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी। विद्वानों तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनका स्नेह तथा आर्शीवाद आपको हमेशा उपलब्ध रहेगा। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित करने में समर्थ रहेंगे। यदा कदा आप क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे तथा अत्यन्त दुःख के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान होंगे। साथ ही आप अन्य कलाओं के भी जानकर होंगे। शारीरिक बल की भी आप में यदा कदा न्यूनता रहेगी। साथ ही आप घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ मिश्रित होगी तथा रूप अत्यन्त सुन्दर तथा तेज से परिपूर्ण होगा। आप स्वयं अपने परिश्रम से अर्जित धन से धनवान बनेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के आप भक्त होंगे तथा इनके प्रति आपकी हार्दिक श्रद्धा होगी। कुलीन जनों की सेवा तथा सहयोग करने में आप तत्पर रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादि नाना प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आपकी अभिरूचि रहेगी तथा अभ्यास एवं परिश्रम द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप अन्य कलाओं के विषय में भी जानने वाले होंगे। आपका आचरण उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में विहार करना आनन्द दायक प्रतीत होगा। समाज में आपकी कीर्ति चारों तरफ व्याप्त रहेगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा तथा जल क्रीड़ा से आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। आप बहुत से भवनों के निर्माता होंगे या आप बहुत से मकानों के स्वामी भी हो सकते हैं। आपका कद सामान्य रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको प्रियकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या अल्प रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटि्र्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सम्पत्तियों तथा द्रव्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। ज्योतिष शास्त्र के आप प्रेमी तथा अच्छे ज्ञाता होंगे। आपका जीवन संघर्ष से परिपूर्ण रहेगा। जीवन में हमेशा उतार चढ़ाव आते रहेंगे। आप केवल प्रेम पूर्वक ही वश में किये जा सकते हैं या आपसे कोई कार्य करवाया जा सकता हैं। बलपूर्वक या दबाव से आप किसी की बात को नहीं मानेंगे चाहे वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति ही क्यों न हो। साथ ही मित्रों के

प्रति आपके मन में पूर्ण आदर की भावना रहेगी अतः आप मित्रों के मध्य उनके प्रिय रहेंगे। आप की जीव पालन, उद्यान, बगीचा या जलाशयादि के निर्माण में भी अभिरूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य हमेशा आपका सहायक रहेगा तथा भाग्यबल से महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा धैर्य से समस्त आचरण करेंगे। आप मकान के स्वामी भी होंगे। आप अपने अधिकांश समय को भ्रमण या यात्राओं आदि में व्यतीत करेंगे तथा अन्य जनों से आपका विनम्र व्यवहार रहेगा।

कृतज्ञता के गुण से भी सुसम्पन्न रहेंगे। आप राज्य के किसी उच्च पद को सुशोभित करने में समर्थ हो सकते हैं। सत्य तथा प्रियवाणी बोलने में आप पूर्ण रूप से सफल होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी उत्तम तथा मधुर होगी जो सुनने वाले को प्रिय लगेगी। आप सरल बुद्धि से युक्त होंगे तथा सादगी से अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष प्रकट करेंगे। साथ ही सादगी से अन्य के विचारों को ग्रहण करने की भी आपमें प्रतिभा रहेगी। आप अल्प तथा शुद्ध सात्विक भोजन करने में रूचि रखेंगे। गुणों के विषय में आपका विषदज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी महापुरूषों द्वारा वर्णित गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही धन, ऐश्वर्य वैभव तथा नाना प्रकार के द्रव्यों से भी आप सदैव युक्त रहेंगे।

आप सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर के स्वामी होंगे तथा स्वभाव से ही प्रकृति दानशील रहेगी। फलतः समय समय पर यथाशक्ति जरूरत मन्द लोगों को दान देते रहेंगे अतः समाज में मानप्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। सादगी आपको पसन्द रहेगी तथा किसी भी दिखावे से दूर रहेंगे। समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आप सम्मानित हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही अति उत्साही प्रकृति के पुरुष होंगे तथा जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उत्साह से उसे सम्पन्न करेंगे। युद्धविद्या में आप निपुण रहेंगे तथा समाज में अपने प्रभाव को बनाए रखेंगे। आप पराक्रमी भी होंगे तथा पराक्रम से ही अधिकांश कार्यों को पूर्ण करेंगे। आप परोपकारी स्वभाव के होंगे तथा दूसरों की भलाई तथा सहयोग करने के लिए आप तन मन धन से हमेशा तत्पर रहेंगे तथा धन धान्य से पूर्ण रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा

अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा अनिष्ट फलदायी हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त स्थितियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय शुभ न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी में बाधा या अन्य कष्ट हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान की पूजार्चना करनी चाहिए या नियमित रूप से शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। इसके साथ ही सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल, मिश्री इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए एवं सोमवार के दिन उपवास रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि न होगी। आप मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण रहेंगे। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगे। हर प्रकार की शरारत का जवाब

देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव के होंगे। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना के मालिक होंगे। गृहस्थी, धन-दौलत के भंडारी होंगे। आपके परिवार में मर्दों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में स्त्रियों में इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पत्नी से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगे। आपके पिता को कम और माता को अधिक सुख मिलेगा। माता या पिता में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगे। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्या दान करें।
2. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।
3. लड़के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
4. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल पांचवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप शांत स्वभाव के हैं। आपको अपने जन्मस्थान से दूर निवास करना पड़ सकता है आप बहुत यात्रा करेंगे। आपको धन-संपदा मिलेगी। पत्नी एवं संतान सुख प्राप्त होगा। आपकी औलाद अच्छी और सुखी रहेगी। आपका बेटा तथा पोता भी धनवान होगा। आप धनवान संतान के पिता होंगे। आपकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ेगी आप अमीर होते चले जाएंगे। आप या आपके खानदान में कोई हकीम या डॉक्टर हो सकता है। आपके बुजुर्गों की माली हालत अच्छी होगी। प्रत्येक वर्ष जन्मदिन के बाद से उन्नति और तरक्की होती चली जाएगी। आप अपने भाई या बाप-दादे की हैसियत से ऊंचे दर्जे के व्यक्ति होंगे। आपकी पुत्र प्राप्ति के बाद भाग्योन्नति होगी। आपके भाग्य के संबंध में अच्छा असर होने की उम्मीद है।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, आपने परिवार के लोगों से बिना कारण दुश्मनी रखी, सट्टा-जुआ आदि खेला, संतान या पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपकी विद्या अधूरी, पेट में खराबी, कानों की तकलीफ, घुटने या पैरों में किसी प्रकार का कष्ट या जोड़ों का दर्द हो सकता है। संतान प्राप्ति या संतान सुख में बाधा की आशंका है। स्त्री को अठराह की बीमारी जो संतानोत्पत्ति में विघ्न कारक होती है, हो सकती है। सट्टा-जुआ आदि में हानि का योग है। पुत्र से क्लेश, परिवार में किसी को दमा या मिरगी का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब-बीयर न पियें, मछली न खायें।

उपाय :

1. घर में नीम का पेड़ जमीन या गमले में लगावें।
2. रात को लोटे में पानी भरकर सिरहाने रख कर सुबह किसी पौधे या बाग-बगीचे में डालें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जद्दी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्त्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगे। आपकी और आपके पिता की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छे, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाले होंगे। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या के माहिर होंगे।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों के शिकार बनेंगे। आप यदि साधू हो जाएं तो दुःखी रहेंगे। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगे जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान होंगे। स्त्री, संतान सुख मिलेगा और स्वस्थ एवं खुश रहेंगे। आपकी यात्राएं अधिक और सफल

होंगी। आपकी पत्नी अपनी इच्छा से सभी काम करेगी। विवाह के बाद घर में कुआं खुदवाना शुभ रहता है। आपकी स्त्री और संतान का बुरा प्रभाव 34 वर्ष की आयु में दूर होगा। शादी के चार साल तक खूब ऐशो आराम पाएंगे। आप में आध्यात्मिक रुचि और शक्ति निश्चित होगी। आपको राजयोग के संयोग से जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि आप मामा और मौसी के कारोबार में साथ दें तो उनका व्यापार सफल होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन सुख मिलेगा। माता स्वस्थ और बहुत दिनों तक आपको सुख देगी। आप अपने खानदान या गांव, देश-विदेश में प्रसिद्ध होंगे। आप उत्तम भोजन, भ्रमण एवं शयन के शौकीन होंगे। नौकरी-व्यापार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सामान्यतया आप सरकारी विभाग से लाभ पायेंगे, उच्च पद या राजकीय सुख से युक्त रहेंगे।

यदि आपने सुरमें से संबंधित काम किया, 21-22, 24-25 वर्ष आयु में विवाह किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी माता और आपकी पत्नी में झगड़ा होता रहेगा। आपके लिए इश्क और प्रेम आपकी तबाही का कारण बनेगा। आपकी पत्नी आपके खानदान के लिए मनहूस होगी। गंदे प्रेम संबंध का बुरा फल मिलेगा। आप नशे आदि में पड़ कर बर्बाद हो सकते हैं। जीवन में दो विवाह संभव हैं। पत्नी के गर्भाशय में रोग या गर्भाशय निकाल दिया जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1. कुएं में केसर डालें।
2. चार आड़ू की गुठली में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके जन्म के बाद आपकी पैतृक संपत्ति और पिता का धन बढ़ेगा। आप इंजीनियर, डाक्टर बन सकते हैं। आप शक्की स्वभाव के होंगे। लोहा/लकड़ी और नमक, आग से संबंधित कामों से अधिक लाभ होगा। आपके धन में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता को धन की कमी नहीं रहेगी। आपकी आयु पर कोई भी बुरा असर नही पड़ेगा।

यदि आपने झूठ बोला और बदनीयती रखी, व्यसनों में मदहोश रहे, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा भी अधूरी रह जाए या इच्छित शिक्षा नहीं मिले, ऐसी आशंका है। आप आलसी, अभावग्रस्त और अस्वस्थ रह सकते हैं। आपकी पत्नी, दौलत पर बुरा

असर पड़ सकता है। आपके लिये खानदानी या जद्दी काम में बरकत नहीं होगी। आप चोरी, झूठ या धोखाधड़ी करने में भी पीछे नही रहेंगे। शरीर पर अधिक बालों का होना निर्धनता का सूचक है। आप अगर सरकारी नौकरी करते हैं तो नौकरी का फल विशेष मंदा रहेगा। सरकार से बहुत अच्छे लाभ का योग नहीं है। पत्नी को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके साथ चोरी, धोखेबाजी, संतान को कष्ट या कुछ भी हो सकता है। माता को कष्ट और आपको दुःखी होना पड़े ऐसी आशंका है। आपका कारोबार बिगड़ सकता है या पिता-दादा के कारोबार का दिवाला भी निकल सकता है। भाग्य के बिगड़ने की आशंका है। आग से जलने का भय है। विद्या अधूरी, पेट में खराबी, धन की तंगी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विवाह या पुत्र जन्म आदि पर खुशी के समय ढोल-बाजे आदि न बजाएं।
2. शराब पीना, मांस खाना और इश्कबाजी दूर रहें।

उपाय :

1. वीरान जगह में सुरमा दबायें (नौकरी-व्यापार में तरक्की के लिये)।
2. बंदर को गुड़ केला खिलायें (धन की तंगी के समय)।
3. वट-वृक्ष की जड़ के दूध का तिलक करें (स्वास्थ्य खराब के समय)।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप को अकस्मात धन का लाभ भी मिलेगा। 28 वर्ष की आयु में भाग्य परिवर्तन के अच्छे योग हैं। आपको कोई मदद करने वाला नहीं होगा मगर आप स्वयं अपने हौसले और परिश्रम से प्रगति करेंगे। आप दिलेर हैं। परिवार में आपकी इज्जत बहुत होगी। आपके काम-काज और रोटी के साधन परिवर्तनशील हैं। आप अपनी मदद स्वयं करेंगे क्योंकि आपका कोई मददगार नहीं होगा। आपका सोया हुआ भाग्य जागेगा तो उजड़े खजाने भी भर देगा। ऐशो-आराम के सभी सामान उपलब्ध होंगे।

यदि आपने काले काने, निःसंतान, गंजे या अंगहीन व्यक्ति से झगड़ा किया, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की, घर में रसोई दक्षिण दिशा में रखी, तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपकी मृत्यु दुर्घटना से संभव है। जन्म के आठवें माह के बाद ही शरीर कष्ट प्रारंभ हो सकता है। आपको धन के झगड़े में नुकसान हो सकता है। आपको बेबसी रोग से कष्ट की आशंका है। पेट बड़ा या पेट में कीड़े की शिकायत भी हो सकती है। आपके जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। बेईमानी से कमाये धन से आपको आठ गुणा हानि हो, ऐसी आशंका है। अच्छे खानदान में जन्म लेकर भी काफिर बनेंगे या बुरी सोहबत से बदनामी मिलेगी। कई बार नीच कर्म भी करना पड़ सकता है। आप बेहाल रहेंगे। अचानक धन की हानि, बीमार और

दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका है। आपकी अकस्मात् मृत्यु संभव है। आपके पिता के लिए अशुभ तथा जद्दी मकान में भी क्षति के योग हैं। यात्रा में भी कोई क्षति की आशंका बनती है। कान, टांग और रीड़ की हड्डी, पांव आदि पर बुरा असर पड़ सकता है। बिजली, जंगल और पुलिस विभाग की नौकरी से हानि होगी। लोगों का भला करें, बुराई पायें। बुरे कामों के कारण सजा सुनने से पहले या सजा पाने के बाद फरार होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दक्षिण की दीवार में रसोई न रखें।
2. दक्षिण दिशा के द्वार वाले मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के ;स्मंकद्ध के टुकड़े जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप छोटी उम्र में कमाना सीखेंगे, सरकार से वजीफा या धन लाभ मिले, कमीशन एजेंट का कार्य या खजांची का कार्य भी लाभदायक रहेगा। आप अच्छी नौकरी-व्यापार करेंगे। आपको अपने व्यवसाय के सिलसिले में बार-बार यात्रा करना लाभदायक रहेगा। आप स्थल की यात्रा बहुत करेंगे। आप बड़ी संपदा के मालिक बनेंगे आपका धन अच्छे कर्मों में खर्च होगा। युवावस्था के पश्चात् जीवन सुख से बीतेगा। आपको पिता की संपत्ति मिलेगी। आपकी लाखों-करोड़ों की आई-चलाई मगर जितना धन दलाल को मिलता है, उतना ही धन आपको मिलेगा। आप अपनी कमाई से अपना जीवन निर्वाह करेंगे। जीवन खुशहाल रहेगा। लाखों की धन-जायदाद सुरक्षित रहेगी। आमदनी ठीक होती रहेगी। आप अपने भाग्य पर संतुष्ट रहेंगे। आपको भाग्य का शुभ फल प्राप्त होगा। आपको अच्छा गृहस्थ सुख मिलेगा। अपने जीवन में उन्नति करेंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपको अपनी भूमि, भवन का लाभ मिलेगा।

यदि आपने दो विवाह किये, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, सट्टा, जुआ आदि खेला तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से अगर आपका चाल-चलन खराब हुआ तो बुढ़ापा दुःखमयी व्यतीत होगा या संतान सुख नहीं मिलेगा। जुएं-सट्टे के काम में हानि होगी। शराब-बीयर पीना हानिकारक है। तबदीली की शर्त होगी, तरक्की की कोई शर्त न होगी। जीवन के 16वें तथा 22वें वर्ष में शारीरिक कष्ट की आशंका है या जीवन में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. नकली सोना न पहनें।

उपाय :

1. कन्याओं की सेवा करें।
2. स्त्री की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों

का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति प क्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता

ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के

द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके

सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण

कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा

रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे।

अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्या ओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो

सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी-मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें। कोई बड़ा-बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु केछ्छ्छ्छ्छ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे - सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए

हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है। आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान-सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं- जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु

22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिवर्तन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे- जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां-बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घ ूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा

होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष रत्न धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ-साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा-पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख-सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद-विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन-देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे

परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य

सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई-बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घरागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा-दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो

व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ में अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान-सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक

जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यो में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि

आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(14/09/2008 - 14/09/2028)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 14/09/2008 को आरम्भ और 14/09/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह मीन राशि में उच्च का और कन्या में निम्न का होता है। यह स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि दशम भाव पर है और इस भाव पर इसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। चतुर्थ भाव माता, भवन, घरेलू वातावरण, निजी मामलों, गुप्त जीवन, वाहन, उद्यान, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, जल, दूध, नदी तथा झील का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और भाव को प्रबलित कर रहा है जो सुख स्थान का भाव है। इसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी तथा आप सामान्य रूप से जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र चतुर्थ भाव में भाव को प्रबलित कर रहा है। यह अचल संपत्ति और वाहन का भाव भी है। इस दशा काल में आप एक नया घर या नई गाड़ी ले सकते हैं। आपकी जीवन चर्या में उन्नति तथा आनन्द में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

शुक्र, एक योग कारक ग्रह, चतुर्थ भाव में स्थित है और आपकी जन्म कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है, जो जीवन चर्या और व्यसाय का द्योतक है। इस दशा काल में आप जमीन-जायदाद के लेन-देन में व्यस्त रहेंगे और इसी से संबंधित व्यवसाय करेंगे। आपकी माता भी आपके व्यावसायिक जीवन को विकसित करने में सहायक होंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप भावुक होने के साथ-साथ धनवान, आदरणीय, और खुशहाल होंगे। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा तथा आप परम्परा और मूल्यों का आदर करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(14/09/2024 - 16/07/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/09/2008 को प्रारंभ हुई थी और वद 14/09/2028 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 14/09/2024 जो आपके लिए 16/07/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

पंचम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान पिपासा बढ़ेगी, किसी नये विषय का अध्ययन प्रारंभ कर सकते हैं। बुद्धिमान बनेंगे, प्रसन्न रहेंगे। अपने से बड़ों के भी सलाहकार बन सकते हैं। अध्यापक या व्याख्याता हो सकते हैं। आपकी रुचि विषय-वासना में बढ़ सकती है, जिसे नियंत्रण में रखना श्रेयस्कर रहेगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(16/07/2027 - 14/09/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/09/2008 को प्रारंभ हुई थी और 14/09/2028 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 16/07/2027 को प्रारंभ होकर 14/09/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आग, चोरी, जुए या मुकदमेबाजी आदि के कारण धनहानि हो सकती है। कुछ कर्ज़ या देनदारी प्रकाश में आ सकते हैं, जिनका भुगतान कठिन होगा। चिंताएं बढ़ेंगी। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। धर्म ओर अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की उपासना करें और मंगलवार, शनिवार को उपवास करें। उपवास को केवल मीठी वस्तुओं से तोड़ें और नमक का प्रयोग न करें।

महादशा :- सूर्य
(14/09/2028 - 15/09/2034)

सूर्य की महादशा 14/09/2028 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष के बाद 15/09/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। सूर्य आत्मा, शासन, विद्युत और प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है और पंचम भाव शिक्षा, संतान तथा बुद्धि का सूचक है। अतः इस दशा में आपको संतान से सुख मिलेगा। आपकी मंत्र शास्त्र में रुचि रहेगी और आपको प्रतिष्ठा तथा सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

आज का ग्रह सूर्य आपको उत्तम स्वास्थ्य और शक्ति देगा। आपका स्वास्थ्य आम तौर से उत्तम रहेगा। सूर्य आपको कान्ति तथा जीवन-शक्ति देगा। आपकी इच्छा-शक्ति उत्तम होगी और आपका बल तथा व्यक्तित्व सुन्दर होंगे। मानसिक स्तर पर भी आप मजबूत होंगे और आप में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा रहेगा। आप महत्वाकांक्षी तथा अन्तर्दर्शी होंगे। आपको ताप-संबंधी रोगों, मामूली पित्तदोष तथा पाचन-संबंधी पीड़ाओं के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। शुद्ध भोजन तथा अन्य गतिविधियां आवश्यक हैं।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको सट्टे व निवेश से । धन तथा जीवन की सारी सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। आप भाग्यशाली और समृद्ध होंगे। आपको अपने व्यवसाय या व्यापार में कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। एकादश भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण आपको पिता से धन प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आपको कोई शक्तिशाली तथा अधिकारिक पद मिल सकता है। आप सलाहकार का कार्य करेंगे। आपकी जीवन वृत्ति से संबद्ध अचानक कुछ घटनाएं घट सकती हैं। कोई भी घटना आपके लिये लाभदायक होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी, आप उच्च पद प्राप्त करेंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है या वे यात्रा पर जा सकते हैं जो अन्ततः उनके लिये लाभदायक होंगे। व्यापार और व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ होगा। जहाँ तक आपकी नौकरी और कार्य का प्रश्न है, यह दशा आपके लिए अति उत्तम है जिसमें आपको लाभ और शक्ति की प्राप्ति होगी और आप प्रभावशाली होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके बच्चे समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख प्राप्त होगा। आपकी क्रियाएं सुखकर होंगी,। आपके अनेक मित्र होंगे क्योंकि आप स्वाभाविक रूप से उदार हैं, आपका स्वाभाव अच्छा है ओर आप निष्कपट तथा समाज के प्रति निष्ठावान हैं। आपको अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी को उच्च पद, सरकार से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके पिता के भाग्य में वृद्धि होगी। उनकी आध्यात्मिक तथा दान पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे-भाई-बहनों को साहित्य अथवा संवादपटुता के क्षेत्र में लाभ

हो सकता है और उन्हें सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी में लाभ मिलेगा और वे पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा, खासकर उच्चतर शिक्षा, उत्तम होगी। आपके लिये तकनीकी शिक्षा लाभदायक होगी। आपकी ज्ञानशक्ति उत्तम है और आपको इसका सुन्दर उपयोग करना चाहिए।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(14/09/2028 - 02/01/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 02/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। शेयर इत्यादि में भी लाभ संभव है। संतान पढ़ाई आदि में नाम कमाएगी। आपको उच्चपद की प्राप्ति हो सकती है या सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। मंत्र, योग, धार्मिक प्रवचनों आदि में रुचि बढ़ेगी।

आपके पिता के लिए समय भाग्यशाली है। उनकी प्रसिद्धि बढ़ेगी। वे अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए समय संतोषजनक है। जीवनसाथी की आय बढ़ेगी। मामा के परिवार में खर्चा बढ़ सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायतें जैसे बुखार, पेट की खराबी आदि से बचाव करना हितकर रहेगा। भाग्यसंवर्धन के लिए रविवार के दिन सूर्योदय के समय गेहूं, लाल-पुष्प और चंदन आदि का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(02/01/2029 - 03/07/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 03/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको धन, उच्चपद और सत्ता की प्राप्ति होगी। परिश्रम द्वारा संपदा अर्जित होगी। सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगे। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं होंगी।

आपके लेखन, ज्ञान और प्रकाशनों से जनमानस प्रभावित होगा। उच्च शिक्षा से लाभ मिलेगा।

संतान से खुशियां मिलेंगी। खेलकूद, जोखिम भरे कार्य और नाटकों में रुचि रहेगी। आप में कुछ बेचैनी की प्रवृत्ति रहेगी और आप परिवर्तन के इच्छुक रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। मामा के जीवन में उत्थान आएगा। माता के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पिता के व्यवसाय और भागीदारी में प्रगति होगी। प्रतिद्वंद्वियों के साथ आपको निडर होकर व्यवहार करना चाहिए।

आपको गले, छाती और स्नायुतंत्र के रोगों के विरुद्ध सावधान रहना चाहिए। अत्यधिक परिश्रम नहीं करें। शुभत्व में वृद्धि हेतु सोमवार को व्रत करें और सफेद वस्तुओं का

दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(03/07/2029 - 08/11/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 08/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में नौकरी में परिवर्तन हो सकता है। आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के लिए आर्थिक रूप से समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी धर्म या अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। मामापक्ष के लोगों को धनहानि हो सकती है। आपको जायदाद से लाभ बढ़ सकता है।

आपके पिता को किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। वे वर्तमान मकान में कुछ परिवर्तन कर सकते हैं। माता जायदाद क्रय कर सकती हैं। छोटे भाई-बहनों को व्यवसाय में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना चाहिए। बड़े भाई-बहनों के परिवार में तनाव हो सकता है।

आपको आर्थिक लाभ होगा। कुछ अतिरिक्त खर्चे हो सकते हैं। व्यापारियों को अतिरिक्त निवेश करना पड़ सकता है। सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है पर सावधानी आवश्यक है। निवेश से पूर्व विस्तृत विश्लेषण करना ठीक रहेगा।

उदर और हृदय से संबंधित रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, गुड़ और लाल दाल का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(08/11/2029 - 03/10/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 08/11/2029 को प्रारंभ होकर 03/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में अप्रत्याशित, अचानक परिवर्तन हो सकते हैं। भाग्य मध्यम रहेगा। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। रहस्यवाद और प्राच्यविद्या में रुचि होगी। परिवार से कुछ दिनों के लिए अलगाव हो सकता है। घर में शांति बनाए रखें। मन को तसल्ली देने के लिए मानसिक और शारीरिक तौर पर सक्रिय रहें।

आपके पिता के भारी खर्चे हो सकते हैं। माता की आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। भाई-बहनों को आर्थिक लाभ होगा, भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय होगी। आपकी संतान को शिक्षा में परिश्रम करना चाहिए। अगर वे नौकरी में हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारीगण नये अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

छोटी व्याधि कभी-कभी बड़ा रूप धारण कर लेती है, अतः स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अस्थियों और मस्तिष्क के रोगों से बचाव करें। कष्ट से बचने के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान जी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(03/10/2030 - 22/07/2031)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 03/10/2030 को प्रारंभ होकर 22/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको विरासत या किसी वसीयत आदि से लाभ हो सकता है। शुभग्रह बृहस्पति आपको धन, सौभाग्य प्रदान करेंगे। प्राच्य विद्या आदि में रुचि हो सकती है। धन प्राप्त होगा। अध्यात्म में रुचि होगी, धार्मिक स्थल की यात्रा संभव है। दान-धर्म में भाग लेंगे। वाहन द्वारा लाभ होगा। माता के साथ संबंध मधुर होंगे।

आपके जीवनसाथी को नाम, प्रसिद्धि, शत्रुओं पर विजय, यात्राएं, धन में वृद्धि संभावित हैं। आपके पिता की लंबी यात्रा हो सकती है, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी और अध्यात्म में रुचि की संभावना है। भाई-बहनों को मातहतों से लाभ होगा, स्पर्धा में विजय मिलेगी, धन प्राप्त होगा। माता को निवेश में लाभ, सुख-समृद्धि प्राप्त होंगे। आपकी संतान भविष्य के लिए सुदृढ़ नींव रखेगी। उन्हें धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित परिणाम पाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। वेतन बढ़ सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के संपर्क बढ़ेंगे, अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

बदहज़मी, मधुमेह, जिगर-तिल्ली की बीमारी, श्वसनतंत्र के रोगों से बचें। कष्टों से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(22/07/2031 - 03/07/2032)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 22/07/2031 को प्रारंभ होगी और 03/07/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

आप शत्रुओं का नाश करने में सफल होंगे। विरोधियों और बीमारी से लड़ने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। आपका विवाह हो सकता है। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी।

आप किसी संस्था या विभाग के अध्यक्ष बन सकते हैं। अगर सरकारी नौकरी में हैं तो सफल रहेंगे।

जीवनसाथी को धन मिल सकता है। अचल संपत्ति भी क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा। माता को खेती की भूमि से लाभ होगा; वे तीर्थयात्रा पर जा सकती हैं। आपके भाई-बहनों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे। उन्हें प्रतिष्ठित मित्रों से लाभ होगा। आपके बच्चों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे, मगर विवाद से बचें।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्य और धन का संकेत है। परामर्शदाताओं की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अत्यधिक खर्चे से सावधान रहना चाहिए।

स्नायुतंत्र की देखभाल करें। थकान से बचें। कष्टों से छुटकारे के लिए शनि की आराधना और काली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(03/07/2032 - 10/05/2033)

आपकी सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 03/07/2032 को प्रारंभ होकर 10/05/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। ललित कलाओं और कविता में रुचि रहेगी। आपको परामर्शदाता के रुप में कार्य करने का निमंत्रण मिल सकता है। आपकी अध्यात्म और वेदों में रुचि हो सकती है। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। आपको प्रसिद्धि मिल सकती है। आपको खेलकूद, साहित्य, कला और मनोविज्ञान आदि में दिलचस्पी हो सकती है। आपकी चिंतनशक्ति और कल्पना प्रखर रहेंगी जिनसे आप नये विचारों का प्रतिपादन कर सकते हैं। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

संतान से सुख मिलेगा। जीवनसाथी सा व्यापार में साझेदार का जीवन सुखी और सुविधापूर्ण होगा। आपके पिता की यात्राएं होंगी और धर्म में रुचि रहेगी। माता की आय में वृद्धि होगी। भाई-बहनों को व्यापार में लाभ होगा। संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी और विभिन्न गतिविधियों में उत्साह बना रहेगा।

व्यापारियों के कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। सेवारत जातकों का तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

स्नायुतंत्र, मष्तिष्क के रोगों से बचाव करें। हरी वस्तुओं जैसे हरे वस्त्र, हरी दाल आदि का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(10/05/2033 - 14/09/2033)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/05/2033 को आरंभ होकर 14/09/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। धन संचित होगा और सब सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। रुपये के लेन-देन में सावधान रहें, क्योंकि मामूली नुकसान हो सकता है। अगर सतर्कता से काम करेंगे तो शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अप्रत्याशित धन मिल सकता है। अध्यात्म में सफल रहेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनागम होगा। परिवार से सकारात्मक संपर्क बनाये रखें।

आपके जीवन साथी को परिवारजनों से मधुर संबंध रखने चाहिएं। पिता भाग्यशाली रहेंगे और कर्ज़ से मुक्ति पाएंगे। माता को सफलता मिलेगी, वे भूमि क्रय करेंगी, यात्रा संभव है। भाई-बहनों के कार्य या निवास में परिवर्तन हो सकता है, माता से संभव मधुर रहेंगे, शिक्षा उत्तम होगी और अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

आपकी संतान सफल होगी; आपको उनसे अच्छे संबंध बनाये रखने चाहिएं। उन्हें तकनीकी कार्य मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिणाम मिश्रिम रहेंगे, उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को आर्थिक स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। व्यापारियों को ज्यादा पांव नहीं फैलाना ही श्रेयस्कर होगा।

संक्रमण, फोड़े, नेत्र रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगलवार, शनिवार को व्रत करें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(14/09/2033 - 15/09/2034)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप सुखी और संतुष्ट रहेंगे। माता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। परिवार के लोग और मित्रों का आपसे प्रेम बढ़ेगा। वाहन, अचल संपत्ति और आभूषण खरीद सकते हैं। आपका प्रभाव और शक्ति बढ़ेंगे, व्यापार से लाभ होगा, धनार्जन होगा और सुखद यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार भाग्यशाली होंगे। पिता को व्यापार में लाभ होगा। माता को घरेलू सुख, सुविधाएं, समाजसेवा के अवसर मिलेंगे। भाई-बहनों को धन, पारिवारिक सुख, उत्तम स्वास्थ्य का योग है। आपकी संतान को शिक्षा पर अधिक ध्यान देना

चाहिए क्योंकि उनका मन मनोरंजन की ओर अधिक रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन, सौभाग्य, आकांक्षाओं की पूर्ति का योग है। परामर्शदाताओं के लिए लाभ, कार्यक्षेत्र में प्रगति का संकेत है। व्यापारिकयों को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी, लक्ष्य की पूर्ति और लघु यात्राएं होंगी।

छाती, गले और नेत्रों के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गरीबों को, विशेषकर बेसहारा स्त्रियों को दान दें।

महादशा :– चन्द्र
(15/09/2034 - 14/09/2044)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 15/09/2034 को आरम्भ होगी और 14/09/2044 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

तृतीय भाव के स्वामी की अपने ही भाव में स्थिति आपको साहित्य, ज्योतिष और पुराणों के अध्ययन की ओर प्रवृत्त करेगी। आपकी ईश्वर में निष्ठा होगी। पत्नी से समर्थन किसी भी स्थिति में कम नहीं होगा।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(15/09/2034 - 16/07/2035)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 15/09/2034 को प्रारंभ होकर 14/09/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 15/09/2034 को प्रारंभ होकर 16/07/2035 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप उपरोक्त क्षेत्रों में विफलता के शिकार हो सकते हैं। स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। दुर्घटना से सावधान रहें। आपके संवेदनशील होने के कारण छोटे भाई-बहनों से संबंध बिगड़ सकते हैं। धनहानि भी संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए दायें हाथ की अनामिका में चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का असली मोती धारण करें। यह कार्य सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि के उपरांत चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए करें। अंगूठी धारण करने से पूर्व उसे दूध से धो लें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(16/07/2035 - 14/02/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/09/2034 को प्रारंभ होकर 14/09/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 16/07/2035 को प्रारंभ होकर 14/02/2036 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप में क्रोध, छल-कपट की भावना में वृद्धि होगी। उदर रोग आदि व्याधियों से ग्रस्त हो सकते हैं। मायूसी बढ़ेगी। मन विचलित रहेगा। आपके जीवनसाथी और संतान का समय कष्टप्रद रहेगा। सामान्यतः आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा मगर जल्दबाज़ी में निर्णय लेने के कारण बाद में पछताएंगे। धैर्य धारण करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(14/02/2036 - 15/08/2037)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 15/09/2034 को प्रारंभ हुई और 14/09/2044 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 14/02/2036 को प्रारंभ होकर 15/08/2037 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि समाज में अपमान हो सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़े विवाद से बचें। समय कठिन हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(15/08/2037 - 15/12/2038)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/09/2034 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 15/08/2037 को प्रारंभ होकर 15/12/2038 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है। बृहस्पति अष्टम में स्थित होकर कुंडली के 12,2,4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप कुछ अप्रसन्न रह सकते हैं, मगर दयालु होंगे। आपकी प्रवृत्ति निम्नकोटि की हो सकती है, परंतु दिखावा आप सदाचारी होने का करेंगे। विपरीत लिंग के विधुर/विधवा से संबंध स्थापित कर सकते हैं। प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करें ताकि कोई असम्मानीय स्थिति न उत्पन्न हो।

शुभत्व में वृद्धि ओर अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(15/12/2038 - 15/07/2040)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/09/2034 को प्रारंभ हुई और 14/09/2044 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 15/12/2038 को प्रारंभ होकर 15/07/2040 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3,7,10 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक और परंपराविरुद्ध हो सकते हैं। स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। वातरोगों से बचाव करें। अधिकारी वर्ग अप्रसन्न हो सकता है। सत्ताच्युत हो सकते हैं।

हर कदम पर सावधानी की आवश्यकता है। अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा हुआ नीली रत्न दाहिनी हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार के दिन रात्रि भोजन के बाद, पूजा करने के बाद धारण करें। काले घोड़े की नाल का छल्ला भी दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में शनिवार की रात्रि में धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(15/07/2040 - 15/12/2041)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 15/09/2034 को प्रारंभ हुई थी और 14/09/2044 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 15/07/2040 को प्रारंभ होकर 15/12/2041 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध पत्रिका के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और एकादश के कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। बुद्धि बलवती होगी। मंत्र शास्त्र भी पढ़ेंगे। किसी के सलाहकार भी बन सकते हैं।

वासनाओं में वृद्धि संभव है। सावधानी बरतना आवश्यक है। ऊर्जा के सकारात्मक प्रयोग के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(15/12/2041 - 16/07/2042)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/09/2034 को प्रारंभ हुई ओर 14/09/2044 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 15/12/2041 को प्रारंभ होकर 16/07/2042 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपको अग्नि, चोरी, मुकदमे या जुए आदि से धनहानि हो सकती है, कर्ज़ चढ़ सकता है। नेत्ररोग या शरीर के दायें भाग में कोई कष्ट हो सकता है। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(16/07/2042 - 16/03/2044)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/09/2034 को प्रारंभ होकर 14/09/2044को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 16/07/2042 को प्रारंभ होकर 16/03/2044 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उस पर अपना शुभ प्रभाव अर्पित कर रहा हैं

इस अवधि में आप संगीत में रुचि लेंगे, बहुत से मित्र होंगे, वाणी में मधुरता होगी और माता से प्रेम बढ़ेगा। वाहनसुख और खुद का मकान संभव हैं। धर्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। घरेलू कार्यों में समय देंगे। सुख, सुविधाएं, संतोष प्राप्त होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

महादशा :- मंगल
(14/09/2044 - 15/09/2051)

मंगल की महादशा 14/09/2044 को आरम्भ और 15/09/2051 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। इसके पहले आपकी चन्द्र की 10 वर्ष की महादशा चल रही थी। चन्द्र के अष्टम भाव का स्वामी होने के कारण आपको अचानक धन की प्राप्ति, अप्रत्याशित विकास, रहस्य-विज्ञान में रुचि, सट्टे से लाभ और विदेशी स्रोतों से धन का लाभ हुआ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में दैनिक जीवन के प्रति आत्मविश्वास, साहस उत्साह की उत्पत्ति होगी। मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप पित्तदोष, पाचन सम्बंधी गड़बड़ी, सरदर्द, ज्वर और कभी-कभी हृदयगति की गड़बड़ी से ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु ये गम्भीर नहीं होंगे। आपका जीवन सामान्यतः ठीक रहेगा। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा लाभदायक निवेश से लाभ होगा। कभी-कभी खासकर मंगल की महादशा में आपका नुकसान हो सकता है, सावधानी बरतें। फिर भी विदेशी स्रोतों से आपकी आय होती रहेगी। इस दशा में आपका धन-संचय होगा। जीविका के लिए सिविल तथा मेकैनिकल इन्जीनियरिंग, सैन्य सेवा, दवाओं का कारोबार, दन्तचिकित्सक का कार्य, खेल-सामग्री, ताम्बे और खनिज आदि का कारोबार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों

का परिवर्तन होगा और वह लाभदायक होगा। आप अपने कार्यस्थल में जाने जायेंगे, और आपको मान्यता तथा सहयोगियों और उच्चाधिकारियों से सद्भाव की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों-व्यापारियों के कार्य मे भी परिवर्तन और घर परिवर्तन लाभदायक होगा। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको कुछ कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान अप्रत्याशित प्रगति, अचानक धन की प्राप्ति और विदेशी स्रोतों से लाभ की सम्भावना हैं।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। इस दशा में आपको यातायात से लाभ होगा। जमीन-जायदाद के मामले उभरेंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। शनि की अन्तर्दशा में आपकी कुछ छोटी और मंगल तथा सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएँ हो सकती हैं।आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। तकनीकी शिक्षा, गणित, लेखा, इन्जीनियरिंग, विज्ञान आदि का अध्ययन आपके लिए लाभदायक होगा। आपको परीक्षा में सफलता मिलेगी। शिक्षण-वृत्ति के मध्य कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकता है। आपका नेतृत्व गुण सामने आएगा।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध उत्तम होगा। आपके बच्चे आपके सुख व लाभ के स्रोत हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ, विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ हो सकता है। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम होगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी और पिता की अचल सम्पत्ति, धन तथा यात्राओं में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को शक्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और वे प्रगति करेंगे। आपके बड़े भाई-बहनों के लिए यह दशा लाभदायक होगी। आपके व्यावसायिक साझेदारों में आपके अनेक मित्र होंगे और आपको उनसे लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर यह दशा उत्तम है।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा। आगे राहु की दशा कुछ समस्याएँ खड़ी कर सकती है। चतुर्थ तथा लग्न के स्वामी गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप धन तथा सुख आरम्भ की प्राप्ति हो सकती है। शनि की अन्तर्दशा के कारण छोटी यात्रा और कुछ मामूली परिवर्तन हो सकता है जबकि बुध के फलस्वरूप साझेदारी में लाभ और जीवन में उन्नति होगी। आगे आने वाली केतु की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मानसिक या शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ और लाभ हो सकता है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन होगा।

अंर्तदशा :– मंगल – मंगल
(14/09/2044 - 10/02/2045)

आपके लिए मंगल की महादशा 14/09/2044 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 14/09/2044 को प्रारंभ होकर 10/02/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप उत्साह से पूर्ण रहेंगे; कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला संभव है। आय अच्छी होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। मन में क्रांतिकारी विचार आ सकते हैं। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। पराविद्या और अध्यात्म में रुचि होगी। खर्चे बढ़ सकते है; इसके लिए सावधानी आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। पिता को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी। माता धनी और प्रसिद्ध बनेंगी; उन्हें लोकप्रियता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों को लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

आपकी संतान उत्साही होगी। आपको उनसे अच्छे संबंध बनाए रखने के प्रयास करने होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अनचाहा तबादला, कष्ट और खर्चा हो सकता है। परामर्शदाताओं और व्यापारियों का समय बहुत भाग्यशाली रहेगा।

उदर रोगों से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

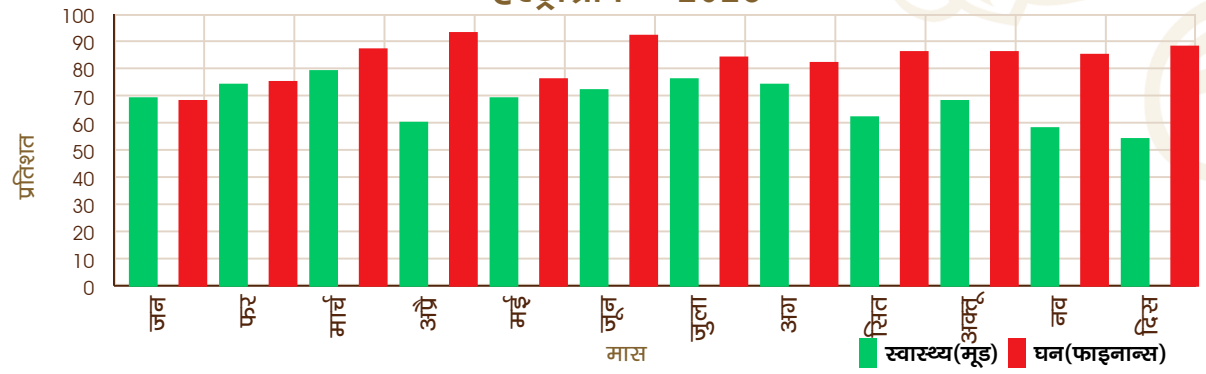

एस्ट्रोग्राफ - 2026

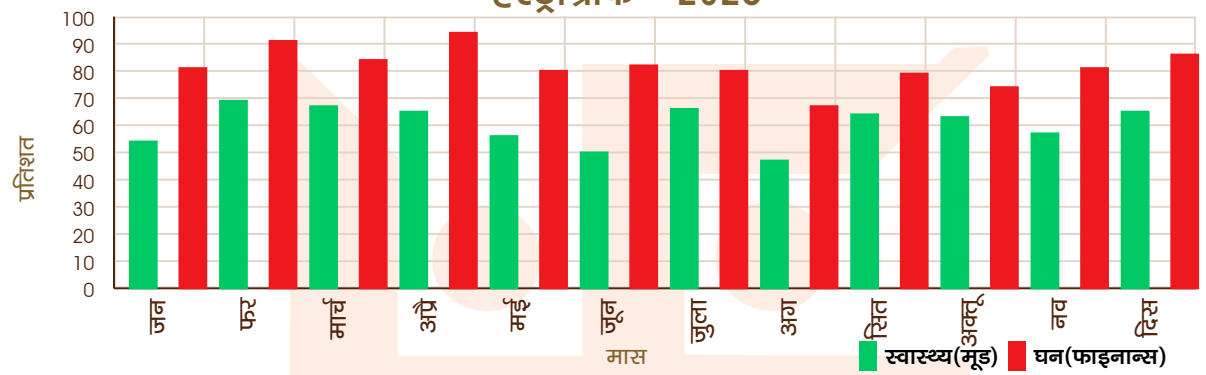

एस्ट्रोग्राफ - 2027

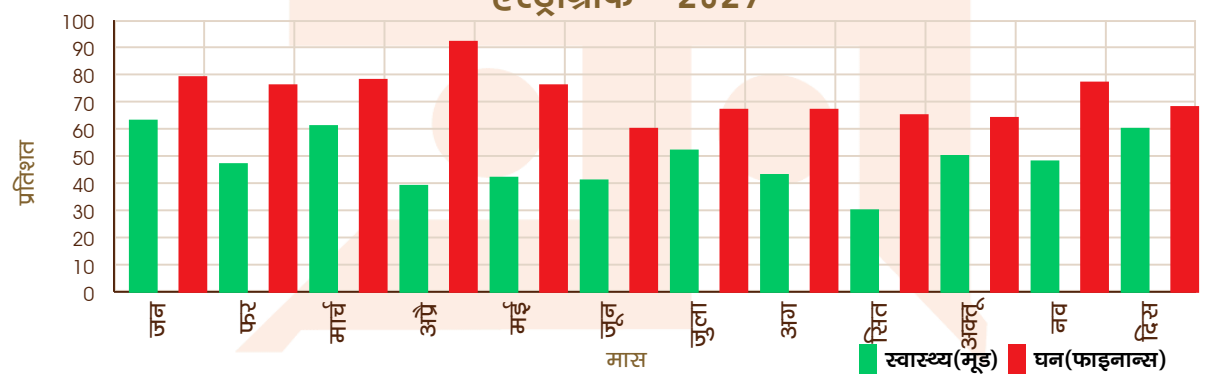

एस्ट्रोग्राफ - 2028

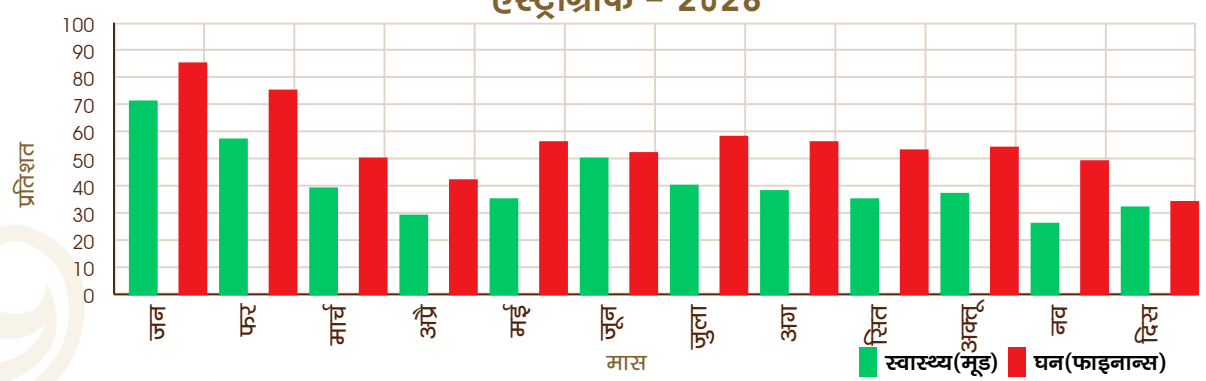

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

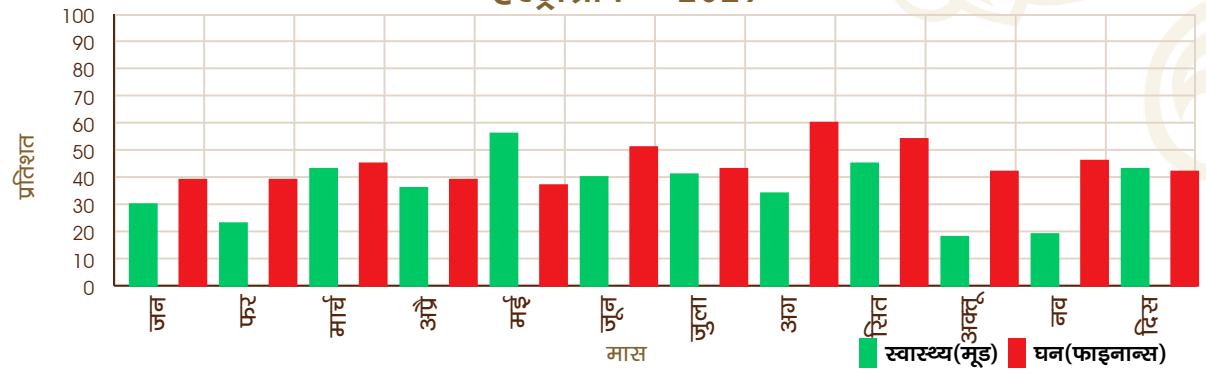

एस्ट्रोग्राफ - 2030

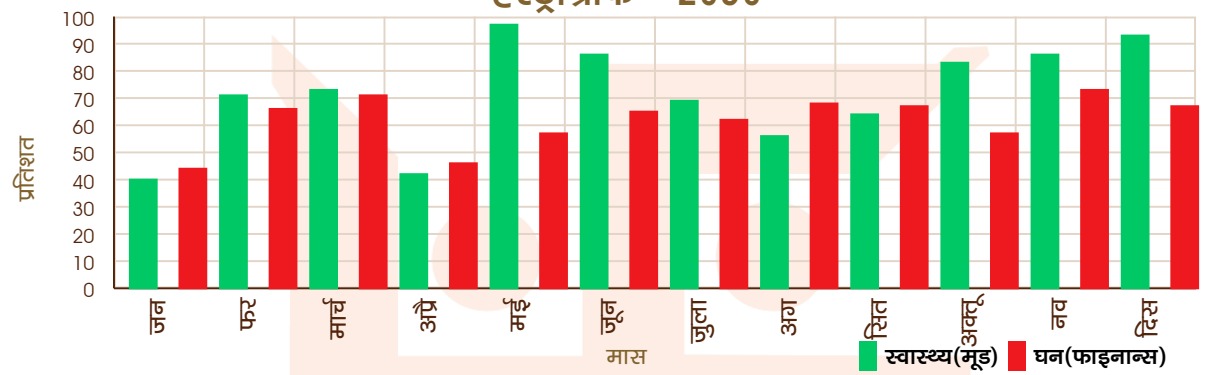

एस्ट्रोग्राफ - 2031

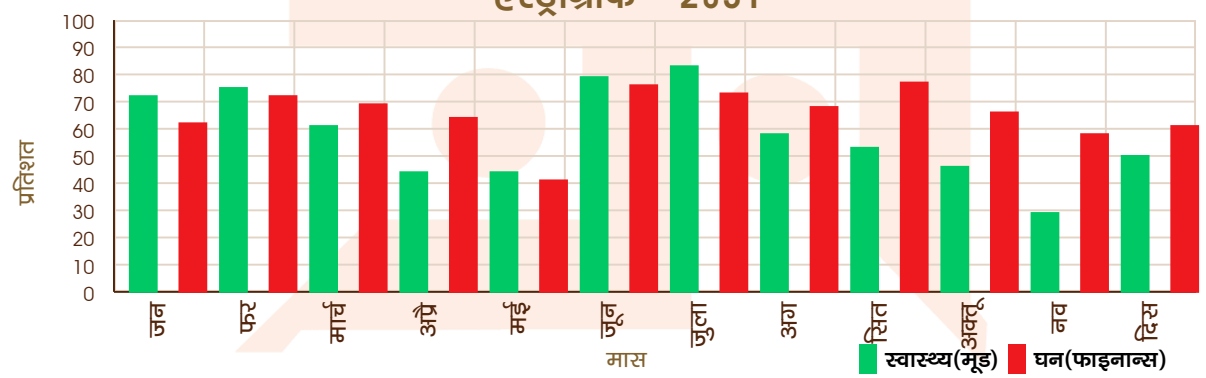

एस्ट्रोग्राफ - 2032

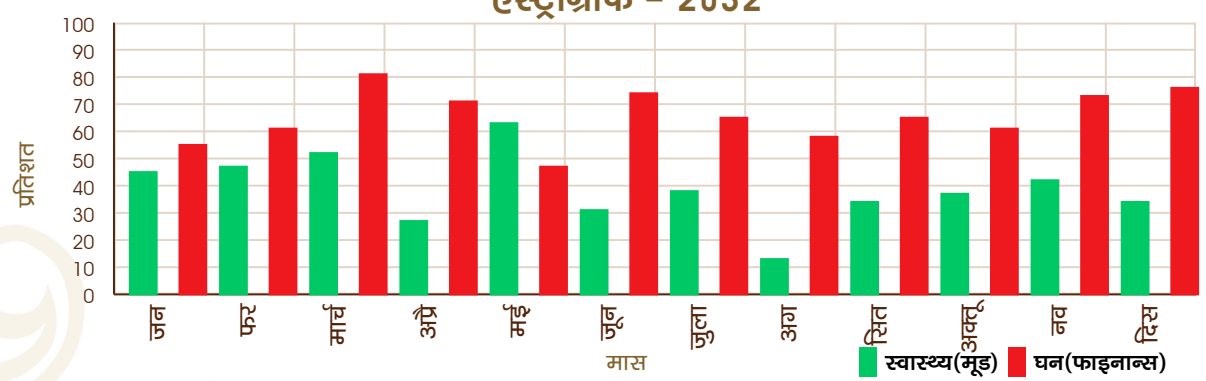

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

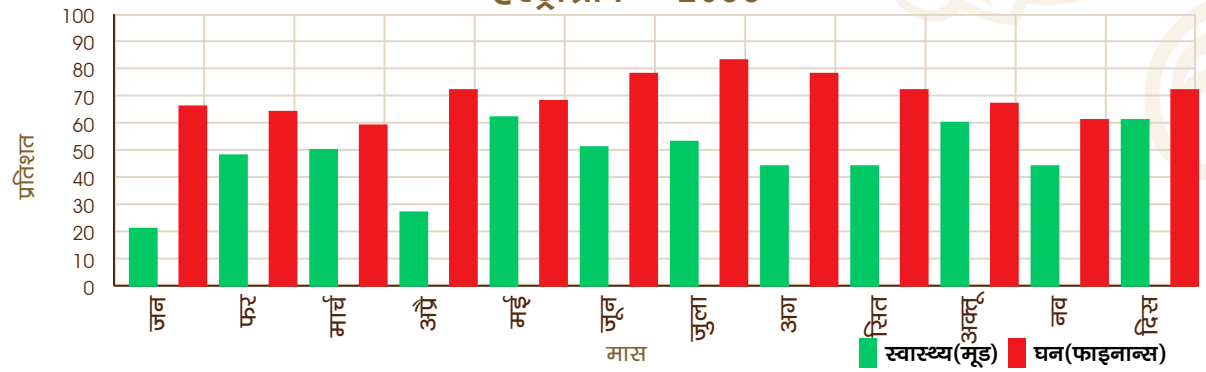

एस्ट्रोग्राफ - 2034

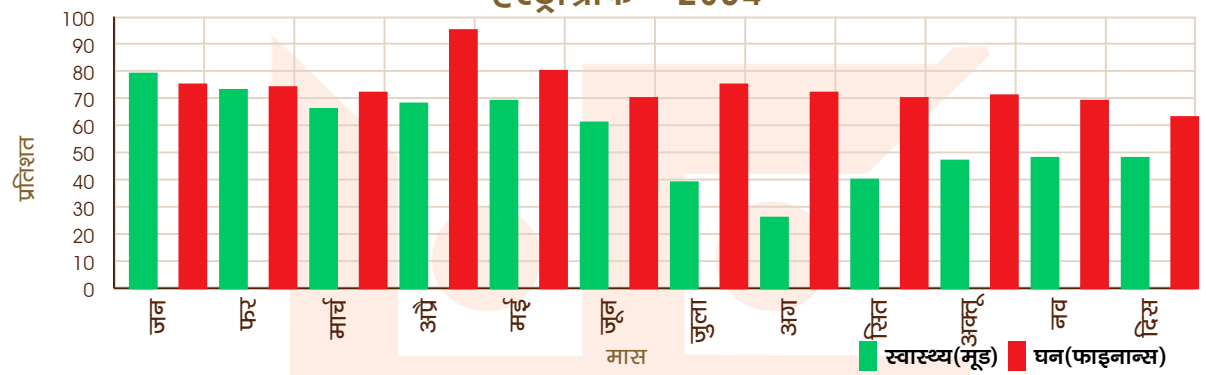

एस्ट्रोग्राफ - 2035

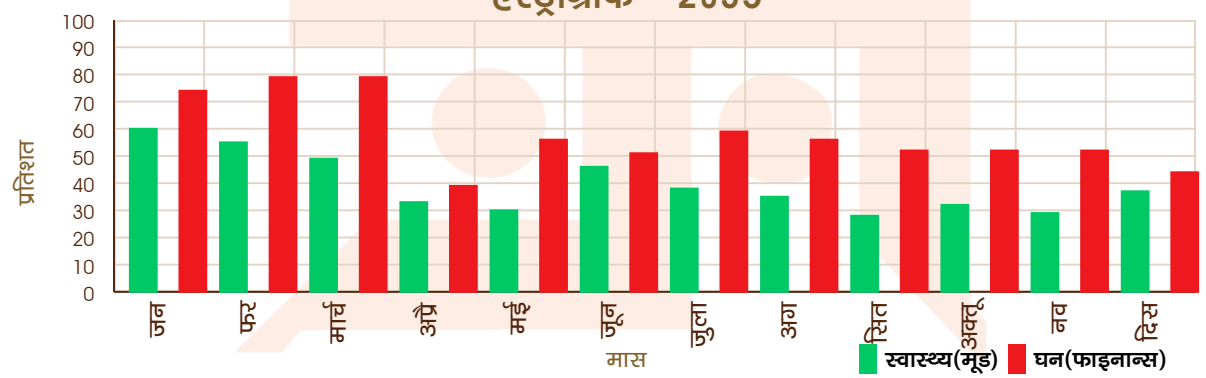

एस्ट्रोग्राफ - 2036

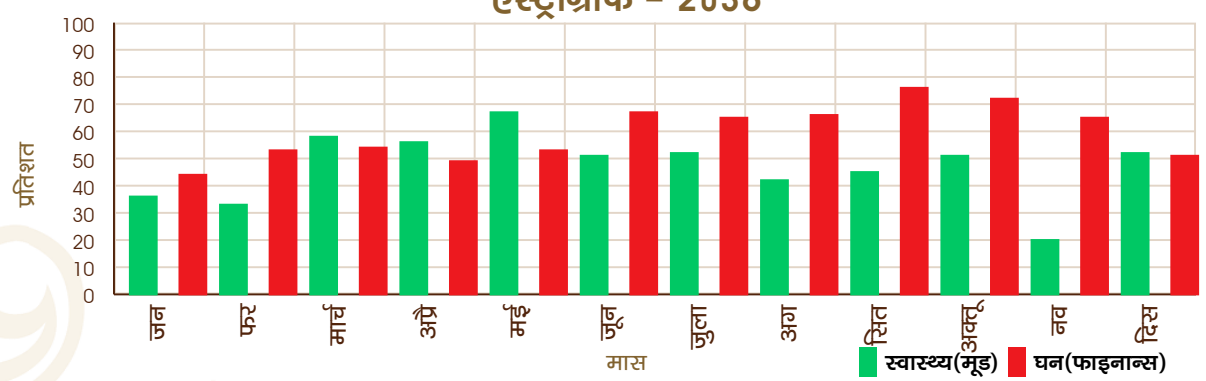

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

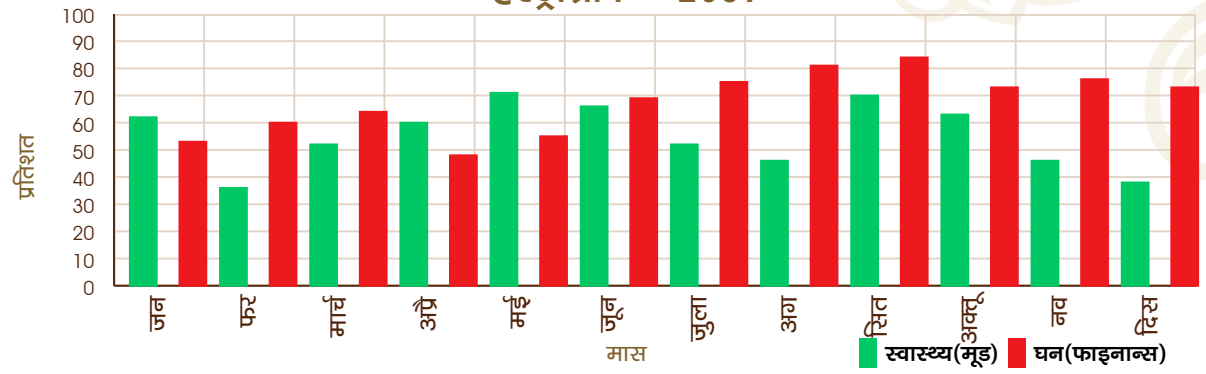

एस्ट्रोग्राफ - 2038

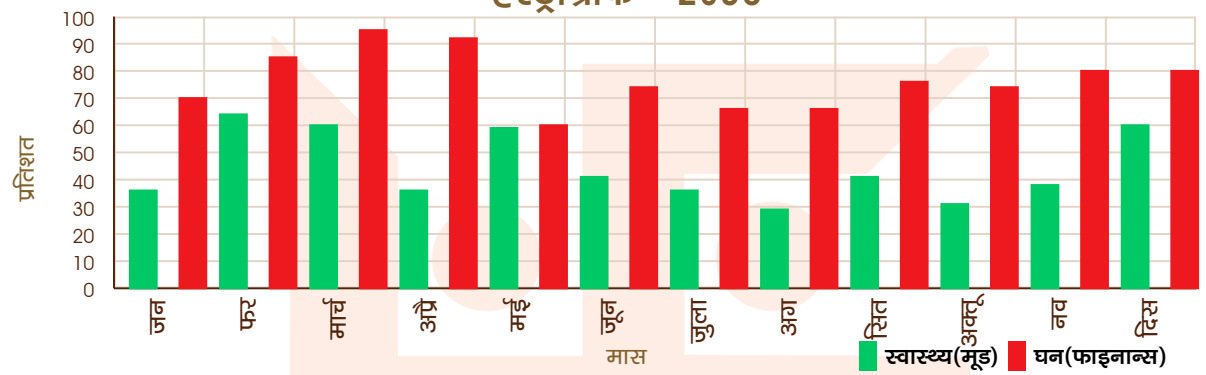

एस्ट्रोग्राफ - 2039

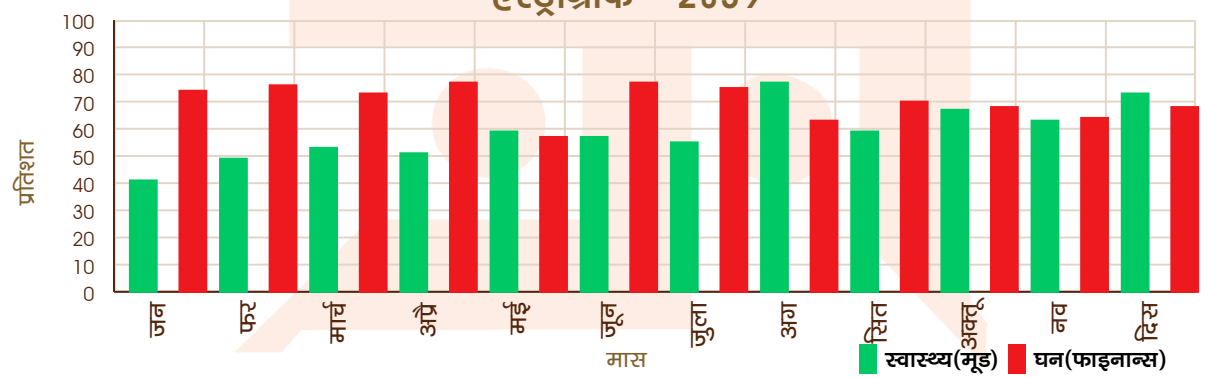

एस्ट्रोग्राफ - 2040

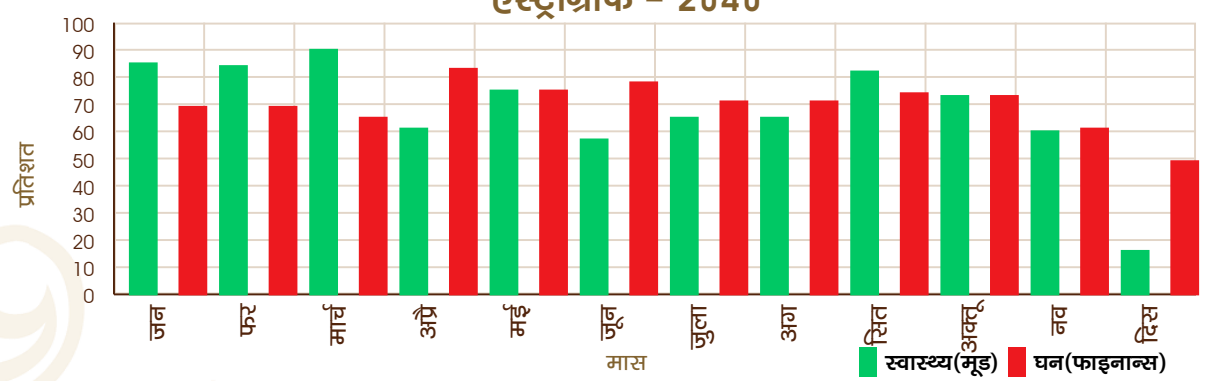

एस्ट्रोग्राफ - 2041

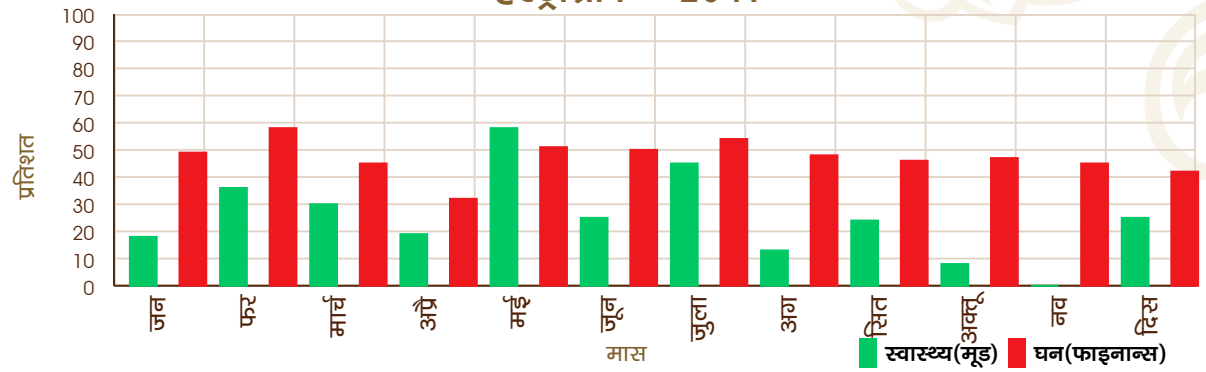

एस्ट्रोग्राफ - 2042

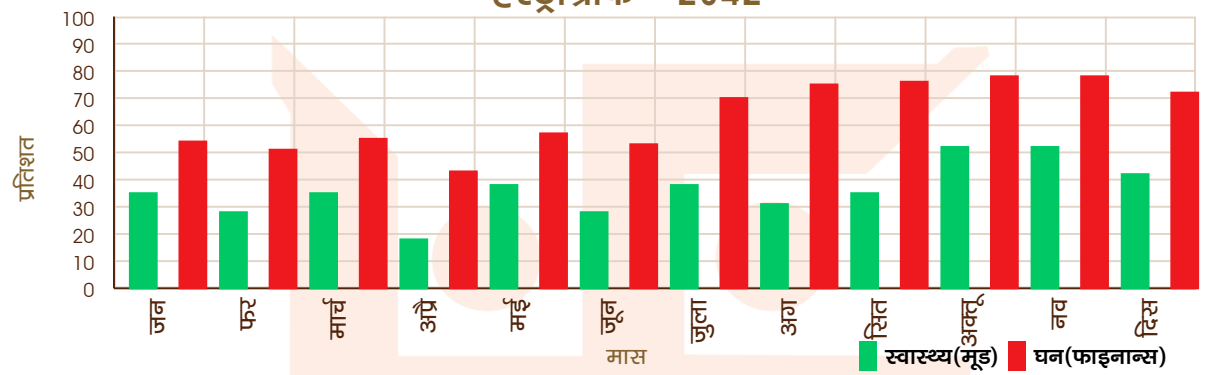

एस्ट्रोग्राफ - 2043

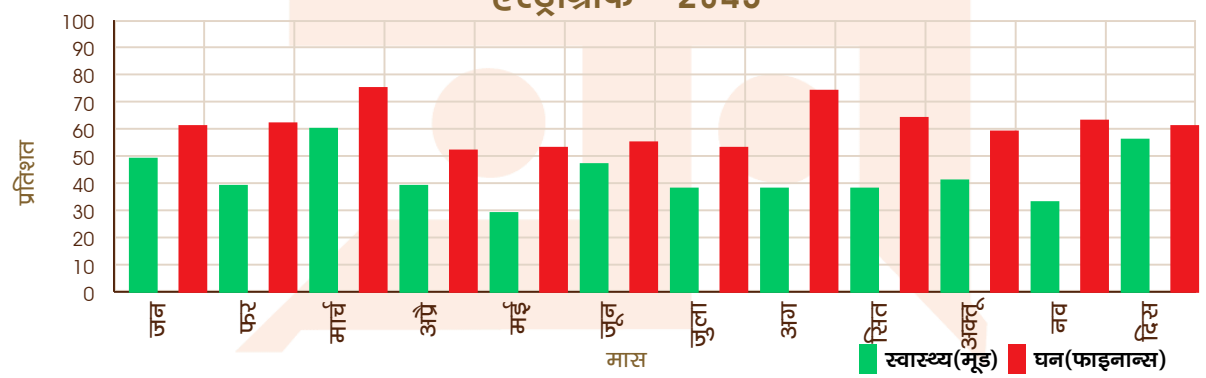

एस्ट्रोग्राफ - 2044

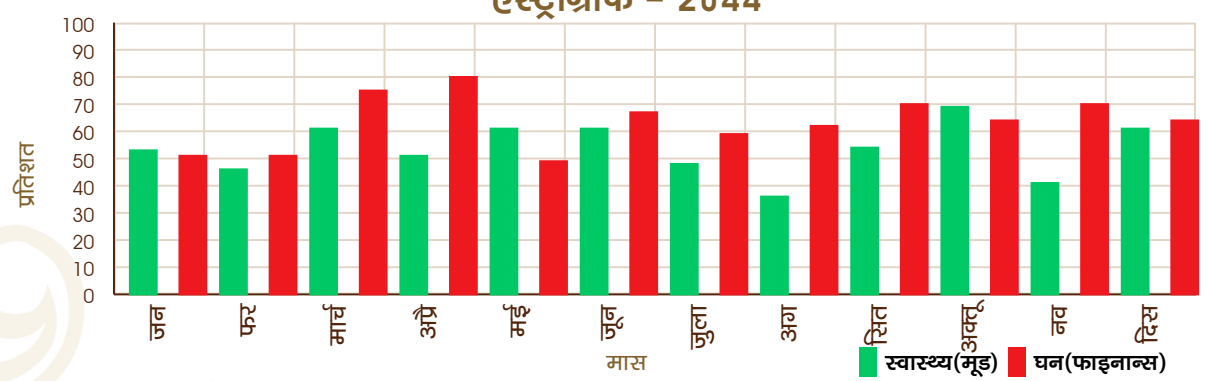

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,गुरु योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्यातारव्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।

।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

अति छोटे कद होने का योग

लग्ने शनौ सोमसुते स्वगेहे शौर्ये चतुर्थे सबुधेऽतिह्रस्वः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-21 ।।

यदि जन्मकुंडली में लग्नस्थ शनि हो, बुध स्वगृही हो अथवा चतुर्थभाव में शनि बुध से युक्त हो तो जातक अति छोटे कद का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अति छोटे कद के प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका

जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोऽथवा ।
।। फलदीपिका ।। अ.-10/श्लो.-2 ।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश संतान भाव में स्थित हो तो पत्नी या पुत्र मर जाता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी मर सकता है अथवा आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा संभाव्य है।

सर्पदंश से मृत्यु योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 312-28।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमभाव में राहु हो तथा उसपर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो सर्पदंश से मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,राहु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण सर्प दंश से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-

लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

कूर्म योग

''कलत्रपुत्रारिगृहेषु सौम्याः स्वतुङ्गमित्रांशकराशियाताः।
तृतीयलाभोदयगास्त्वसौम्या मित्रोच्चसंस्था यदि कूर्मयोगः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 22 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अपने उच्च व मित्रांश अथवा अपनी राशि में शुभ ग्रह 7/5/6 भाव में हो और अपने मित्र वा उच्च की राशि में गए हुए पाप ग्रह 3/11/1 भाव में स्थित हो तो "कूर्म" योग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्ण रूपेण "कूर्म" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप प्रसिद्ध कीर्तिवान् राजयोग से सम्पन्न भोगी, धार्मिक, सात्विक, धीर, सुखी, मन, क्रम, वचन से उपकार करने वाले प्राणी राज सम्मान से युक्त मनुष्य या राजा होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।